Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश (अनुवाद) :

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ

(سورۃ النور:۵۶)

(अनुवाद) तुम में से जो लोग ईमान लाए और नेक-आमाल बजा लाए उन से अल्लाह ने पक्का वादा किया है कि उन्हें ज़रूर ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाएगा जैसा कि उस ने इन से पहले लोगों को ख़लीफ़ा बनाया।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 9
अंक-19-20

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 600 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

29-07 ज़ुल्कादा 1445 हिज्री कमरी, 09-16 शवाल 1403 हिज्री शम्सी, 09-16 मई 2024 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

संसार मे शांति केवल निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त के साथ जुड़ कर ही क़ायम हो सकती है

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का उपदेश

"मैं आपको यह भी नसीहत करता हूँ कि हमेशा ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के बाबरकत निज़ाम के साथ जुड़े रहें और वफ़ा का संबंध रखें क्योंकि इस्लाम के जीवित होने का कार्य और संसार मे शांति केवल निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त के साथ जुड़ कर ही क़ायम हो सकती है। इसीलिए हमेशा इस बाबरकत चीज़ का सम्मान करें और इस बात को विश्वसनीय बनाएँ कि आप और आपकी भविष्य की नसल हमेशा ख़िलाफ़त की हिदायत के अधीन रहे।"

(संदेश हुज़ूर अनवर जलसा सालाना हिंडोरास 2020 ई. के अवसर पर उद्धृत अख़बार बदर 18 फ़रवरी 2021 पृष्ठ 13)

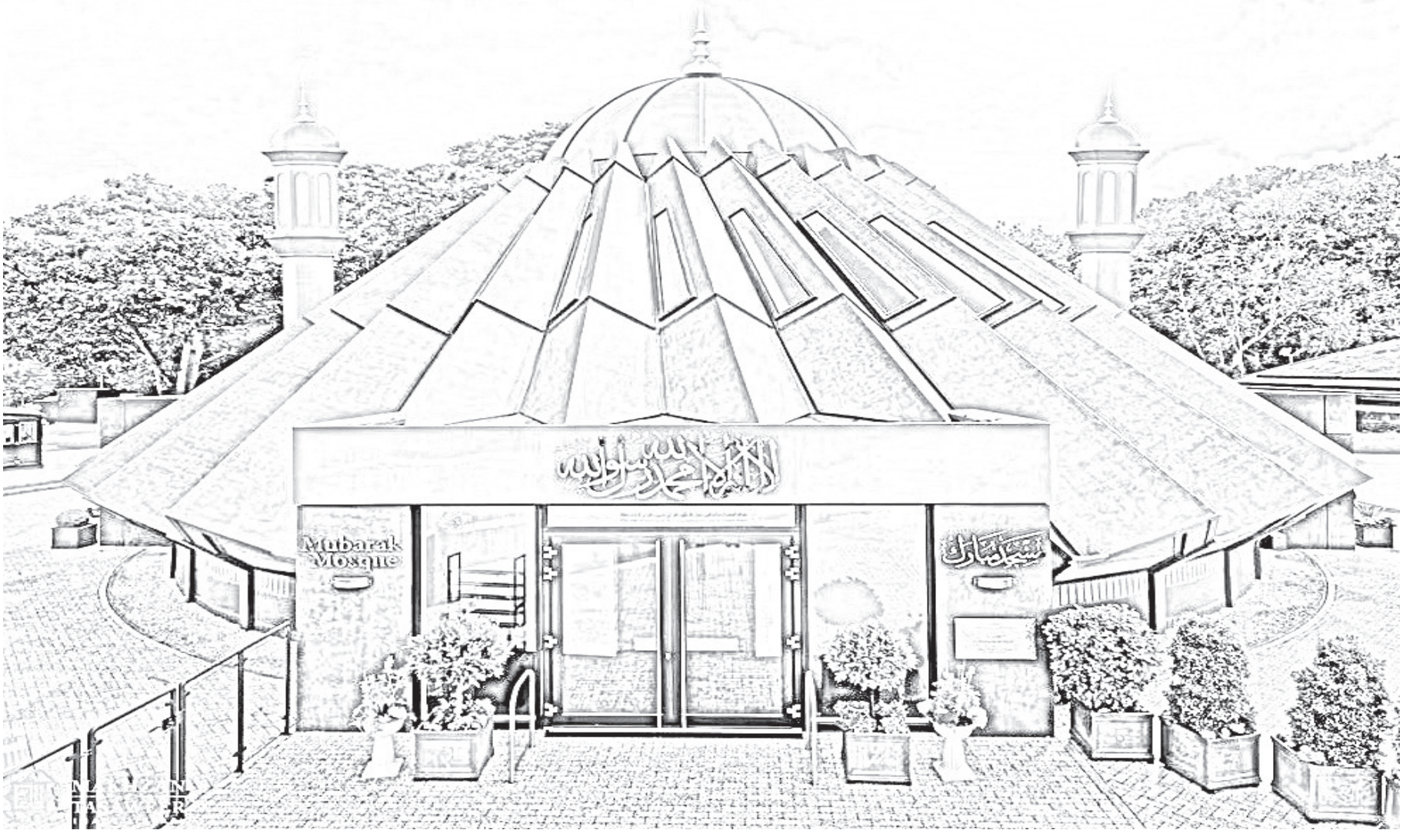

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

ख़िलाफ़त के प्रति प्रतिबद्धता और उसका सम्मान बहुत महत्वपूर्ण है
संसार इस महान वरदान से वंचित है

यह किस क़दर हमारी ख़ुशबख़्ती है कि हमें अल्लाह तआला ने मुस्लमान बनाया, अन्यथा हम जिस मुल्क में रहते हैं यह शिर्क और बुतपरस्ती का अड्डा है, अगर मुस्लमान नहीं होते तो न जाने किस-किस देवी देवता के आगे सिर झुकाएं होते। और फिर उसका एहसान पर एहसान है कि मुस्लमान बनाने के बाद हज़रत मसीह मौऊद-ओ-महदी मौऊद अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई और हमें अहमदी मुस्लमान बनाया, अन्यथा ख़ुदा जाने 72 फ़िर्क़ों में से किस फ़िर्क़ा में फंसे होते और किन-किन बिद्दतों का शिकार होते और क्या-क्या मुशरिकाना हरकतें हम से सरज़द होतीं। और एक फ़िर्क़ा तो ऐसा भी है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने जिन अस्हाब रिज़वानुल्लाह अलैहिम के विषय में उम्मत को हिदायत फ़रमाई थी कि इन में जिसकी भी तुम पैरवी करोगे हिदायत पा जाओगे, उन अस्हाब से द्वेष रखना और उनको गालियां देना ईमान का हिस्सा समझता है। हमें आश्चर्य होता है कि हे अल्लाह! क्या कोई मुस्लमान ऐसा भी अक़ीदा रख सकता है। और फिर मसीह मौऊद को मानने के बाद यह भी अल्लाह का बहुत बड़ा एहसान है कि उसने हमें ख़िलाफ़त से जोड़े रखा, अन्यथा वह भी एक फ़िर्क़ा है, केवल नाम के ही सही, जिसने ख़िलाफ़त से अपना दामन छुड़ा कर और एक मुबारक बस्ती को छोड़ कर एक बड़े और प्रसिद्ध शहर को अपना मर्कज़ बनाया लेकिन न तो उनका कोई नाम रहा और न कोई परसिद्धि रही जो पहले भी कभी नहीं थी। और बहुत से वे भी हैं जो बाग़ी और विरोधी हो कर ख़िलाफ़त से विमुख हो जाते हैं।

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ۔

ख़िलाफ़त इत्तिहाद-ओ-इत्तिफ़ाक़, तक़्वा-ओ-तहारत, इस्लाम की तरक़्क़ी और इसकी मज़बूती, और हर प्रकार की इन्फ़िरादी और इजतेमाई आध्यात्मिक ज़िंदगी की ज़मानत है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़लीफ़ा मुंतख़ब होने के बाद जमाअत के लोगों को जो क़ीमती और ज़रीं उपदेश फ़रमाएं उनमें से एक उपदेश यह था, आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया :

"याद रखो सारी खूबियां एकता में हैं, जिसका कोई रईस (सरदार) नहीं वह मर चुका है।"

(तारीख़-ए-अहमदियत भाग 3 पृष्ठ 190)

अतः एकता में ज़िंदगी है और एकता ख़िलाफ़त से है। अगर सामने उदाहरण हो तो बात आसानी से समझ में आ जाती है। आज मुस्लमान मुंतशिर-ओ-मुतफ़र्रिक़ हैं कोई उनका ईमाम नहीं, कोई उनका हाल पूछने वाला नहीं, कोई उनका दर्द रखने वाला नहीं, कोई उनके लिए दुआ करने वाला नहीं, कोई उनको रास्ता दिखाने वाला नहीं। फिलिस्तीन की उदाहरण हमारे है। 57 मुस्लमान देश मिलकर भी चंद हज़ार फिलिस्तीनी औरतों और बच्चों को खाना प्रदान नहीं कर सके, क्योंकि सब आपस में मतभेदों और झगड़ों का शिकार हैं। परंतु अहमदी अल्लाह के फ़ज़ल से एकत्र और संगठित हैं, उनका एक आध्यात्मिक इमाम है जो उनके लिए दुआएं करने वाला और उन्हें रास्ता दिखाने वाला, क़दम-क़दम पर उन्हें रहनुमाई करने वाला है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने एक अवसर पर फ़रमाया कि हर रात मैं चश्म-ए-तसव्वुर में हर मुल्क में पहुंचता हूँ और जमाअत के लोगों के लिए दुआ करता हूँ। सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी एक अवसर पर फ़रमाया था कि एक दुनियावी लीडर और ख़लीफ़ा में यही फ़र्क़ है कि ख़लीफ़ा जमाअत के लोगों के लिए दुआएं करता है और उनका दर्द अपने सीने में रखता है, जबकि दुनियावी लीडर को ऐसी तौफ़ीक़ नहीं मिलती, बल्कि कभी कभी एक दुनिया लीडर तो अपने इक़तेदार की ख़ातिर अवाम को ख़तरनाक आज़माईशों और इबतेलाओं में डालते हैं।

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़लीफ़ा मुंतख़ब होने के बाद जो पहली तक़रीर फ़रमाई, इस में आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह फ़रमाया कि

"अब जो तुमने बैअत की है और मेरे साथ एक संबंध हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद क़ायम किया है, इस संबंध में वफ़ादारी की उदाहरण दिखाओ और मुझे अपनी दुआओं में याद रखो, मैं ज़रूर तुम्हें याद रखूँगा। हाँ याद रखता भी रहा हूँ। कोई दुआ मैं ने आज तक ऐसी नहीं की जिस में मैं ने सिलसिला के लोगों के लिए दुआ नहीं की हो। परंतु अब आगे से भी ज़्यादा याद रखूँगा। मुझे कभी पहले भी दुआ के लिए कोई ऐसा जोश नहीं आया, जिस में अहमदी क़ौम के लिए दुआ न की हो। फिर सुनो कि कोई काम ऐसा न करो जो अल्लाह तआला का वादा तोड़ने वाले करते हैं। हमारी दुआएं यही हैं कि मुस्लमान जिएँ और मुस्लमान मरें आमीन।"

(सवानेह फ़ज़ल-ए-उम्र भाग 1 पृष्ठ 342)

ऊपर वर्णित इक़तेबास से समझा जा सकता है कि ख़िलाफ़त से पूर्व जब एक शख़्स जमाअत के लोगों के लिए मुस्तक़िल दुआएं करता है, तो ख़लीफ़ा बनने के बाद उसकी दुआओं का क्या हाल होगा? अतः ख़लीफ़ा वक़्त नियमित और मुस्तक़िल अपनी जमात के लिए दुआएं करता है। यह जमात अहमदिया पर बहुत बड़ा इनाम है, शेष दुनिया उस इनाम और इस रहमत से वंचित है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि जब अल्लाह तआला किसी को ख़लीफ़ा बनाता है तो उसकी दुआओं की

शेष पृष्ठ 22 पर

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

क्रम	विषय सूची	पृष्ठ
1	संसार मे शांति केवल निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त के साथ जुड़ कर ही क़ायम हो सकती है	1
2	ख़िलाफ़त के प्रति प्रतिबद्धता और उसका सम्मान बहुत महत्वपूर्ण है संसार इस महान वरदान से वंचित है	2
3	ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 5 अप्रैल 2024 ई	3
4	ख़िलाफ़त का निज़ाम मज़हब के दायमी निज़ाम का भाग है और ख़ुदा तआला की अज़ली तक़दीर का एक ज़बरदस्त चमत्कार	10
5	ख़िलाफ़त के साथ जुड़े रहना क्यों ज़रूरी है	13
6	ख़ुत्बात और खिताबात हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से लाभ उठाने का महत्त्व और बरकात	14
7	विशव्यापी विनाश के विषय में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की चेतावनी, दर्द से परिपूर्ण निवेदन और जमाअत अहमदिया की ज़िम्मेदारियाँ	18

ख़ुत्बः जुमअः

दुआ ऐसी मुसीबत से बचाने के लिए भी लाभ देती है जो नाज़िल हो चुकी हो और ऐसी मुसीबत से भी बचाती है जो अभी नाज़िल नहीं हुई हो

फ़रमाया अतः हे अल्लाह के बंदो दुआ को अपने ऊपर लाज़िम कर लो (अल्-हदीस)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि ज़िक्र-ए-इलाही करने वाले और ज़िक्र-ए-इलाही न करने वाले की मिसाल ज़िंदा और मुर्दा की तरह है

इस दुनिया को हासिल करना भी अल्लाह तआला के फ़ज़लों को हासिल करने का माध्यम होना चाहिए और दीन को दुनिया पर मुक़द्दम रखने की कोशिश करनी चाहिए

अगर यह होगा तो तब ही हम दुआ से हक़ीक़ी लाभ पाने वाले होंगे

आजकल तो दुनिया के जो हालात हैं, जंगों में भी ऐसे हथियार प्रयोग होते हैं जो आग हैं।

अल्लाह तआला हमें इस आग से भी बचाए और दुनिया में भी और आख़िरत में भी हसनात आता फ़रमाए

हमें चाहिए कि हम इस सोच के साथ दुआ किया करें कि जहां हम अल्लाह तआला की तस्बीह-ओ-तहमीद करें वहां अपनी इस्लाह और हिदायत और रूहानियत में बढ़ने के लिए भी दुआ करें। केवल दुनिया के हुसूल के लिए हमारी दुआएं न हों बल्कि अपनी बाहरी और आंतरिक हालतों की बेहतरी के लिए जब हम दुआ करेंगे और ख़ास तवज्जा से करेंगे तो फिर हम हर किस्म के फ़ज़लों की बारिश होती देखेंगे

यह दुआएं ही हैं जो हमारी ज़ाती ज़िंदगी में भी तबदीली लाएँगी और जमाती ज़िंदगी में भी फ़ायदा देंगी

यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआएं हैं उनका तर्जुमा कम से कम याद करके या उसका मफ़हूम समझ कर हमें भी इस तरह करनी चाहिए

आलमी जंग शुरू हो चुकी है लेकिन दुनिया के हुकमरानों को इस की कोई फ़िक्र नहीं

उनके ख़्याल में वे सुरक्षित रहेंगे और लोग मरेंगे लेकिन यह भी उनकी गलती है

कुछ क़ुरआन की दुआओं, मसनून दुआओं और हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं का प्रभावी वर्णन तर्कसंगत व्याख्या

रमज़ान की बरकात के हमेशा क़ायम रहने, असीरान-ए-राह्-ए-मौला की रिहाई, जंगों की आग से

और उनके बाद के बुरे असरात से सुरक्षित रहने और इन्सानियत को बचाने के लिए दुआ की तहरीक

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 5 अप्रैल 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ الْاَرْضِ ؕ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۶۳﴾

(अल् नमल :63)

या फिर वह् कौन है जो बेक़रार की दुआ क़बूल करता है जब वह उसे पुकारे और तकलीफ़ दूर कर देता है और तुम्हें ज़मीन का वारिस बनाता है। क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है। बहुत कम है जो तुम नसीहत पकड़ते हो।

अल्लाह तआला इस आयत में फ़रमाता है कि मैं मुज़्तर और बेक़रार की

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔

أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

दुआएं क़बूल करता हूँ। पिछले जुमा भी मैं ने दुआ का मज़मून ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हवालों की रोशनी में वर्णन किया था कि दुआएं किस तरह होनी चाहिऐं, उनकी हिक्मत, उनकी फ़िलोसफ़ी क्या है। यही दुआ का मज़मून आज भी जारी है। जैसा कि मैं ने कहा अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैं मुज़्तर की दुआएं सुनता हूँ तो मुज़्तर से मुराद केवल बेक़रार ही नहीं है बल्कि ऐ स ाशख़्स है जिसके तमाम रास्ते कट गए हों। अतः जब हम दुआ के लिए अल्लाह तआला के आगे झुकें तो ऐसी हालत बना कर झुकें और अल्लाह तआला के हुज़ूर यह दुआ करें कि सिवाए तेरे हमारा कोई नहीं और हम तुझी पर इन्हिसार करते हैं भरोसा करते हैं और तेरे पास ही हैं।

जमाती लिहाज़ से तो विशेषता यह बात याद रखनी चाहिए कि अल्लाह तआला के इलावा और कोई नहीं है जो हमें इन हालात से निकाले जो पाकिस्तान में हैं या बाअज़ दूसरे मुल्कों में हैं बल्कि ज़ाती तौर पर भी अगर इन्सान समझे तो अल्लाह तआला ही है जो सब काम करता है। वही है जो हमारी ज़रूरतें पूरी करता है। वही है जिसके आगे झुका जा सकता है। वही है जो अस्बाब मुहय्या करता है। जो नहीं भी इस के सामने झुकते उन पर भी इस की रहमानियत का जलवा है कि जो फ़ैज़ उठा रहे हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मुज़्तर के हवाले से जो ख़ास नुक्ता वर्णन फ़रमाया है और इस का मैं ने पिछले ख़ुतबा में भी वर्णन किया था कि अल्लाह तआला ने अपनी शनाख़्त की यह ख़ास निशानी वर्णन फ़रमाई है कि मैं मुज़्तर की दुआ सुनता हूँ।

अतः अपनी दुआओं में हालत-ए-इज़्तेरार पैदा करने की ज़रूरत है। अतः हमें दुआओं की तरफ़ ख़ास तवज्जा देनी चाहिए। यह दुआएं ही हैं जो हमें इन हालात से निकालेंगी जिनमें हम आजकल हैं बल्कि उम्मते मुस्लिमा के इबतेला से निकालने के लिए भी दुआएं ही काम आएगी अगर उसको समझ कर ये लोग दुआ करें और साथ ही अल्लाह तआला के भेजे हुए की मुख़ालिफ़त को छोड़ दें।

बहरहाल जहां तक अहमदियों का सवाल है हर अहमदी को यह बात अपने ज़हन में अच्छी तरह बिठा लेनी चाहिए कि अगर यह अपनी दुआओं की कबूलियत चाहते हैं तो इज़्तेरार की हालत पैदा करें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस मज़मून को एक जगह बयान फ़रमाया है। फ़रमाया कि "याद रखो कि ख़ुदा तआला बड़ा बेनयाज़ है। जब तक कसरत से और बार-बार इज़्तेराब से दुआ नहीं की जाती वह पर्वा नहीं करता।" फ़रमाया "..क़बूलियत के वास्ते इज़्तेराब शर्त है।"

(मल् फ़ूज़ात भाग 10 पृष्ठ 137 ऐडीशन 1984 ई.)

और इज़्तेराब की हालत वह है जो सौ फ़ीसद यह यक़ीन हो कि अब दुनिया के तमाम रास्ते बंद हो गए हैं और अब एक ही रास्ता है जो ख़ुदा तआला का रास्ता है, जो हज़रत-ए-त्ववाब का रास्ता है जो हमें मुश्किलात से निकाल सकता है। अतः अपनी दुआओं में यह दर्द की हालत हमें पैदा करनी चाहिए अन्यथा यह दुआ और ज़िक्र-ए-इलाही अगर केवल ज़बानी जमा ख़र्च हो तो इसका कोई फ़ायदा नहीं। इस बारे में एक अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ कि अल्लाह को ज़्यादा याद करो और ज़िक्र की मिसाल ऐसी समझो कि जैसे किसी आदमी का उसके दुश्मन निहायत तेज़ी के साथ पीछा कर रहे हों यहां तक कि इस आदमी ने भाग कर एक मज़बूत क़िले में पनाह ली और दुश्मनों के हाथ लगने से बच गया। इसी तरह इन्सान शैतान से निजात पा सकता है अन्यथा कोई नहीं।

شعب الایمان جزء دوم صفحہ 73 حدیث 534 مطبوعہ مکتبۃ الرشد (ناشرون بیروت 2003ء

अतः दुआओं की तरफ़ बहुत ज़्यादा ध्यान देने की ज़रूरत है।

क़ुरआन की दुआएं हैं, मसनून दुआएं हैं, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सिखाई हुई दुआएं हैं और अपनी ज़बान में दुआएं हैं। अगर हमने इन हालात से बाहर निकलना है जो हमारे लिए पैदा किए गए हैं या पैदा किए जा रहे हैं तो उनकी तरफ़ हमें बहुत तवज्जा करनी चाहिए। पाकिस्तान में या कुछ दूसरे मुल्कों में आज़ादी से हम नमाज़ नहीं अदा कर सकते। आज़ादी से हम अपना इश्क़-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ज़ाहिर नहीं कर सकते। आज़ादी से हम ख़ुदा तआला की आख़िरी शरई किताब क़ुरआन-ए-करीम नहीं पढ़ सकते। आज़ादी से हम किसी भी किस्म के इस्लामी शारे का इज़्हार नहीं कर सकते। शैतान के चेले हर वक़्त इस ताक में हैं कि कहाँ और कब अवसर मिले और हम अहमदियों के ख़िलाफ़ कार्यवाहियां करने में एक दूसरे से आगे बढ़कर अपने ज़ोअम मैं सवाब कमाने वाले बनें। पिछले दिनों एक अहमदी को शहीद किया और क़ातिल पकड़े गए जब उनसे पूछा तो उन्होंने कहा हमने फ़ुलां मदरसे के मौलवी-साहब से पूछा था कि जन्नत में जाने का क़रीब तरीन रास्ता क्या है तो उन्होंने कहा क़रीब तरीन तरीक़ा यही है कि तुम किसी काफ़िर को मार दो और अहमदी क्योंकि काफ़िर हैं इसलिए उनको मारना जायज़ है, क़तल करना जायज़ है। लेकिन हक़ीक़त में यह अल्लाह तआला की पकड़ में आने के सामान पैदा कर रहे हैं।

बहरहाल हमें अपनी हालतों को मुज़्तर की हालत बनाने कीज़रूरत है और मुज़्तर की एक पहचान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह बताई है बल्कि कलाम-ए-इलाही की रोशनी में यह बताई है कि "लफ़्ज़ मुज़तर से वाह ज़रर याफताह मुराद हैं जो केवल इबतेला के तौर पर ज़रर याफताह हों न सज़ा के तौर पर"।

(दाफ़ेउल् बला, रुहानी ख़ज़ायन भाग 18 पृष्ठ 231)

और आज अहमदी ही हैं जो इन इबतेलाओं से गुज़र रहे हैं, जिन पर यह पाबंदियां हैं कि इश्क़-ए-ख़ुदा और इश्क़-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का भी इज़हार नहीं कर सकते। कोई ज़ाती ख़ाहिशात तो नहीं, कोई व्यक्तिगत जुर्म तो नहीं जिनकी सज़ाएं मिल रही हैं। यह तो इबतेलाओं में से हमें गुज़ारा जा रहा है । अतः इन दिनों में और हमेशा अपनी ज़बानों को दुआओं और ज़िक्र-ए-इलाही से तर रखना चाहिए। अपने सज्दों में, अपनी दुआओं में इज़्तेरार की हालत पैदा करनी चाहिए। इस वक़्त में बाअज़ क़ुरआन की और मसनून दुआओं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं को भी दुहराऊंगा इन दुआओं पर केवल यहां आमीन कह देना काफ़ी नहीं है बल्कि उन पर हमें मुस्तक़िल तवज्जा देनी चाहिए और ग़ौर करके इज़्तेरार के साथ पढ़ना भी चाहिए। इस के इलावा अपनी ज़बान में भी दुआएं करते रहना चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि अपनी ज़बान में भी दुआएं करो ताकि इज़्तेरार की हालत ज़्यादा पैदा हो। दिल उसे महसूस करे।

(उद्धृत मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 146 ऐडीशन 1984 ई.)

ज़िक्र इलाही करने वालों के संबंध में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि ज़िक्र-ए-इलाही करने वाले और ज़िक्र इलाही न करने वाले की मिसाल ज़िंदा और मुर्दा की है।

(सही अल् बुख़ारी किताब अल्दावात बाब फ़ज़ल.. हदीस 6407)

अतः हमें इन ज़िंदों में शुमार होने की कोशिश करनी चाहिए जो ज़िक्र-ए-इलाही से अपनी ज़बानें तर रखने वाले हों। फिर एक अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

दुआ ऐसी मुसीबत से निजात के लिए भी लाभ देती है जो नाज़िल हो चुकी हो और ऐसी मुसीबत से भी बचाती है जो अभी नाज़िल नहीं हुई हो। फ़रमाया अतः हे अल्लाह के बंदो दुआ को अपने ऊपर लाज़िम कर लो।

(सुंन अल् तिरमेज़ी अबवाब अल् दावात बाब .. हदीस 3548)

अतः दुआ की अहमियत को हमें हमेशा सामने रखना चाहिए। बाअज़ दुआओं का ज़िक्र मैं करता हूँ जैसा कि मैं ने कहा सबसे पहले तो सूरः फ़ातिहा है। केवल नमाज़ में ही नहीं वैसे भी उसे दोहराते रहना चाहिए। जुबली की दुआओं में हमने यह मुक़र्रर की थी। सूरः फ़ातिहा भी लोग साथ दोहराते थे। दूसरे आदत पड़ जानी चाहिए कि इन्सान मुस्तक़िल दोहराता रहे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर फ़रमाया कि सूरः फ़ातिहा की एक ख़ुसूसीयत यह है "इस को तवज्जा और इख़लास से पढ़ना दिल को साफ़ करता है और ज़ुलमानी पर्दों को उठाता है।' जो अंधेरे दिल पर छाए हुए हैं उनको दूर करता है"और सीने को साफ़ करता है।" इंशिराह बख़्शता है। तसल्ली दिलाता है "और तालिब-ए-हक़ को हज़रत-ए-अहदीयत की तरफ़ खींच कर ऐसे अनवार और आसार का मौरिद करता है कि जो हज़रत अहदीयत प्यारों में होनी चाहिए" अल्लाह तआला के क़रीब करने की तरफ़ ले जाता है। अगर इन्सान ग़ौर से पढ़े तो जो क़ुरब अल्लाह तआला के मुक़र्रबीन का होता है वैसा क़ुरब मिल सकता है, यह नहीं कि हमें नहीं मिल सकता "और जिनको इन्सान किसी दूसरे हीला या तदबीर से हरगिज़ हासिल नहीं कर सकता।"

(बराहीन-ए-अहमदिया हिस्सा चहारुम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 402)

अतः सूरःफ़ातिहा को बड़े ग़ौर से और समझ कर पढ़ने और विर्द करने से इन्सान अल्लाह तआला के क़रीब होता है बल्कि अगर ग़ौर किया जाए तो इस में बयान दुआएं ही इन्सान में इज़्तेरार की हालत पैदा कर देती हैं।

फिर क़ुरआन-ए-करीम की दुआ है।

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

(अलबकर 202)

ए हमारे रब हमें दुनिया में भी हसना अता कर और आख़िरत में भी हसना अता कर और हमें आग के अज़ाब बचा।अलिफ

इस के बारे में एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "मोमिन के ताल्लुक़ात दुनिया के साथ जिस क़दर वसीअ हूँ वो उस के मुरातिब आलीया का मूजिब होते हैं। क्योंकि उस का नसब उल-ऐन देन होता है' मोमिन का नसब उल-ऐन देन होता है इसलिए अल्लाह तआला की नज़र में दुनिया के ताल्लुक़ात भी इस को मर्तबे अता करते हैं क्योंकि देन मुक़द्दम होता है "और दुनिया, उस का माल-ओ-जाह देन का ख़ादिम होता है। अतः असल बात ये है कि दुनिया मक़्सूदबिज़्ज़ात ना हो। बल्कि हुसूल दुनिया में असल ग़रज़ दीन हो।"

फ़रमाया "दुनिया मक़्सूदबिज़्ज़ात न हो बल्कि हुसूल-ए-दुनिया में असल ग़रज़ दीन हो। और ऐसे तौर पर दुनिया को हासिल किया जाए कि वह दीन की ख़ादिम हो।" फ़रमाया "..अल्लाह तआला ने जो यह दुआ तालीम फ़रमाई है कि

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً

(अल् बकरः : 202)

इस में भी दुनिया को मुक़द्दम किया है। "पहले दुनिया रखी है "लेकिन किस दुनिया को? जो आख़िरत में हसनात का मूजिब हो जाए। "वह दुनिया मुक़द्दम है जो आख़िरत में हसनात का मूजिब हो जाए। "इस दुआ की तालीम से साफ़ समझ में आ जाता है कि मोमिन को दुनिया के हुसूल में हसनात तुल आखरह का ख़्याल रखना चाहिए और साथ ही हसनतुद दुनिया के लफ़्ज़ में इन तमाम बेहतरीन ज़राए हुसूल दुनिया का वर्णन आगया है जो एक मोमिन मुस्लमान को हुसूल दुनिया के लिए इख़्तेयार करनी चाहिए।" दुनिया के लिए हसनात माँगेंगे तो फिर आदमी दुनिया कमाने के लिए ग़लत काम नहीं कर सकता। दीन मुक़द्दम होगा, अल्लाह तआला की रज़ा मुक़द्दम होगी तो फिर उस के मुताबिक़ इन्सान काम करेगा। फ़रमाया "दुनिया को हर ऐसे तरीक़ से हासिल करो जिसके इख़्तेयार करने से भलाई और ख़ूबी ही हो न वह तरीक़ जो किसी दूसरे बनीनौ इन्सान की तकलीफ़ रसाई का मूजिब हो। न हम-जिंसों में किसी आर और शर्म का बायस। ऐसी दुनिया बे-शक हसनतुल आख़िरः का मूजिब होगी।" (मल् फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 91-92 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः इस दुनिया को हासिल करना भी अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को हासिल करने का माध्यम होना चाहिए और दीन को दुनिया पर मुक़द्दम रखने की कोशिश करनी चाहिए। अगर यह होगा तो तब ही हम दुआ से हक़ीक़ी फ़ैज़ पाने वाले होंगे।

एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जमाअत को नसीहत करते हुए फ़रमाया था कि हमारी जमात को यह दुआ आजकल बहुत मांगनी चाहिए कि

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۔

(उद्धृत मल् फ़ूज़ात भाग प्रथम पृष्ठ 9 ऐडीशन 1984 ई.)

इसलिए कि हम दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करने वाले बनें। इसलिए भी कि हम दुश्मनों की भड़काई हुई आग से सुरक्षित रहें और आजकल तो दुनिया के जो हालात हैं, जंगों में भी ऐसे हथियार इस्तिमाल होते हैं जो आग फेंकते हैं। अल्लाह तआला हमें इस आग से भी बचाए और दुनिया में भी और आख़िरत में भी हसनात अता फ़रमाए।

अतः अपने लिए भी और दुनिया के लिए भी अहमदियों को बहुत दुआओं की ज़रूरत है

फिर उस दुआ को भी आजकल बहुत शिद्दत से और बहुत इज़्तेरार से करना चाहिए। क़ुरआन की दुआ है।

رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ

(अल् बकरः : 251)

हे हमारे रब हम पर सब्र नाज़िल कर और हमारे क़दमों को सबात बख़्श और काफ़िर क़ौम के ख़िलाफ़ हमारी मदद कर। किसी किस्म का ख़ौफ़ और हालात हमारे क़दमों को डगमगाना दें।

इस दुआ का भी बार-बार और इज़्तेरार के साथ विर्द करना चाहिए कि :

رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۟ وَاغْفِرْ لَنَا ۟ وَارْحَمْنَا ۟ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۔

(अल् बकर: 287)

हे हमारे रब हमारी पकड़ न कर अगर हम भूल जाएं या हमसे कोई ख़ता हो जाए और हे हमारे रब हम पर ऐसा बोझ न डाल जैसा कि हमसे पहले लोगों पर गुनाहों के नतीजे में तू ने डाला और ए हमारे रब हम पर कोई ऐसा बोझ न डाल जो हमारी ताक़त से बढ़कर हो और हम से दरगुज़र कर और हमें बख़श दे और हम पर रहम कर तू ही हमारा वाली है। अतः हमें काफ़िर क़ौम के मुक़ाबले पर नुसरत अता कर।

ईमान की मज़बूती के लिए यह दुआ भी बहुत पढ़नी चाहिए।

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ۔

(आल-ए-इमरान : 9)

हे हमारे रब हमारे दिलों को टेढ़ा न होने दे बाद उस के कि तू हमें हिदायत दे चुका है और हमें अपनी तरफ़ से रहमत अता कर यक़ीनन तू ही है जो बहुत अता करने वाला है।

अब उस के बाद में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बताई हुई कुछ दुआओं का वर्णन करता हूँ। एक मर्तबा हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि मुझे ऐसी दुआ सिखाएँ जिसके ज़रीये मैं अपनी नमाज़ में दुआ माँगूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तुम कहो :

اَللّٰهُمَّ اِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ظُلْمًا كَثِيْرًا، وَلَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ إِلَّا أَنْتَ، فَاغْفِرْ لِي مَغْفِرَةً مِنْ عِنْدِكَ، وَارْحَمْنِي، إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۔

(सही अल् बुख़ारी किताब अल् दावात .. हदीस 6326)

हे अल्लाह मैं ने अपनी जान पर बहुत ज़्यादा ज़ुलम किया और कोई गुनाह नहीं बख़श सकता सिवाए तेरे। अतः तू अपनी जनाब से मेरी मग़फ़िरत फ़र्मा और मुझ पर रहम फ़र्मा। यक़ीनन तू ही बहुत बख़शने वाला और बार-बार रहम करने वाला है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को उस की ताकीद फ़रमाई।

फिर मसअब बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हो अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि एक बदवी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि मुझे कोई ऐसी बात सखाए जो मैं कहा करूँ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया यह करो कि :

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، اَللّٰهُ أَكْبَرُ كَبِيْرًا، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا، سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۔

अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। वह अकेला है इस का कोई शरीक नहीं। अल्लाह सबसे बड़ा है और अल्लाह के लिए बहुत हमद है। पाक है अल्लाह जो समस्त जहानों का रब है न कोई ताक़त है न कोई क़ुव्वत है परंतु अल्लाह को जो ग़ालिब बुज़ुर्गी वाला और ख़ूब हिक्मत वाला है। इस बदवी ने अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ये तो मेरे रब के लिए हैं। इस की तारीफ़ मैं कर रहा हूँ। मेरे लिए क्या है? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि यह करो कि :

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي وَاهْدِنِي وَارْزُقْنِي ۔

कि ए अल्लाह मुझे बख़श दे। मुझ पर रहम फ़र्मा। मुझे हिदायत दे और मुझे रिज़्क़ अता फ़र्मा

(सही मुस्लिम किताब अल्ज़कर वालिदा बाब.. हदीस 6848)

एक दूसरी रिवायत में वर्णन है कि जब कोई शख़्स इस्लाम क़बूल करता तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसे यह दुआ सिखाया करते थे। अबू मालिक अशजई रज़ियल्लाहु अन्हो अपने वालिद से इस की रिवायत करते हैं कि जब कोई शख़्स इस्लाम लाता तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसे नमाज़ सिखाते। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसे इरशाद फ़रमाते कि इन कलिमात के माध्यम से दुआ करे।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِي، وَارْحَمْنِي، وَاهْدِنِي، وَعَافِنِي وَارْزُقْنِي ۔

(सही मुस्लिम किताब अल् ज़कर वालिदा बाब .. हदीस 6850)

हे अल्लाह मुझे बख़श दे और मुझ पर रहम फ़र्मा और मुझे हिदायत दे और मुझे आफ़ियत से रख और मुझे रिज़्क़ अता कर। अब दो सज्दों के दरमयान जो दुआ है इस में भी हम यह दुआ पढ़ते हैं लेकिन लोग तो केवल सज्दे से उठते हैं और फिर बैठ जाते हैं। लगता है कि दुआ करते ही नहीं। उनके नज़दीक तो इस की अहमियत ही कोई नहीं लगती हालाँकि इस पर बड़ा ग़ौर कर के समझ के पढ़नी चाहिए। जहां रिज़्क़ से मुराद माद्दी रिज़्क़ है वहां रूहानियत से भी इस की

मुराद है। इस में भी बढ़ने से इस की मुराद है

अतः हमें चाहिए कि हम इस सोच के साथ दुआ किया करें कि जहां हम अल्लाह तआला की तस्बीह-ओ-तहमीद करें वहां अपनी इस्लाह और हिदायत और रूहानियत में बढ़ने के लिए भी दुआ करें। केवल दुनिया के हुसूल के लिए हमारी दुआएं न हों बल्कि अपनी ज़ाहिरी और बातिनी हालतों की बेहतरी के लिए जब हम दुआ करेंगे और ख़ास तवज्जा से करेंगे तो फिर हर किस्म के फ़ज़लों की बारिश हम होती देखेंगे।

फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सिखाई हुई एक दुआ का यूं वर्णन मिलता है। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब रात को जागते तो फ़रमाते :

لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ، سُبْحَانَكَ، اللّٰهُمَّ أَسْتَغْفِرُكَ لِذَنْبِي، وَأَسْأَلُكَ رَحْمَتَكَ، اللّٰهُمَّ زِدْنِي عِلْمًا، وَلَا تُزِغْ قَلْبِي بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنِي، وَهَبْ لِي مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً، إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ۔

(सुंन अबी दाऊद अबवाब .. हदीस 5061)

हे अल्लाह तेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। हे अल्लाह मैं तुझसे अपने गुनाह की मग़फ़िरत तलब करता हूँ और तुझसे तेरी रहमत का तलबगार हूँ। हे अल्लाह मुझे इलम में बढ़ा दे और मेरे दिल को टेढ़ा न करना बाद उस के जब तू ने मुझे हिदायत दे दी और अपनी जनाब से मुझे रहमत अता फ़र्मा यक़ीनन तू ही बहुत ज़्यादा अता करने वाला है।

फिर एक रिवायत में आता है हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब किसी मुआमले में परेशानी होती आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते।

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيْثُ۔

(सुंन अल् तिरमज़ी अबवाब अल् दावात हदीस : 3524)

हे ज़िंदा और दूसरों को ज़िंदा रखने वाले हे क़ायम और दूसरों को क़ायम रखने वाले अपनी रहमत के साथ मेरी मदद फ़र्मा

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यक़ीनन रोज़ादार की इस के इफ़तार के वक़्त की दुआ ऐसी है जो रद्द नहीं की जाती। इब्न अबी मलीका ने कहा कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो जब इफ़्तार करते तो कहते

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ بِرَحْمَتِكَ الَّتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ أَنْ تَغْفِرَ لِيْ۔

(सुंन इब्ने माजा किताब सियाम बाब फ़ी (अल् सियाम .. हदीस 1753)

हे अल्लाह मैं तुझसे सवाल करता हूँ तेरी रहमत के वास्ते से जो हर चीज़ पर वसीअ है कि तो मुझे बख़श दे

फिर हज़रत उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हा से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे कि

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاهْدِنِيْ لِلطَّرِيْقِ الْأَقْوَمِ۔

(मस्नद अहमद बिन हनबल भाग 8 पृष्ठ 610 .. हदीस 27126 आलेमुल् कुतुब बेरूत 1998 ई.)

हे मेरे रब! बख़श दे और रहम फ़र्मा और मुझे इस तरीक़ की हिदायत दे जो सबसे सीधा और दरुस्त और मज़बूत है

अब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ये दुआ कर रहे हैं तो हमें किस शिद्दत से करनी चाहिए।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अपनी एक दुआ का ज़िक्र भी यूं मिलता है। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नी श्रीमती हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने वर्णन फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ में दुआ किया करते थे।

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ، وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا، وَفِتْنَةِ الْمَمَاتِ، اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْمَأْثَمِ وَالْمَغْرَمِ۔

(सही अल् बुख़ारी किताब .. हदीस : 832)

हे अल्लाह मैं तेरी पनाह में आता हूँ क़ब्र के अज़ाब से और तेरी पनाह में आता हूँ मसीह दज्जाल के फ़ित्ने से और तेरी पनाह में आता हूँ ज़िंदगी के फ़ित्ने से और मौत के फ़ित्ने से। अल्लाह !ला मैं तेरी पनाह में आता हूँ गुनाह से और माली बोझ से। किसी कहने वाले ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस क़दर कसरत से क्यों माली बोझ से पनाह तलब करते हैं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जब आदमी पर माली बोझ पड़ता है तो जब वह बात करता है तो झूठ बोलता है और जब वादा करता है तो वादा-ख़िलाफ़ी करता है।

अब यह दुआ जो कर रहे हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तो बहरहाल इन चीज़ों से पाक थे। यक़ीनन अपनी उम्मत के लिए कर रहे थे कि वह इन चीज़ों से बचें। वह झूठ से बचें। वादा-ख़िलाफ़ी से बचें। अब अपने जायज़े लेने की ज़रूरत है। हम यह दुआएं करते हैं तो क्या हम इन चीज़ों की पाबंदी भी कर रहे होते हैं। अतः यह दुआ भी करें ताकि अल्लाह तआला इन चीज़ों से बचाए और दुनिया के हसनात से हमें नवाज़ता रहे।

फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक दुआ है जिसका हज़रत आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने यूं वर्णन फ़रमाया है। यह लंबी दुआ है इसलिए मैं तर्जुमा पढ़ रहा हूँ कि :

[اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَالْهَرَمِ وَالْمَغْرَمِ وَالْمَأْثَمِ۔ اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ النَّارِ وَفِتْنَةِ النَّارِ، وَفِتْنَةِ الْقَبْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ، وَشَرِّ فِتْنَةِ الْغِنٰى، وَشَرِّ فِتْنَةِ الْفَقْرِ، وَشَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ، اَللّٰهُمَّ اغْسِلْ خَطَايَايَ بِمَاءِ الثَّلْجِ وَالْبَرَدِ، وَنَقِّ قَلْبِيْ مِنَ الْخَطَايَا، كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الْأَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ، وَبَاعِدْ بَيْنِيْ وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ]

हे अल्लाह मैं तेरी पनाह में आता हूँ सस्ती और बुढ़ापे से और चट्टी और गुनाह से। हे अल्लाह मैं तेरी पनाह में आता हूँ आग के अज़ाब से और आग के फ़ित्ने से और क़ब्र के फ़ित्ने से और क़ब्र के अज़ाब से और अमीरों के फ़ित्ने के शर से और मोहताजी के फ़ित्ने के शर से और मसीह दज्जाल के फ़ित्ने के शर से। अल्लाह! मेरी ख़ताओं को बर्फ़ के पानी और ठंडक से धो डाल और मेरे क़लब को ख़ताओं से यूं साफ़ कर दे जैसे सफ़ैद कपड़ा गंदगी से धोया जाता है और मेरे और मेरी ख़ताओं के दरमयान दूरी पैदा कर दे जैसा कि तू ने मशरिक़ और मग़रिब के दरमयान दूरी पैदा कर दी।

(सही अल् बुख़ारी किताब अल् दावात बाब .. हदीस 6375)

तो इस में बहुत सारी दुआ आ गई हैं।

जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह दुआ फ़रमाते थे जैसा कि मैं ने पहले कहा। पहली हदीस इस से मिलती जुलती है तो हमें किस क़दर उस की तरफ़ तवज्जा देनी चाहिए अतः यह दुआएं ही हैं जो हमारी ज़ाती ज़िंदगी में भी तबदीली लाएँगी और जमाती ज़िंदगी में भी फ़ायदा देंगी लेकिन हमें उस के साथ इस दर्द को भी महसूस करना होगा जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन दुआओं के वक़्त महसूस करते होंगे और केवल अपने लिए नहीं करते थे बल्कि अपनी उम्मत के लिए दुआ करते थे। अतः यह दुआएं करते हुए इस बात को भी हमेशा याद रखना चाहिए कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दिल में क्या होगा।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मसीह दज्जाल के फ़ित्ने से भी विशेषता पनाह मांगी जो इस ज़माने में अपने उरूज पर है। अतः मसीह मौऊद के ग़ुलामों को जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हक़ीक़ी मुतबईन में से हैं विशेषता दुआओं की तरफ़ तवज्जा देनी चाहिए और उन फ़ित्नों से बचने के लिए और विशेषता फ़ित्ना दज्जाल से बचने के लिए और दुनिया को बचाने के लिए इस दुआ की बहुत ज़रूरत है।

बुख़ारी में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तहज्जुद की नमाज़ में जो एक दुआ का ज़िक्र है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ी अल्लाह अन्हुमा ने वर्णन किया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब रात को तहज्जुद पढ़ने के लिए उठते तो फ़रमाते। यह दुआ लंबी है इस का मैं अनुवाद पढ़ देता हूँ कि

[اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ قَيِّمُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ وَلَكَ الْحَمْدُ لَكَ مُلْكُ السَّمٰوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ، وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ، وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ الْحَقُّ، وَوَعْدُكَ حَقٌّ، وَلِقَاؤُكَ حَقٌّ، وَقَوْلُكَ حَقٌّ، وَالْجَنَّةُ حَقٌّ، وَالنَّارُ حَقٌّ، وَالنَّبِيُّوْنَ حَقٌّ، وَمُحَمَّدٌ (صلى الله عليه وسلم) حَقٌّ، وَالسَّاعَةُ حَقٌّ، اَللّٰهُمَّ إِلَيْكَ أَنَبْتُ، وَبِكَ خَاصَمْتُ، وَإِلَيْكَ حَاكَمْتُ، فَاغْفِرْ لِيْ مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ، وَمَا أَسْرَرْتُ وَمَا أَعْلَنْتُ، أَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَأَنْتَ الْمُؤَخِّرُ، لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ، أَوْ لَا إِلٰهَ غَيْرُكَ]

हे अल्लाह सब तारीफों का तू हक़दार है तो आसमानों और ज़मीन को क़ायम रखने वाला है और उनको भी जो उनमें हैं और हर किस्म की तारीफ़ का तू ही मुस्तहिक़ है। आसमानों और ज़मीन की बादशाहत तेरी है और उनकी भी जो उन में हैं। हर किस्म की तारीफ़ का तो ही मुस्तहिक़ है तो आसमानों का और ज़मीन का नूर है और उनका जो उन में हैं और हर किस्म की तारीफ़ का तू ही मुस्तहिक़

है तो बरहक़ है तेरा वादा बरहक़ है तेरी मुलाक़ात बरहक़ है तेरा इरशाद बरहक़ है और जन्नत बरहक़ है और आग बरहक़ है और अम्बिया बरहक़ हैं और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बरहक़ हैं और मौऊद घड़ी बरहक़ है। अल्लाह! मैं तेरे हुज़ूर झुका हूँ और तेरी ख़ातिर मैंने झगड़ा किया और तेरे हुज़ूर फ़ैसला चाहा। अतः तू मुझे बख़श दे जो मैं ने पहले आगे भेजा और जो बाद के लिए रख दिया और जिसे मैं ने पोशीदा किया और जिसका मैं ने इज़हार किया। तू पहले है और तू आखिर है केवल तू ही इबादत के लायक़ है या फ़रमाया तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।

(सही अल् बुख़ारी किताब अल् तहजजुद .. हदीस 1120)

फिर हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी है कि एक शख़्स ने अर्ज़ किया। हेए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मैं ने आज रात आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दुआ सुनी है इस में से जो मुझ तक पहुंचा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम कह रहे थे।

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ ذَنْبِيْ، وَوَسِّعْ لِيْ فِيْ دَارِيْ وَبَارِكْ لِيْ فِيْمَا رَزَقْتَنِيْ۔

हे अल्लाह मुझे मेरे गुनाह बख़श दे और मेरे लिए मेरा घर वसीअ कर दे और मेरे लिए इस में बरकत रख दे जो तू ने मुझे बतौर रिज़्क़ अता फ़रमाया है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या तुम देखते हो कि इन कलेमात ने कोई चीज़ छोड़ी है।

(सुंन अल् तिरमेज़ी .. हदीस 3500)

तो यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआएं हैं उनका तर्जुमा कम से कम याद कर के या उस का मफ़हूम समझ कर हमें भी इस तरह दुआएं करनी चाहिए।

फिर बुख़ारी में एक दुआ इस तरह मिलती है कि

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِيْ قَلْبِيْ نُوْرًا، وَفِيْ بَصَرِيْ نُوْرًا، وَفِيْ سَمْعِيْ نُوْرًا، وَعَنْ يَمِيْنِيْ نُوْرًا، وَعَنْ يَسَارِيْ نُوْرًا، وَفَوْقِيْ نُوْرًا، وَتَحْتِيْ نُوْرًا، وَأَمَامِيْ نُوْرًا، وَخَلْفِيْ نُوْرًا، وَاجْعَلْ لِيْ نُوْرًا۔

(सही अल् बुख़ारी किताब अल् दावात .. हदीस 6316)

यह भी यह रिवायत में आता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी दुआओं में यह दुआ किया करते थे कि हे अल्लाह! मेरे दिल में नूर रख दे। मेरी बसारत-ओ-बसीरत में नूर रख दे। मेरी समाअत में नूर रख दे। मेरे दाएं भी नूर रख दे। मेरे बाएं भी नूर रख दे। मेरे ऊपर भी नूर हो और मेरे नीचे भी नूर हो और मेरे आगे भी नूर रख दे और मेरे पीछे भी नूर रख दे और मेरे लिए नूर ही नूर कर दे।

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक दुआ का यूं ज़िक्र है। ज़याद बिन इलाका अपने चचा कुत्बा् बिन मालिक से रिवायत करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह दुआ मांगा करते थे कि :

[اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ مُنْكَرَاتِ الْأَخْلَاقِ وَالْأَعْمَالِ وَالْأَهْوَاءِ

हे मेरे अल्लाह मैं बुरे अख़लाक़ और बुरे आमाल से और बुरी ख़ाहिशात से तेरी पनाह चाहता हूँ।

(सुंन अल् तिरमेज़ी अबवाब अल् दावात बाब .. हदीस 3591)

बड़ी मुख़्तसर सी यह दुआ है और यह हर कोई आराम से कर भी सकता है। बुरे अख़लाक़ बुरे आमाल और बुरी ख़ाहिशात से तेरी पनाह चाहता हूँ। अगर यह इन्सान करे और दर्द से करे तो बहुत सारी बुराईयां भी दूर हो जाएँगी और नेकियां पैदा हो जाएँगी

फिर एक रिवायत में आता है। हज़रत अब्बू अमामा रज़ियल्लाहु अन्हो रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस कसरत से दुआएं कीं कि हमको उनमें से कुछ भी याद न रहा। बैठे होंगे। दुआएं सिखा रहे होंगे। बहुत सारी दुआएं कीं। इसलिए हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया। इतनी ज़्यादा दुआएं थीं कि हमें याद नहीं रहा। कहते हैं हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! आपने बहुत सी दुआएं की हैं परंतु हमको तो उन दुआओं में से कुछ भी याद नहीं रहा। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या मैं तुम लोगों को एक ऐसी दुआ न बता दूं जो इन सब दुआओं की जामा दुआ है।

सुनें ग़ौर से कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क्या फ़रमाया। फ़रमाया कि तुम लोग यह दुआ करो कि

[اَللّٰهُمَّ إِنَّا نَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا سَأَلَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَأَنْتَ الْمُسْتَعَانُ، وَعَلَيْكَ الْبَلَاغُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ

हे अल्लाह हम तुझसे इस ख़ैर के तालिब हैं जिस ख़ैर के तालिब तेरे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे और हम हर उस शर से तेरी पनाह में आते हैं जिससे तेरे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तुझसे पनाह तलब की थी और असल मददगार तो तू ही है और तुझ ही से हम दुआएं मांगते हैं और अल्लाह की मदद के बग़ैर न तो हम नेकी करने की ताक़त पाते हैं और न ही शैतान के हमलों से बचने की क़ुव्वत।

(सुंन अल् तिरमेज़ी अबवाब अल् दावात हदीस : 3521)

अतः अगर हम यह दुआ करेंगए तो जहां आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत हमारे दिलों में पैदा होगी वहां तमाम जामा दुआएं हमारे दिल में से निकलना शुरू हो जाएँगी।

फिर बख़शिश और मग़फ़िरत की एक दुआ है। हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हो के बेटे अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह दुआ किया करते थे कि :

[رَبِّ اغْفِرْ لِيْ خَطِيْئَتِيْ وَجَهْلِيْ وَإِسْرَافِيْ فِيْ أَمْرِيْ كُلِّهِ وَمَا أَنْتَ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّيْ، اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ خَطَايَايَ وَعَمْدِيْ وَجَهْلِيْ وَجِدِّيْ وَكُلَّ ذٰلِكَ عِنْدِيْ، اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ وَمَا أَسْرَرْتُ وَمَا أَعْلَنْتُ أَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَأَنْتَ الْمُؤَخِّرُ وَأَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

हे मेरे रब मेरी ख़ताएँ, मेरी जहालतें, मेरे समस्त मुआमलात में मेरी ज़्यादतियां जो तू मुझ से ज़्यादा जानता है मुझे बख़श दे। हे मेरे अल्लाह अब ये आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दुआ कर रहे हैं जिनमें ये बुराईयों का, इन बातों का हम तसव्वुर भी नहीं कर सकते कि नेकियां ही नेकियां थीं लेकिन किस लिए? उम्मत के लिए, उम्मत को सिखाने के लिए यह फ़र्मा रहे हैं कि हे मेरे अल्लाह मुझे मेरी ख़ताएँ, मेरी उम्दा की गई गलतियां, जहालत और संजीदगी से होने वाली मेरी गलतियां मुझे माफ़ फ़र्मा दे और ये सब मेरी तरफ़ से हुई हैं। हे अल्लाह मुझे मेरे वे गुनाह बख़श दे जो मैं पहले कर चुका हूँ और जो मुझसे बाद में सरज़द हुए हैं और जो मैं छिप कर कर चुका हूँ और जो मैं ऐलानिया कर चुका हूँ। पहले और आखिर में तू ही है और तो हर एक चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है

(सही अल् बुख़ारी किताब अल् दावात बाब .. हदीस 6398)

यह बुख़ारी की हदीस है और यह रिवायतें इसलिए हैं कि हम यह दुआ करें। अतः यह हमारे लिए दुआएं सिखाई गई हैं।

फिर मुसीबत और हालत-ए-करब की एक दुआ का वर्णन यूं मिलता है कि :

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ الْعَظِيْمُ الْحَلِيْمُ۔ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ۔ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ رَبُّ السَّمٰوَاتِ وَرَبُّ الْأَرْضِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ۔

(सही अल् बुख़ारी किताब अल् दावात बाब .. हदीस 6346)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो ने रिवायत की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तकलीफ़ की हालत में यह दुआ किया करते थे कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। वह अज़मत वाला और बुर्दबार है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। वह अर्श-ए-अज़ीम का रब है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह आसमान-ओ-ज़मीन का और अर्श-ए-क्रीम का रब है।

फिर इबतेला के वक़्त की एक दुआ इस तरह है। इस का हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

كَانَ رَسُوْلُ اللهِ يَتَعَوَّذُ مِنْ جَهْدِ الْبَلَاءِ وَدَرَكِ الشَّقَاءِ وَسُوْءِ الْقَضَاءِ وَشَمَاتَةِ الْأَعْدَاءِ۔

صحیح البخاری کتاب الدعوات باب التعوذ من جھد البلاء حدیث 6347

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नाक़ाबिल-ए-बर्दाश्त आज़माईशों, बदबख़ती, बुरी क़ज़ा और दुश्मन के ख़ुश होने से अल्लाह तआला की पनाह तलब फ़रमाया करते थे।

दुनिया के फ़ित्ने से बचने के लिए एक दुआ है

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْبُخْلِ وَأَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْجُبْنِ وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْ أَنْ أُرَدَّ إِلٰى أَرْذَلِ الْعُمُرِ وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الْقَبْرِ۔

(सही अल् बुख़ारी किताब अल् दावात बाब .. हदीस 6390)

मअब बिन साद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हो अपने वालिद से यह रिवायत करते हैं कि उन्होंने वर्णन किया कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि

वसल्लम हमें ये कलिमात ऐसे सिखाया करते थे जिस तरह लिखना पढ़ना सिखाया जाता है। इस तरह लिखाते थे ताकीद करते थे जिस तरह लिखना पढ़ना सिखाया जाता है। यह दुआ क्या थी जो सिखाते थे कि हे अल्लाह मैं तेरी पनाह चाहता हूँ बुख़ल से और तेरी पनाह चाहता हूँ बुज़दिली से और तेरी पनाह चाहता हूँ इस बात से कि मैं बुढ़ापे की आयु की तरफ़ लौटाया जाऊं और तेरी पनाह चाहता हूँ दुनियावी आज़माईशों में घिरने से और क़ब्र के अज़ाब में गिरफ़्तार होने से। बड़ी जामे दुआ है।

हुसूल-ए-रुशद की दुआ

इस का अनुवाद यह है इमरान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरे वालिद हुसैन को फ़रमाया अगर तू इस्लाम क़बूल कर लेता तो मैं तुम्हें दो कलिमात सिखाता जो तेरे लिए नफ़ा का मूजिब होते। वह वर्णन करते हैं कि जब हुसैन ने इस्लाम क़बूल किया तो उन्होंने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझे वह दो कलिमात सिखाएं जिनका आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुझसे वाअदा किया था। इस पर आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम यह करो कि :

اَللّٰهُمَّ أَلْهِمْنِیْ رُشْدِیْ وَأَعِذْنِیْ مِنْ شَرِّ نَفْسِیْ۔

कि हे अल्लाह मुझे मेरी हिदायत के ज़राए इल्हाम कर और मेरे नफ़्स के शर से मुझे सुरक्षित रख।

(सुंन अल् तिरमेज़ी अबवाब अल् दावात बाब .. हदीस 3483)

यह दुआ भी फ़ी ज़माना बहुत पढ़ने की ज़रूरत है। दुश्मनों के बद इरादों के ख़िलाफ़ दुआ।

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِیْ نُحُوْرِهِمْ وَنَعُوْذُبِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ۔

(सुंन अबी दाऊद किताब .. हदीस 1537)

हज़रत अबू बरदा बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह रिवायत की है। कहते हैं मेरे वालिद ने मुझे बताया कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब किसी क़ौम की तरफ़ से ख़ौफ़ महसूस करते तो इन अल् फ़ाज़ में यह दुआ किया करते थे हे अल्लाह हम तुझे उनके सीनों के मुक़ाबिल पर रखते हैं और उनके शर से तेरी पनाह में आते हैं।

यह दुआ भी आजकल अहमदियों को बहुत ज़्यादा पढ़नी चाहिए। दुश्मनों के छल से अल्लाह तआला हमें सुरक्षित रखे

अब इन दुआओं के बारे में मैं बयान करूँगा जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तरफ़ से हमें मिलती हैं। जिन में कुछ इर्शादात हैं और कुछ दुआएं हैं। अपने एक ख़त में मौलवी नज़ीर हुसैन साहिब सखा देहलवी ने हज़रत इकदस की ख़िदमत में लिखा कि हुसूल-ए-हुज़ूर का क्या तरीक़ा है? किस तरह हम अल्लाह तआला की तरफ़ तवज्जा पैदा करें। इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जो जवाब दिया वह यह था कि "" اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَکَاتُهٗ۔ तरीक़ यही है कि नमाज़ में अपने लिए दुआ करते रहें और सरसरी और बे-ख़याल नमाज़ पर ख़ुश न हों बल्कि जहां तक मुम्किन हो तवज्जा से नमाज़ अदा करें और अगर तवज्जा पैदा न हो तो पंज वक़्त हर-यक नमाज़ में ख़ुदा तआला के हुज़ूर में बाद हर रकात के खड़े हो कर यह दुआ करें।" अर्थात जब क़ियाम करते हैं उस वक़्त यह दुआ करें "कि हे ख़ुदाए तआला क़ादिर-ए-ज़ूलजलाल मैं गुनहगार हूँ और इस क़दर गुनाह के ज़हर ने मेरे दिल और रग-ओ-रेशा में असर किया है कि मुझे रिक़्क़त और हुज़ूर नमाज़ हासिल नहीं हो सकता तो अपने फ़ज़्ल-ओ-करम से मेरे गुनाह बख़्श और मेरी तकसीरात माफ़ कर और मेरे दिल को नरम कर दे और मेरे दिल में अपनी अज़मत और अपना ख़ौफ़ और अपनी मुहब्बत बिठा दे ताकि उसके माध्यम से मेरी सख़्त दिल्ली दूर हो कर हुज़ूर नमाज़ में मयस्सर आवे।"

(मक्तूबात-ए-अहमद भाग पंजुम पृष्ठ 471 ऐडीशन 2015 ई.)

नमाज़ में तवज्जा पैदा करने के लिए भी अल्लाह तआला से दुआ करें फिर एक जगह आप ने यह दुआ की है कि

"हे मेरे मुहसिन और मेरे ख़ुदा मैं एक तेरा नाकारा बंदा पापी और पुरग़फ़लत हूँ तू ने मुझसे ज़ुलम पर ज़ुलम देखा और इनाम पर इनाम किया और गुनाह पर गुनाह देखा और एहसान पर एहसान किया। तू ने हमेशा मेरी पर्दापोशी की और अपनी असंख्य नेअमतों से मुझे लाभान्वित किया। अभ अब भी मुझ नालायक़ और पुरगनाह पर रहम कर और मेरी बेबाकी को माफ़ फ़र्मा और मुझ को मेरे इस ग़म से निजात बख़्श कि बजुज़ तेरे और कोई चारागर नहीं। आमीन"

(मक्तूबात-ए-अहमद भाग 2 पृष्ठ 10 ऐडीशन 2015 ई.)

यह ऐसी दुआ है जिसे मैं समझता हूँ रोज़ाना ज़रूर पढ़ना चाहिए। अपना जायज़ा लेना चाहिए। यह दुआ आप ने हज़रत ख़लीफ़ तुल मसीह प्रथम रज़ियल्लाहु अन्हो के नाम एक ख़त में लिखी थी। उनका मुक़ाम देखकर हमें ग़ौर करना चाहिए कि किस तवज्जा से हमें यह दुआ करनी चाहिए। हज़रत ख़लीफ़ा प्रथम रज़ियल्लाहु अन्हो को अगर ये दुआ लिखी थी तो हमें और बढ़ बढ़के यह दुआ तवज्जा से करनी चाहिए। दिल से निकली हुई दुआ होगी तो अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को भी खींचने वाली होगी।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक दुआ है जो जहां आप आजिज़ी और ख़शीयतुल्लाह का इज़हार करती है वहां हमें इस तरफ़ तवज्जा दिलाती है कि हम भी अपनी हालत का जायज़ा लेकर यह दुआ करें। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि:

"हे समस्त संसार के रब तेरे एहसानों का मैं शुक्र नहीं कर सकता तू निहायत ही रहीम-ओ-करीम है और तेरे असीमित मुझ पर एहसान हैं। मेरे गुनाह बख़्श ताकि मैं हलाक न हो जाऊं। मेरे दिल में अपनी ख़ालिस मुहब्बत डालता मुझे ज़िंदगी हासिल हो और मेरी पर्दापोशी फ़र्मा और मुझसे ऐसे अमल करा जिनसे तू राज़ी हो जाए। मैं तेरी वजह करीम के साथ इस बात से पनाह मांगता हूँ कि तेरा ग़ज़ब मुझ पर वारिद हो। रहम फ़र्मा और दुनिया और आख़िरत की बुलाओं से मुझे बचा कि हर एक फ़ज़्ल-ओ-करम तेरे ही हाथ में है।आमीन"

(मल्-फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 235 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर आप अलैहिस्सलाम की एक दुआ है जो आप ने पैग़ाम-ए-सुलह के शुरू में तहरीर फ़रमाई है जिसकी तरफ़ हमें बहुत तवज्जा देनी चाहिए। फ़रमाया कि

"हे मेरे क़ादिर ख़ुदा हे मेरे प्यारे रहनुमा ! तू हमें वह राह दिखा जिससे तुझे पाते हैं अहल-ए-सिदक़-ओ-सफ़ा और हमें उन राहों से बचा जिनका मद्दा केवल शहवात हैं या कीना या बुग़ज़ या दुनिया की लालच है।"

(पैग़ाम-ए-सुलह, रुहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 439)

दीन हमें मुक़द्दम हो फिर एक जगह नसीहत करते हुए आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

"सबसे उम्दा दुआ यह है कि ख़ुदा तआला की रजामंदी और गुनाहों से नजात हासिल हो क्योंकि गुनाहों ही से दिल सख़्त हो जाता है और इन्सान दुनिया का कीड़ा बन जाता है। हमारी दुआ यह होनी चाहिए कि ख़ुदा तआला हमसे गुनाहों को जो दिल को सख़्त कर देते हैं दूर कर दे और अपनी रजामंदी की राह दिखलाए।"

(मल्-फ़ूज़ात भाग 7 पृष्ठ 39 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर आप अलैहिस्सलाम की एक दुआ है कि "हम तेरे गुनहगार बंदे हैं और नफ़्स ग़ालिब हैं तू हमको माफ़ फ़र्मा और आख़िरत की आफ़तों से हमको बच्चा।"

(अख़बार अल् बदर भाग नंबर 2 पृष्ठ 30)

दुनिया की इस्लाह के दर्द में आप की एक दुआ का इस प्रकार वर्णन है कि : "हे ख़ुदावंद क़ादिर-ए-मुतलक़ जबकि क़दीम से तेरी यही आदत और यही सुन्नत है कि तू बच्चों और अनपढ़ों को समझ प्रदान करता है और इस दुनिया के हकीमों और फिलासफरों की आँखों और दिलों पर सख़्त पर्दे तारीकी के डाल देता है परंतु मैं तेरी जनाब मैं विनम्रता और दर्द से अर्ज़ करता हूँ कि इन लोगों में से भी एक जमात हमारी तरफ़ खींच ला अर्थात जो बड़े पढ़े लिखे लोग हैं उन लोगों में से एक जमात हमारी तरफ़ खींच ला "जैसे तू ने बाअज़ को खींचा भी है और उनको भी आँखें बख़्श और कान अता कर और दिल इनायत फ़रमाता वे देखें और सुनें और समझें और तेरी इस नेअमत का जो तू ने अपने वक़्त पर नाज़िल की है' अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का नाज़िल होना, आना। "क़दर पहचान कर उस के हासिल करने के लिए मुतवज्जा हो जाएं। अगर तू चाहे तो तू ऐसा कर सकता है क्योंकि कोई बात तेरे आगे कठिन नहीं है। आमीन"

(ईज़ाला औहाम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 120)

आज भी इस दुआ की हमें आप अलैहिस्सलाम की पैरवी में ज़रूरत है।

दुनिया की और विशेषता मुस्लिम उम्मा की इस्लाह होगी और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तरफ़ तवज्जा पैदा होगी तो तब ही उनकी खोई हुई अज़मत उन्हें मिलेगी और दुनिया में जो आज उनका हर जगह उपहास हो रहा है इस से भी नजात मिलेगी। ख़ुदा तआला हमारे लीडरों को और उल्मा को भी अक़्ल दे। उनमें से भी बाअज़ ऐसे नेक फ़ित्रत होंगे अल्लाह तआला उन्हें इस तरफ़ खींच के लाए। अतः हमें बड़े दर्द से इस दुआ को भी करना चाहिए।

फिर आप अलैहिस्सलाम की एक दुआ का वर्णन यूं मिलता है। हज़रत नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहब को एक ख़त में आप अलैहिस्सलाम ने यह दुआ लिखी

थी कि"दुआ बहुत करते रहो और आजिज़ी को अपनी ख़सलत बनाओ। जो केवल रस्म और आदत के तौर पर ज़बान से दुआ की जाती है यह कुछ भी चीज़ नहीं।" जो केवल रस्म और आदत के तौर पर ज़बान से दुआ की जाती है वह कुछ भी चीज़ नहीं होती।"..जब दुआ करो तो फ़र्ज़ नमाज़ के साथ यह दस्तूर रखो कि अपनी ख़लवत में जाओ और अपनी ही ज़बान में निहायत आजिज़ी के साथ' अर्थात केवल फ़र्ज़ नमाज़ें नहीं बल्कि नफ़ल नमाज़ों में भी। निहायत आजिज़ी के साथ "जैसे एक अदना से अदना बंदा होता है ख़ुदाए तआला के हुज़ूर में दुआ करो। कि रब्बुल आलेमीन तेरे एहसान का मैं शुक्र नहीं कर सकता। तो निहायत ही रहीम-ओ-करीम है और तेरे असीमित मुझ पर एहसान हैं। मेरे गुनाह बख़शता मैं हलाक न हो जाऊं। मेरे दिल में अपनी ख़ालिस मुहब्बत डालता मुझे ज़िंदगी हासिल हो और मेरी पर्दापोशी फ़र्मा और मुझसे ऐसे अमल करा जिनसे तू राज़ी हो जाए। मैं तेरे वजह करीम के साथ इस बात से पनाह मांगता हूँ कि तेरा ग़ज़ब मुझ पर वारिद हो। रहम फ़र्मा और दुनिया और आख़िरत की बलाओं से मुझे बच्चा कि हर एक फ़ज़ल-ओ-करम तेरे ही हाथ में हो। आमीन"

(मक्तूबात-ए-अहमद भाग 2 पृष्ठ 158-159 ऐडीशन 2015 ई.)

और उन दुआओं की क़बूलियत के लिए यह भी बहुत ज़रूरी है कि हम ज़्यादा से ज़्यादा दुरूद शरीफ़ पढ़ें। दुरूद के बग़ैर हमारी दुआएं हवा में मुअल्लक़ हो जाती हैं। अल्लाह तआला तक नहीं जातीं। अतः

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى إِبْرَاهِيْمَ، وَعَلٰى آلِ إِبْرَاهِيْمَ، إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ، اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى إِبْرَاهِيْمَ، وَعَلٰى آلِ إِبْرَاهِيْمَ إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔

इस का बहुत ज़्यादा हमें विर्द करना चाहिए। अल्लाह तआला हमें इस की तौफ़ीक़ भी दे कि हम अपने दिल से ये दुआएं करने वाले हों। अपनी ज़बान में भी दुआएं करें और वह हक़ीक़ी बेक़रार और मुज़्तर बन कर दुआएं करें जिनके दिल की गहराईयों से ये दुआएं निकल रही हों। रमज़ान की बरकात को हमेशा क़ायम रखने के लिए भी दुआ करें। इस जुमा की बरकात और आइन्दा आने वाले तमाम जुम्मे की नमाज़ो की बरकात हम हासिल करने वाले हों। असीरान की रिहाई जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने के जुर्म में असीर हैं उनके लिए बहुत दुआ करें। चाहे वह पाकिस्तान में हैं, यमन में हैं या और जगहों पर हैं। अल्लाह तआला उनकी रिहाई के सामान पैदा फ़रमाए और शरीरों के शर उन पर उलटाए। हमें और हमारी नसलों के जंगों की आग से सुरक्षित रहने और इसके बाद के असरात से सुरक्षित रहने के लिए बहुत दुआ करें। अल्लाह तआला हमें इस से बचाए। और अब लगता है कि यह जंग सामने खड़ी क्या अब तो शुरू हो चुकी है बल्कि आलमी जंग शुरू हो चुकी है लेकिन दुनिया के हुकमरानों को इस की कोई फ़िक्र नहीं। उनके ख़्याल में वह सुरक्षित रहेंगे और लोग मरेंगे लेकिन यह भी उनकी ख़ामख़याली है। अपनी स्वाभिमान को मुक़द्दम कर रहे हैं। अवाम की तो उन को कोई पर्वा भी नहीं है। यही दज्जाली चालें हैं। अवाम को अपने दाम में फंसा लिया है कि हम तुम्हारे लिए यह करते हैं वे करते हैं और अब तो अवाम में कहीं कहीं बहरहाल आवाज़ें उठनी शुरू हो गई हैं लेकिन उनकी चालों ने लोगों को ख़ुदा तआला से दूर कर दिया है। ख़ुद तो ये दूर हैं ही और साथ ही हर किस्म की बे-हयाई और बेबाकी उरूज पर है। यह भी अल्लाह तआला को पसंद नहीं है। इस का नतीजा यही निकलना है कि ख़ुदा तआला की पकड़ में आएं। ऐसे में अहमदियों को अपने आपको ख़ुदा के क़रीब करने और दुआओं में इज़तेरार पैदा करने की बहुत ज़रूरत है ताकि उनके शर से बच सकें। उनके नेक फ़ितरत लोगों के भी शर से बचने के लिए, जो उनके नेक फ़ितरत लोग हैं उनके लिए भी दुआ करें कि वे भी शर से बच जाएं।

जैसा कि मैं ने कहा कि जंग-ए-अज़ीम तो शुरू हो चुकी है फ़लस्तीन की सरहदों से अब ये जंग बाहर निकल गई है। उन्होंने सीरिया में ईरान के सिफ़ारत ख़ाने में जो हमला किया है यह किसी भी क़ानून के तहत एक बहुत बड़ा जुर्म है। इसराईल ने किया है इसलिए दुनिया ख़ामोश है। अब इस से मज़ीद जंग फैलेगी। उनके इमदादी कारकुनों के मरने पर अब शोर मचा है और कुछ लोग बोलने लग गए हैं लेकिन मासूम फ़लस्तीनियों के मरने पर यह ख़ामोश थे। जब अपने लोग मरे हैं तो अब इस दर्द को ये महसूस कर रहे हैं। बहरहाल यह दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला इन्सानियत को बचा ले और हमें दुआओं में भी अपना हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★ ★ ★

पृष्ठ 12 का शेष

इख़लास और मुहब्बत के जज़बात का ताल्लुक़ भी ज़रूरी है। अतः ख़ाह ज़माना कोई हो ख़िलाफ़त बहर हाल शख़्सी रहेगी! काश हमारे दोस्त इस नुक्ता को समझें।

विशेषतार ख़िलाफ़त सानिया के विषय में इस क़दर कहना काफ़ी है कि इस से आयत इस्तख़लाफ़ के अधीन ख़ुदा की कर्मी शहादत से परखो और फिर देखो कि उसके अंदर वे अलामात पाई जाती हैं या नहीं जो ख़ुदा ने सच्चे ख़लीफों के विषय में वर्णन फ़रमाई हैं। क्या ख़ुदा ने अपनी ज़बरदस्त क़ुदरत के साथ उसके ख़ौफ़ को अमन से नहीं बदला? क्या ख़ुदा ने उसके माध्यम जमात को मज़बूती और इस्तहकाम अता नहीं फ़रमाया? क्या इसके साथ हर क़दम पर ख़ुदा की नुसरत का हाथ नज़र नहीं आता? और क्या हमारा ख़लीफ़ा एक बुलंद और मुस्तहकम मीनार की तरह ख़ुदा की तौहीद का अल्मबरदार नहीं है? अगर ये सब कुछ है और निसन्देह है तो अपने पाक मसीह अलैहिस्सलाम के इस पाक कथन को याद करो कि हमारे ख़ुदा के कामों की अलामत यह है कि :

क़ुदरत से अपनी ज़ात का देता है हक़ सबूत
इस बेनिशां की चेहरा-नुमाई यही तो है
जिस बात को कहे कि करूँगा मैं यह ज़रूर
टलती नहीं वह बात ख़ुदाई यही तो है

तुम हज़ार दलीलें दो और हज़ार सिर पटको ख़ुदाई तक़दीर अपना काम कर चुकी है और अब किसी बाप के बेटे में उसके बदलने की ताक़त नहीं। दरख़्त हमेशा अपने फल से पहचाना जाता है और ख़िलाफ़त और अंजुमन का फल तुम्हारी आँखों के सामने है। अब उसके सिवा हम तुम्हें क्या कहें कि :

قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا
فَهَلْ وَجَدْتُّمْ مَا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا
وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

(प्रकाशन रोज़नामा अल् फ़ज़ल कादियान 4,7,8 अप्रैल 1943 ई.)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

संस्थान

★ ★ ★

ख़िलाफ़त का निज़ाम मज़हब के दायमी निज़ाम का भाग है और ख़ुदा तआला की अज़ली तक़दीर का एक ज़बरदस्त चमत्कार

(हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम-ए.रज़ियल्लाहु अन्हु)

क़ुरआन शरीफ़ में अल्लाह तआला बतौर उसूल के इरशाद फ़रमाता है कि दुनिया में दो तरह की चीज़ें पाई जाती हैं। एक वह जिना वजूद केवल आरिज़ी और वक़्ती हालात का नतीजा होता है और उनमें बनीनौ इन्सान के किसी हिस्सा के लिए कोई हक़ीक़ी लाभ मक़सूद नहीं होता और दूसरी वह जो निज़ाम-ए-आलम का हिस्सा होती हैं और लोगों के लिए उनमें कोई न कोई लाभ का पहलू मक़सूद होता है। प्रथम वर्णित चीज़ें दुनिया में झाग की तरह उठती और झाग की तरह बैठ जाती हैं। परंतु बाद में वर्णित चीज़ें जम कर ज़िंदगी गुज़ारती हैं और उन्हें दुनिया में क़रार हासिल होता है। इसलिए ख़ुदा तआला फ़रमाता है :

اَمَّا الزَّبَدُ فَیَذۡهَبُ جُفَآءً ۚ وَ اَمَّا مَا یَنۡفَعُ النَّاسَ فَیَمۡكُثُ فِی الۡاَرۡضِ

(सूरः अल् राद : 18)

अर्थात झाग की किस्म की चीज़ तो आनन फ़ानन गुज़र कर ख़त्म हो जाती है परंतु लाभ देने वाली चीज़ जम कर ज़िंदगी गुज़ारती है और दुनिया में क़रार हासिल करती है। इस असल के अधीन हम सहीफ़ा क़ुदरत पर नज़र डालते हैं तो हमें यह सुंदर दृश्य नज़र आता है कि जो चीज़ भी दुनिया के लिए किसी न किसी मार्ग से मुफ़ीद है अल्लाह तआला ने उसके क़ायम रहने के लिए कोई न कोई इंतेज़ाम कर रखा है। यहाँ तक कि छोटे से छोटे जानवरों और हक़ीर से हक़ीर जड़ीबूटियों के जीवन और नसल का इंतेज़ाम भी मौजूद है और क़ुदरत का मख़फ़ी परंतु ज़बरदस्त हाथ उन्हें मिटने और नष्ट हो जाने से बचाए हुए है और सहीफ़ा आलम के ज़्यादा गहरे अध्ययन से यह बात भी छुपी नहीं रह सकती कि जितनी कोई चीज़ बनीनौ इन्सान के लिए ज़्यादा मुफ़ीद होती है, उतना ही ख़ुदा तआला की तरफ़ से उसकी हिफ़ाज़त का इंतेज़ाम ज़्यादा पुख़्ता और ज़्यादा वसीअ होता है। क़ुरआन शरीफ़ की हिफ़ाज़त का वादा भी इसी असल के अधीन है इसलिए अल्लाह तआला फ़रमाता है :

اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّكۡرَ وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوۡنَ

(सूरः अल्-हिजर : 10)

अर्थात चूँकि क़ुरआन का इल्हाम एक हमेशा की यादगार क़रार दिया गया हैऔर ख़ुदा का यह मंशा है कि अब वह क़ियामत तक लोगों के बेदार करने का माध्यम रहे। इस लिए ख़ुदा ख़ुद इसका मुहाफ़िज़ होगा और हमेशा ऐसे सामान पैदा करता रहेगा जो उसे ज़ाहिरी और माअनवी हर दो लिहाज़ से सुरक्षित रखेंगे। मानो क़ुरआन की हिफ़ाज़त की वजह "ज़िक्र" के छोटे से शब्द में वर्णन कर दी गई है।

यही हाल नबुव्वत का है जब अल्लाह तआला दुनिया को किसी अज़ीमुश्शान फ़ित्ना-ओ-फ़साद में मुबतला देखकर उसकी इस्लाह का इरादा फ़रमाता है तो वह किसी व्यक्ति को अपनी तरफ़ से रसूले करीम या-नबी बना कर मबऊस करता है परंतु नबी बहरहाल एक इन्सान होता है और लवाज़मात बशरी के अधीन उसकी ज़िंदगी चंद गिनती के सालों से ज़्यादा वफ़ा नहीं कर सकती। इस सूरत में यह ज़रूरी होता है कि अल्लाह तआला इस नबी के मिशन को कामयाब बनाने और इंतेहा तक पहुंचाने के लिए उसकी वफ़ात के बाद भी कोई ऐसा इंतेज़ाम करे जिसके माध्यम नबी का बोया हुआ बीज अपने कमाल को पहुंच सके। और वह इस्लाह जो अल्लाह तआला नबी की बेअसत से पैदा करना चाहता है, दुनिया में क़ायम और रासिख़ हो जाए। यह ख़ुदाई निज़ाम जिसे गोया नबुव्वत का तितम्मा कहना चाहिए ख़िलाफ़त के नाम से मौसूम होता है। और अल्लाह तआला की यह सुन्नत है कि हर अज़ीमुश्शान नबी के बाद उसके काम को तकमील तक पहुंचाने के लिए खलिफ़ा का सिलसिला क़ायम फ़रमाता है। यह खलिफ़ा साधारणतः ख़ुद नबी या मामूर नहीं होते परंतु नबी के तर्बीयत याफताह और उसके ख़ुदा द अदमशन को समझने वाले और चलाने की अहलीयत रखने वाले होते हैं और जबक वह ख़ुदा की वह्यी के साथ खड़े नहीं होते परंतु ख़ुदा तआला अपनी तक़दीर ख़ास के अधीन ऐसा तसर्रुफ़ फ़रमाता है कि नबी के गुज़र जाने के बाद वही लोग मस्नद-ए-ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन होते हैं जिन्हें ख़ुदा इस काम के लिए पसंद फ़रमाता है। गोया ख़ुदा तआला के मख़फ़ी तारें मोमिनों के क़ुलूब पर नियंत्रित हो कर उन्हें ख़ुद बख़ुद ख़िलाफ़त के योग्य व्यक्ति की तरफ़ फेर देती है इसीलिए बावजूद इसके कि एक ग़ैर मामूर ख़लीफ़ा लोगों का मुंतख़ब शूदा होता है, इस्लाम यह शिक्षा देता है और क़ुरआन इस हक़ीक़त को विस्तार के साथ वर्णन फ़रमाता है कि ख़लीफ़ा ख़ुदा बनाता है। बज़ाहिर यह एक विपरीत सी बात नज़र आती है कि ऐसा व्यक्ति जो लोगों की कसरत राय या इत्तिफ़ाक़ राय से ख़लीफ़ा मुंतख़ब हो इसके चयन या इंतेख़ाब को ख़ुदा की तरफ़ मंसूब किया जाए परंतु हक़ यही है कि बावजूद ज़ाहेरी इंतेख़ाब के हर सच्चे ख़लीफ़ा के इंतेख़ाब में दरअसल ख़ुदा का मख़फ़ी हाथ काम करता है और केवल वही व्यक्ति ख़लीफ़ा बनता है और बन सकता है जिसे ख़ुदा की अज़ली तक़दीर इस काम के लिए पसंद करती है और उसके सिवा किसी की मजाल नहीं कि मस्नद-ए-ख़िलाफ़त पर क़दम रखने की जुर्रत कर सके। यही गहरी सदाक़त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस कथन में मख़फ़ी है। जो आपने अपनी वफ़ात से कुछ अरसा पहले हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के विषय में फ़रमाया। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

اردت ان ارسل الٰی ابی بکر حتیٰ اکتب کتاباً اذا عھد ان یتمنی المتمنون و
یقول قائل انا اولیٰ ثم قلت یا اللہ و یدفع المومنون او یدفع اللہ و یابی المؤمنون
(بخاری کتاب الاحکام)

"अर्थात मैं अबू बकर को अपने बाद ख़लीफ़ा निर्धारित करना चाहता था परंतु फिर मैंने ख़्याल किया कि यह ख़ुदा का काम है। ख़ुदा अबू बकर के सिवा किसी और व्यक्ति को ख़लीफ़ा नहीं बनने देगा। और न ही ख़ुदा की मशीयत के अधीन मोमिनों की जमात अबू बकर के सिवा और की ख़िलाफ़त पर राज़ी हो सकेगी।

अल्लाह अल्लाह इस छोटे से फ़िक़रे में निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त का कितना वसीअ मज़मून वदीअत कर दिया गया है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि बे-शक मेरे बाद बज़ाहिर मुस्लमानों की कसरत अबू बकर को ख़लीफ़ा मुंतख़ब करे परंतु दरअसल इस राय के पीछे ख़ुदा ए क़दीर की अज़ली तक़दीर काम कर रही होगी और वही होगा जो ख़ुदा का मंशा होगा और इसके सिवा कुछ नहीं हो सकेगा। इसलिए ऐसा ही हुआ और बावजूद इसके कि अंदरूनी तौर पर अंसार ने अपने में से किसी और व्यक्ति को खड़ा करना चाहा और बैरूनी तौर पर अरब के बदवी क़बायल ने बाग़ी हो कर ख़िलाफ़त के निज़ाम को ही मलियामेट कर देने की तदबीर की। परंतु चूँकि अबू बकर ख़ुदा का निर्धारित करदा ख़लीफ़ा था इस लिए उसके इत्तिबा की क़िल्लत उसके मुख़ालेफ़ीन की कसरत को इस तरह खा गई जिस तरह समुंद्र का पानी अपने ऊपर की झाग को खा जाता है।

फिर जो अल्फ़ाज़ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाए कि "ख़ुदा तुम्हें एक क़मीज़ पहनाएगा और लोग उसे उतारना चाहेंगे परंतु तुम उसे न उतारना।" (तिरमेज़ी)

वह भी इसी क़दीम सुन्नत इलाही की तरफ़ इशारा करते हैं कि दरअसल ख़लीफ़ा ख़ुदा बनाता है और इंतेख़ाब करने वाले लोग केवल एक पर्दा का काम देते हैं और एक आला से ज़्यादा हैसियत नहीं रखते जिसे ख़ुदा अपनी तक़दीर को जारी करने के लिए अपने हाथ में लेता है। इन अल्फ़ाज़ पर ग़ौर करो कि वह कैसे प्यारे और कैसे दानाई से मामूर हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़लीफ़ा बनाने के फ़ेअल को ख़ुदा की तरफ़ मंसूब फ़रमाते हैं और ख़िलाफ़त से माज़ूल करने की कोशिश को लोगों की तरफ़ निसबत देते हैं। गोया जो सूरत बज़ाहिर नज़र आती है इसके बिल्कुल बरअक्स इरशाद फ़रमाते हैं ख़िलाफ़त के इंतेख़ाब में बज़ाहिर नज़र आने वाली सूरत यह है कि लोग ख़लीफ़ा को मुंतख़ब करते हैं और ख़ुदा दिखने में इसे जुड़ा नहीं होता है। लेकिन बावजूद इसके आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद यह फ़रमाते हैं कि ख़लीफ़ा बनाता ख़ुदा है हाँ मुफ़सिद लोग बाज़-औक़ात ख़ुदा के बनाए हुए खलिफ़ा को माज़ूल करने की कोशिश ज़रूर किया करते हैं। यह वह अज़ीमुश्शान नुक्ता है जिसे समझने के बाद कोई व्यक्ति ख़ुदा के फ़ज़्ल से मसला ख़िलाफ़त के ताल्लुक़ में ठोकर नहीं खा सकता है। लेकिन चूँकि दुनिया का हर निज़ाम वक़्ती है और साधारणतः दौरों में तक़सीम शूदा होता है इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुस्लमानों को होशयार और चौकस रखने के लिए यह इन्किशाफ़ भी फ़र्मा दिया कि मेरे बाद मुत्तसिल और नियमित तौर पर ख़िलाफ़त-ए- हक़्क़ा का दौर केवल तीस वर्षों तक चलेगा जिसके बाद ग़ासिब लोग मुलूकियात का रंग इख़्तेयार कर लेंगे और इसके बाद हसब-ए-हालात और ज़रूरत ज़माना रुहानी ख़िलाफ़त के दौर आते रहेंगे यहाँ तक कि अंततः मसीह-ओ-मह्दी के नुज़ूल के बाद फिर मिनहाज-ए-नबुव्वत पर ज़ाहेरी ख़िलाफ़त की सूरत क़ायम हो जाएगी।

(मस्नद-ए-अहमद, भाग عن ابی عبد الرحمٰن سفینہ و مشکوٰۃ, अल् नज़ार)

चूँकि ख़िलाफ़त का निज़ाम-ए-नबुव्वत के निज़ाम का हिस्सा और तितम्मा है और

नबुव्वत की ख़िदमत और तकमील के लिए क़ायम किया जाता है इसलिए अल्लाह तआला ने उसके विषय में क़ुरआन शरीफ़ की आयत इस्तख़लाफ़ में ऐसी अलामात निर्धारित फ़र्मा दी हैं। जो सच्ची ख़िलाफ़त को झूठी ख़िलाफ़त से रोज़-ए-रौशन की तरह मुमताज़ कर देती हैं फ़रमाता है :

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۪ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْـًٔا ؕ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ

(सूरः नूर : 56)

अर्थात ख़ुदा तआला का यह पुख़्ता वादा है कि वह अमल-ए-सालेह बजा लाने वाले मोमिनों में से मुल्क में खलिफ़ा निर्धारित करेगा (यह अर्थ नहीं कि जो मोमिन भी अमल-ए-सालेह करने वाला होगा वह ज़रूर ख़लीफ़ा बनेगा बल्कि इस में इशारा यह है कि जो ख़लीफ़ा होगा वह ज़रूर मोमिन और अमल सा बजा लाने वाला होगा) यह खुल्फ़ा इसी सुन्नत के अनुसार निर्धारित किए जाऐंगे जिस तरह पहली उम्मतों में निर्धारित किए गए और ख़ुदा तआला इस दीन को जो उसने उनके लिए पसंद फ़रमाया है उनके माध्यम से दुनिया में मज़बूती से क़ायम फ़र्मा देगा और चूँकि हर तग़य्युर के वक़्त एक ख़ौफ़ की हालत पैदा हुआ करती है अल्लाह तआला उनकी ख़ौफ़ की हालत को अपने फ़ज़ल से अमन में बदल देगा ये लोग मेरे सच्चे प्रुस्तार होंगे और मेरे सिवा किसी माबूद के सामने (ख़ाह वह मख़फ़ी हो या ज़ाहिर) गर्दन नहीं झुकाएंगे और जो व्यक्ति ऐसी नुसरत और ताईद को देखते हुए भी इस निज़ाम ख़िलाफ़त से सरकशी इख़तेयार करेगा वह निसन्देह ख़ुदा का मुजरिम और फ़ासिक़ समझा जाएगा।

यह आयत-ए-करीमा जिसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सराहत के साथ ख़िलाफ़त के निज़ाम से विषय में क़रार दिया है अपने मुख़्तसर अलफ़ाज़ में एक निहायत वसीअ मज़मून को लिए है और इस नक़्शा की बेहतरीन तस्वीर है जो कम-ओ-बेश हर नई ख़िलाफ़त के क़ियाम के वक़्त दुनिया के सामने आता है। हर नबी या ख़लीफ़ा की वफ़ात एक अज़ीम ज़लज़ला का रंग रखती है और हर बाद में आने वाला ख़लीफ़ा ऐसे हालात में मसनद-ए-ख़िलाफ़त पर क़दम रखता है कि जब लोगों के दिल सहमे हुए और ख़ौफ़-ज़दा होते हैं कि अब क्या होगा। परंतु फिर लोगों के देखते देखते ख़ुदा उस आयत-ए-करीमा के वादा के अनुसार अपनी तक़दीर की मख़फ़ी तारों को खींचना शुरू करता है और ख़ौफ़ के दिनों को अमन में बदल कर आहिस्ता-आहिस्ता जमात को कमज़ोरी से मज़बूती की तरफ़ या मज़बूत हालत से मज़बूत तर हालत की तरफ़ उठाना शुरू कर देता है और यह खलिफ़ा अपनी दीनी हालत और दीनी ख़िदमत से इस बात पर मोहर लगा देते हैं कि ख़ुदा की मुहब्बत और ख़ुदा की नुसरत का हाथ उनके साथ है और यह सिलसिला अपनी ज़ाहिरी सूरत में उस वक़्त तक जारी रहता है जब तक कि ख़ुदा के इलम में नबी के लाए हुए दीन के इस्तिहकाम और इस के मिशन की तकमील और मज़बूती के लिए ज़रूरी है।

जैसा कि मैंने ऊपर इशारा किया है यह ख़िलाफ़त का निज़ाम जो दरअसल नबुव्वत का हिस्सा और ततिम्मा है हर अज़ीमुश्शान नबी के ज़माना में नुमायां तौर पर नज़र आता है इसलिए हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बाद उनके काम की तकमील के लिए हज़रत यशू ख़लीफ़ा हुए और हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम के बाद पितरस ख़लीफ़ा हुए और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा हुए और चूँकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का मिशन सारे नबियों से ज़्यादा शानदार और ज़्यादा वसीअ था इसलिए आपके बाद ख़िलाफ़त का निज़ाम भी सबसे ज़्यादा नुमायां और शानदार रूप में ज़हूर पज़ीर हुआ जिस को तेज़ किरनें आज तक दुनिया को लाभ प्रदान कर रही हैं। हक़ यह है कि अगर नबुव्वत के साथ ख़िलाफ़त का निज़ाम शामिल न हो तो नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) ख़ुदा पर एक ख़तरनाक इल्ज़ाम आयद होता है कि उसने दुनिया में एक इस्लाह पैदा करनी चाही परंतु फिर उस इस्लाह के लिए एक फ़र्द-ए-वाहिद को चंद साल ज़िंदगी देकर वफ़ात दे दी और इस इस्लाही निज़ाम को अपने हाथ से मलियामेट कर दिया। गोया यह एक बुलबुला था जो समुंद्र की सतह पर ज़ाहिर हुआ और फिर हमेशा के लिए मिट कर पानी की गहरी लहरों में ग़ायब हो गया

سُبْحَانَ اللّٰهِ مَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ

हमारा हकीम-ओ-अलीम ख़ुदा तो वह ख़ुदा है कि जो एक अदना से अदना नफ़ा देने वाली चीज़ को भी दुनिया में क़ायम रखता और उसके क़ियाम का सामान मुहय्या करता है जबकि नबुव्वत जैसे जोहर और एक मामूर की लाई हुई इस्लाह को एक हवा के उड़ते हुए झोंके की तरह बाग़-ए-आलम में लाए और फिर लोगों के देखते देखते उसे उनकी नज़रों से ग़ायब कर दे और इसके रूह पर असर और हयात-अफ़ज़ा तासीर को दुनिया में क़ायम करने के लिए अपनी तरफ़ से कोई इंतेज़ाम न फ़रमाए। निसन्देह यह मंज़र एक खेल से ज़्यादा नहीं और खेल खेलना शैतान का काम है ख़ुदा का नहीं। ख़ुदा जब कोई काम करना चाहता है तो उसकी अहमियत और वुसअत के मुताबिक हाल उसके लिए सामान भी मुहय्या फ़रमाता है और इस काम के दाएं और बाएं और ऊपर और नीचे को ऐसी लोहे की सलाख़ों से मज़बूत कर देता है कि फिर जब तक उसका मंशा हो कोई चीज़ उसे उसकी जगह से हिला नहीं सकती। इस लिए ख़ुदा की यह सुन्नत है कि ख़ास ख़ास अम्बिया के केवल बाद ही उनके मिशन की मज़बूती और इस्तहकाम के लिए ख़िलाफ़त का निज़ाम क़ायम नहीं फ़रमाता बल्कि उनकी बेअसत से पहले भी उनके लिए रस्ता साफ़ करने की ग़रज़ से कुछ लोगों को बतौर इरहास अर्थात आने वाली मंज़िल की अलामत के तौर पर मबऊस करता है जो लोगों की तवज्जा को आने वाले मुस्लेह के मिशन की तरफ़ फेरना शुरू कर देते हैं। इसलिए हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम से पहले हज़रत यहया बतौर इरहास मबऊस हुए और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पहले असंख्य लोग जो हनिफ कहलाते थे तौहीद के इबतेदाई झोंके बन कर ज़ाहिर हुए और इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से पहले सय्यद अहमद साहिब बरेलवी सौए हुए लोगों की बेदारी का माध्यम बन कर आए। क्या ऐसे हकीम-ओ-दाना ख़ुदा से यह तवक़्क़ो की जा सकती है कि वह नबी की चंद साला ज़िंदगी के बाद उसके लाए हुए मिशन को बग़ैर किसी इंतेज़ाम के छोड़ सकता है और इस बुढ़िया की मिसाल बन जाता है जो अपने मेहनत से क़ाते हुए धागे अपने हाथ से तबाह-ओ-बर्बाद कर देती है। मैं फिर कहूँगा

سُبْحَانَ اللّٰهِ مَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भी चूँकि दुनिया में एक अज़ीमुश्शान मिशन लेकर मबऊस हुए थे और अपने मुक़ाम के लिहाज़ से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जिल-ओ-बरोज़ कामिल थे। यहाँ तक के आप उनके मुक़ाम और काम के पेश-ए-नज़र फ़रमाया يُدْفَنُ فِيْ مَعِيَ قَبْرِيْ अर्थात मसीह मौऊद मेरे साथ मेरी क़ब्र में दफ़न होगा। अर्थात आख़िरत में उसे मेरा साथ हासिल होगी और उसे मेरे साथ रखा जाएगा। इसलिए ज़रूरी था कि आपके ख़ुदादाद मिशन की तकमील के लिए भी आपके बाद ख़िलाफ़त का निज़ाम क़ायम हो। इसलिए आपने अपनी कुतुब और मल्फ़ूज़ात में असंख्य जगह इस निज़ाम की तरफ़ इशारा किया है बल्कि आपके बहुत से इल्हामात में भी इस निज़ाम की तरफ़ इशारात पाए जाते हैं। परंतु मैं इस जगह इख़तेसार के ख़्याल से केवल एक मिसाल पर इकतेफ़ा करता हूँ और यह वह इबारत है जो आपने अपने ज़माना वफ़ात के क़रीब महसूस करके अपने मुतबईन के लिए बतौर वसीयत तहरीर की। आप फ़रमाते हैं:

ख़ुदा का कलाम मुझे फ़रमाता है कि .. वह इस सिलसिला को पूरी तरक़्क़ी देगा कुछ मेरे हाथ से कुछ मेरे बाद। यह ख़ुदा तआला की सुन्नत है और जब से कि उसने इन्सान को ज़मीन में पैदा किया हमेशा इस सुन्नत को ज़ाहिर करता रहा है कि वह अपने नबियों और रसूले करीमों की मदद करता है और उनको ग़लबा देता है ..और जिस रास्तबाज़ी को वह दुनिया में फैलाना चाहते हैं उसका बीज उन्ही के हाथ से कर देता है लेकिन उसकी पूरी तकमील उनके हाथ से नहीं करता बल्कि ऐसे वक़्त में उनको वफ़ात देकर जो बज़ाहिर एक नाकामी का ख़ौफ़ अपने साथ रखता है .. एक दूसरा हाथ अपनी क़ुदरत का दिखाता हैऔर ऐसे अस्बाब पैदा कर देता है। जिनके माध्यम से वह मक़ासिद जो किसी क़दर नाकाम रह गए थे अपने कमाल को पहुंचते हैं। उद्देश्य वह दो किस्म की क़ुदरत ज़ाहिर करता है (1) अव्वल ख़ुद नबियों के हाथ से अपनी क़ुदरत का हाथ दिखाता है। (2) दूसरे ऐसे वक़्त में जब नबी की वफ़ात के बाद मुश्किलात का सामना हो जाता है ख़ुदा तआला दूसरी मर्तबा अपनी ज़बरदस्त क़ुदरत ज़ाहिर करता है और गिरती हुई जमात को सँभाल लेता है। अतः वह जो अख़ीर तक सब्र करता है। ख़ुदा तआला के इस मोजिज़ा को देखता है। जैसा कि हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के वक्त में हुआ। जबकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मौत एक बेवक़त मौत समझी गई और बहुत से बाद ये नशीन मुर्तद हो गए और सहाबा भी मारे ग़म के दीवाना की तरह हो गए तब ख़ुदा तआला ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो को खड़ा करके दुबारा अपनी क़ुदरत का नमूना दिखाया और इस्लाम को नाबूद होते हुए थाम लिया और इस वादा को पूरा किया जो फ़रमाया था कि :

وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ○

अर्थात ख़ौफ़ के बाद फिर हम उनके पैर जमा देंगे .. ऐसा ही हज़रत-ए-मूसा अलैहिस्सलाम के वक़्त में हुआ .. ऐसा ही हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम के साथ मुआमला हुआ .. अतः हे अज़ीज़ो जबकि क़दीम से अल्लाह की सुन्नत यही है कि ख़ुदा तआला दो क़ुदरतें दिखाता है ता मुख़ालिफ़ों की दो झूठी ख़ुशियों को पामाल कर के दिख लाए। अतः अब मुम्किन नहीं कि ख़ुदा तआला अपनी क़दीम सुन्नत को तर्क कर

देवे। इसलिए तुम मेरी इस बात से जो मैंने तुम्हारे पास वर्णन की (अर्थात मेरी वफ़ात के क़रीब होने की ख़बर) दुखी मत हो और तुम्हारे दिल परेशान न हो जाएं क्योंकि तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत का देखना भी ज़रूरी है .. मैं ख़ुदा की तरफ़ से एक क़ुदरत के रंग में ज़ाहिर हुआ और मैं ख़ुदा की एक मुजस्सम क़ुदरत हूँ और मेरे बाद कुछ और वजूद होंगे जो दूसरी क़ुदरत का मज़हर होंगे।

(रिसाला अल् वसीयत)

यह इबारत जिस सराहत और संकल्प के साथ निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त की तरफ़ इशारा कर रही है वह मुहताज वर्णन नहीं और यह इबारत बतौर वसीयत के लिखी गई जबकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा से क़ुरब वफ़ात की ख़बर पाकर अपने बाद के निज़ाम के बारे में अपनी जमात को आख़िरी नसीहत फ़रमाई और हर अक़लमंद ग़ैर मुतअस्सिब व्यक्ति आसानी के साथ समझ सकता है कि इस इबारत से निम्नलिखित बातें साबित होती हैं :

(प्रथम)

ख़ुदा तआला अम्बिया के काम की तकमील के लिए दो किस्म की क़ुदरत ज़ाहिर फ़रमाता है एक ख़ुद नबियों के ज़माना में और दूसरी उनकी वफ़ात के बाद ताकि उनके मिशन और उनकी जमात को एक लंबे अरसा तक अपनी ख़ास निगरानी में रखकर तरक़्क़ी दे और तकमील तक पहुंचाए।

(द्वितीय)

दूसरी क़ुदरत ख़िलाफ़त की सूरत में ज़ाहिर होती है। जैसा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के वजूद में ज़ाहिर हुई।

(तृतीय)

यह ख़िलाफ़त का निज़ाम जो नबुव्वत के निज़ाम का हिस्सा और इसी का ततिम्मा है ख़ुदाई सुन्नत का रंग रखता है और हर नबी के ज़माना में क़ायम होता रहा है।

(चतुर्थ)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद भी इसी रंग में क़ुदरत सानिया का ज़हूर मुक़द्दर था क्योंकि जैसा कि आप ख़ुद ख़ुदा की एक मुजस्सम क़ुदरत थे आपके बाद कुछ और वजूदों ने दूसरी क़ुदरत का मज़हर होना था और उन वजूदों ने हज़रत अबू बकर के रंग में ज़ाहिर होना था।

(पंचम)

नबी के बाद आने वाले खलिफ़ा चाहे बज़ाहिर सूरत लोगों के इंतेख़ाब से निर्धारित हूँ परंतु दरअसल उनके चयन में ख़ुदा का हाथ काम करता है और दर-हक़ीक़त ख़लीफ़ा ख़ुदा ही बनाता है।

(छठी)

सूरः नूर की आयत इस्तख़लाफ़ निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त से ताल्लुक़ रखती है और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त उसी आयत के अधीन थी और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद की ख़िलाफ़त भी इसी आयत के अधीन थी।

यह वह छः बातें हैं जो ऊपर के हवाला से यक़ीनी और निश्चित तौर पर साबित होती हैं और यह इस्तदलाल ऐसा वाज़िह और स्पष्ट है कि कोई अक़लमंद प्रभावी व्यक्ति इससे इंकार नहीं कर सकता और यह हवाला भी जैसा कि उसके हालात और सयाक़-ओ-सबॉक् और अल् फ़ाज़ और वर्णन के सिद्धांतों से ज़ाहिर है मुहकमात का रंग रखता है जिस के मुक़ाबला पर इन मोतशाबेहात को पेश करना जो कुछ विशेष कामों के संबंध में विशेष हालात और विशेष माहौल में अंजुमन के बारे में लिखी गई हैं। एक शरारत या दीवानगी के फ़ेअल से ज़्यादा नहीं और अगर यह दीवानगी नहीं तो नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) सुम्मा नऊज़ूबिल्लाह (हम फिर से इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) ख़ुदा का निर्धारित करदा मसीह दीवाना है, कि एक तरफ़ तो अपने मिशन की तकमील और अपनी वफ़ात के बाद के निज़ाम के विषय में ख़ुदाई सुन्नत के अधीन दो क़ुदरतों के ज़हूर का वर्णन किया और मिसाल देकर बताया कि दूसरी क़ुदरत हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के रंग में ज़ाहिर हुआ करती है और फिर यहां तक व्याख्या की कि मैं ख़ुदा की एक मुजस्सम क़ुदरत हूँ और मेरे बाद कुछ और वजूद होंगे जो दूसरी क़ुदरत का मज़हर होंगे लेकिन ठीक इसके साथ-साथ और पहलू ब पहलू सारे इर्शादात को भूल कर और बालाए ताक़ रख कर अंजुमन को अपना ख़लीफ़ा निर्धारित करके चल दिए। हालाँकि अंजुमन आपकी ज़िंदगी में ही क़ायम हो गई थी और उसकी जा-नशीनी जिन अर्थों में भी वह थी ख़ुद आपकी मौजूदगी में शुरू हो चुकी थी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तरफ़ इस मजनूनाना तज़ाद को मंसूब करना अहल-ए-पैग़ाम को मुबारक हो। हम ख़ुश हैं कि हमारा दामन इस दीवानगी के दाग़ से पाक है। काश ये लोग केवल इस बात पर ही ग़ौर करते कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जहां भी अपने ख़ुदादाद मिशन की तकमील और सिलसिला और जमात के काम को सँभालने और चलाने का वर्णन किया है वहां किसी जगह अंजुमन का वर्णन नहीं किया बल्कि केवल ख़िलाफ़त का वर्णन किया है और दो क़ुदरतों के उसूल को वर्णन करके और मिसाल देकर वाज़िह किया है कि इस काम के लिए ख़ुदा ने ऐसा ही निज़ाम निर्धारित फ़रमाया है। जैसा कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के वक़्त में ज़ाहिर हुआ और यह कि यह ख़ुदा की एक सुन्नत है जो समस्त नबियों के वक़्त में ज़ाहिर होती रही और कभी बदल नहीं सकती। और उसके मुक़ाबिल पर अंजुमन का वर्णन सिर्फ़ कुछ अधीन कामों के ताल्लुक़ में आया है और उसके साथ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह वाज़े शर्त और हदबंदी लगा दी है कि इस अंजुमन के लिए ज़रूरी होगा वह" हसब-ए-हिदायत सिलसिला अहमदिया' अपना काम सरअंजाम दे (रिसाला अल् वसीयत) अर्थात ख़ुदा के निर्धारित करदा ख़लीफों और क़ुदरत सानिया के मज़हरों की निगरानी में काम करे। क्या इन व्याख्याओं में हमारे बिछड़े हुए भाईयों के लिए कोई सामान हिदायत नहीं? अफ़सोस सद्-अफ़्सोस

فَإِنَّهَا لَا تَعْمَى الْأَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِيْ فِي الصُّدُوْرِ

खुदा ने ख़िलाफ़त के प्रश्न को केवल लफ़्ज़ी और कोली तसरीह तक ही नहीं छोड़ा बल्कि अपने ज़बरदस्त फ़ेअल के साथ इस पर महर तसदीक़ भी सब्त कर दी है बल्कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद जमाअत में जो सबसे प्रथम सर्व सहमति हुई वह ख़िलाफ़त ही के विषय में था और यह सर्व सहमति भी ख़ुदा ने उन लोगों के हाथ से करवाया जो अब ख़िलाफ़त के मुनकिर हो कर अंजुमन का राग अलाप रहे हैं। इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद जनाब ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब ने जो उस वक़्त सदर अंजुमन अहमदिया की सेकटरी थे अंजुमन की तरफ़ से हसब-ए-ज़ैल ऐलान शाय किया।

"हुज़ूर अलैहिस्सलाम का जनाज़ा कादियान में पढ़ा जाने से पहले आपके वसाया मुंदरजा रिसाला अल् वसीयत के अनुसार हसब मश्वरा विश्वसनीय सदर अंजुमन अहमदिया मौजूदा कादियान-ओ-अक़रबा हज़रत मसीह मौऊद आज्ञा के बाद हज़रत उम्मुल मौमेनीन समस्त क़ौम ने जो कादियान में मौजूद थी जिसकी संख्या उस वक़्त बारह सौ थी हज़रत अल्हाज जनाब हकीम नूरुद्दीन साहिब सलमा को आपका जांनशीन और ख़लीफ़ा क़बूल किया और आपके हाथ पर बैअत की।"

(ऐलान वर्णित अल् हकम 28 मई 1908 ई. बदर तिथि 2 जून 1908 ई.)

यह वह पहला इजमा है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद जमात में हुआ। जिसमें सदर अंजुमन अहमदिया के मैंबर (हाँ वही अंजुमन अहमदीय जो अब ख़लीफ़ा की क़ायम मक़ाम बताई जाती है) और समस्त हाज़िरुल वक़्त जमात के अफ़राद शरीक और मुत्तफ़िक़ थे। अतः न केवल ख़ुदा के कथन में बल्कि उसके ज़बरदस्त फ़ेअल ने भी ख़िलाफ़त के हक़ में मोहर तसदीक़ सब्त की है और अब कौन है जो इस मोहर को तोड़ सकता है।

यह ख़्याल कि यह ज़माना जमहूरियत का है और अब शख़्सी ख़िलाफ़त के बजाय अंजुमन का निज़ाम होना चाहिए एक बेवक़ूफ़ी का ख़्याल है क्योंकि अव्वल तो इस निज़ाम की ज़िम्मावारी ख़ुदा पर है न कि हम पर या किसी और पर और ख़ुदा ने जिस तरह पसंद किया और बेहतर समझा उसे क़ायम फ़र्मा दिया।

لَا يُسْئَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْئَلُوْنَ

इसके अतिरिक्त क्या ख़ुदा ने इस ज़माना में नबुव्वत के निज़ाम को बदल दिया हैकि ख़िलाफ़त के निज़ाम को बदलने की ज़रूरत पेश आए? अगर इस जमहूरी ज़माना में भी ख़ुदा ने एक वाहिद व्यक्ति को अवतार का जामा पहना कर अवतरित फ़रमाया है और उसकी जगह किसी अंजुमन को मामूर बना कर नहीं भेजा तो ख़िलाफ़त जो इसी निज़ाम की टहनी है किस तरह बदल सकती है? हाँ ग़ौर करो तो इस्लामी ख़िलाफ़त में भी एक झलक जमहूरीयत की मौजूद है। अर्थात अव्वल तो ख़लीफ़ा बज़ाहिर जमात के इंतेख़ाब से निर्धारित होता है दूसरे उसके लिए हुक्म है कि जमात के अहम मुआमलात में जमात का मश्वरा लेता रहे और जहां तक संभव हो इस मश्वरा का एहतेराम करे। जबकि उसका तवक्कुल केवल ख़ुदा पर होना चाहिए और उसे किसी मश्वरा का पाबंद क़रार देना तवक्कुल के मुक़ाम के मुनाफ़ी है। अफ़सोस है कि मोतरिज़ीन ने यह भी नहीं सोचा कि ख़िलाफ़त केवल एक इंतेज़ामी मन्सब नहीं है बल्कि ख़लीफ़ा ने जमात के लिए

عَلَيْكُمْ بِسُنَّتِيْ وَسُنَّةِ الْخُلَفَاءِ الرَّاشِدِيْنَ الْمَهْدِيِّيْنَ

के इरशाद के अधीन उदाहरण भी बनना होता है और उसके साथ जमाअत का

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़िलाफ़त के साथ जुड़े रहना क्यों ज़रूरी है
(हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु)

(1) इस वास्ते कि ख़िलाफ़त मिनहाज नबुव्वत का एक अंग है। वह मिनहाज नबुव्वत जिसको हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फिर दुनिया में क़ायम और ज़िंदा किया।

(2) इस वास्ते कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी कुछ तहरीरों में अपने बाद सिलसिला खुलफ़ा के क़ियाम का इज़हार फ़रमाया है।

(3) इस वास्ते कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विसाल के वक्त समस्त जमात का बिल् इत्तेफ़ाक़ हज़रत नूरुद्दीन आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़लीफ़ा निर्धारित करना इस अमर का सबूत है कि सिलसिला हक़्क़ा अहमदिया में क़ियाम-ए-ख़िलाफ़त मंशाए इलाही से है और यह सिलसिला ख़िलाफ़त इस जमात में इन श अल्लाह क़ियामत तक क़ायम रहेगा और मुबारक होंगे वे जो इस से मुंसलिक रहें।

(4) इस वास्ते कि हज़रत ख़लीफ़ अव्वल नूरुद्दीन आज़म रज़ियल्लाहु अन्हो अपने छः साला ख़िलाफ़त के समय में अपने अक्सर वाज़ों में बार-बार ताकीदन फ़रमाते थे कि ख़लीफ़ा ख़ुदा बनाता है। मुझे भी ख़ुदा ने ख़लीफ़ा बनाया। मेरे बाद भी ख़ुदा ही ख़लीफ़ा बनाएगा।

(5) इस वास्ते कि हज़रत ख़लीफ़ अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी वफ़ात से चंद रोज़ क़बल अपने बाद ख़लीफ़ बनाया जाए के विषय में वसीयत की और जमात के अकाबिर ने जो उस वक़्त मौजूद थे इस अमर के आगे सिर तस्लीम ख़म किया।

(6) इस वास्ते कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् सानी अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ इन समस्त भविष्यवाणियों को पूरा करने वाले हैं जो उनके विषय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उनकी पैदाइश से पूर्व की थीं। उदाहरणतः वह उलुल् अज़म होगा। उस का नाम महमूद अहमद स. होगा। उस का नाम बशीर होगा। वह जल्द जल्द बढ़ेगा इत्यादि।

(7) इस वास्ते कि जब हम अपने लिए मुशाहिदा करते हैं कि हमने केवल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं के तुफ़ैल इस क़दर दीनी ख़िदमात की तौफ़ीक़ हासिल की है। और दीनी और संसारिक उमूर में ऐसी तरक़्क़ीयां हासिल की हैं जो हमारे साथ के और शख्सों को नहीं हुईं, तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआएं जो आपकी औलाद के हक़ में हैं और शाय शूदा हैं ज़रूर था कि वे भी अपनी क़बूलियत के आसार नुमायां करतीं और उन दुआओं की क़बूलियत का एक नमूना हज़रत ख़लीफ़त् तुल मसीह अल् सानी अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के अज़म-ए-इस्तक़लाल, तक़्वा, इबादत ज़ोहद, क़ुव्वत निज़ाम, तमकेनत, वक़ार, संजीदगी, शुजाअत, अफ़व, जोहद और अन्य विशेषताओं और उच्च आचरण में और हुज़ूर की सफलताओं और फ़तह मंदों में हो रहा है।

(8) इस वास्ते कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी कि वह हुस्न-ओ-अहसान में तेरी मानिंद होगा हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् सानी अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के वजूद में पूरी हो रही है।

(9) इस वास्ते कि यह अल्लाह की सुन्नत है कि हर ज़माना में वह अपनी वह्यी और इल्हाम के माध्यम से एक मुक़द्दस जमात क़ायम करता है। जिसको बरकत देता हैऔर उसकी नुसरत करता है वह जमात उस ज़माना में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की क़ायम करदा जमात है, जिसका निज़ाम अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जांनशीन ख़लीफ़-ए-वक़्त के माध्यम से मुस्तहकम कर दिया है।

(10) सिलसिला अहमदिया के क़ियाम का जो असल उद्देश्य है कि दुनिया-भर में दीन-ए-इस्लाम क़ायम हो वह काम निहायत ज़ोर और ख़ूबी के साथ हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् सानी अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के माध्यम से अल्लाह तआला करा रहा है।

(11) ख़ुदा तआला के पाक कलाम के मआरिफ़-ओ-हक़ायक़ जो सिवाए मुतह्हर लोगों के औरों पर नहीं खुलते, उस ज़माना में जिस कसरत के साथ हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् सानी अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ पर खुल रहे हैं, इसकी मिसाल दुनिया--भर में और किसी इन्सान में नहीं पाई जाती। तफ़सीरों को पढ़ पढ़ा कर और दूसरों से सुन सुनाकर एक तफ़सीर बना लेना या एक आधा लतीफ़ा वर्णन कर देने का काम बहुत लोग कर सकते हैं लेकिन कसरत के साथ हक़ायक़-ओ-मआरिफ़ कलाम-ए-इलाही केवल उसी पर खुलते हैं जो अल्लाह तआला के साथ मुहब्बत-ओ-इताअत का ख़ास ताल्लुक़ रखता है और जो ख़ुदा रसीदा औलियाउल्लाह में से हो।

(12) इस वास्ते कि पिछले 23 वर्षों का अरसा इस अमर का शाहिद है कि हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् सानी अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के बिल् मुक़ाबिल जिन लोगों ने इस सिलसिला में से ख़िलाफ़त को उड़ाना चाहा या हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िलाफ़त की मुख़ालिफ़त की वह हमेशा नाकाम और न-मुराद रहे और ऐसे लोग आइन्दा भी हमेशा नाकाम-ओ-ना-मुराद रहेंगे।

(13) इस वास्ते कि हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह सानी अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की दुआएं जमाअत के लोगों के हक़ में रोज़ाना पूरी होती रहती हैं। मैं दफ़्तर डाक में कुछ अरसा ख़िदमत करते हुए इस अमर को दिलचस्पी के साथ मुशाहिदा करता रहा हूँ कि रोज़ाना कई एक पत्र इस शुक्रिया से भरे हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् सानी अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत में पहुंचते कि हुज़ूर की दुआ के तुफ़ैल हमारी अमुक मुराद हासिल हुई या अमुक उद्देश्य पूरा हुआ।

(14) इस वास्ते कि मैंने ख़ुद अपने नफ़स पर और अपने अहल-ओ--अयाल पर हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् सानी अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की बहुत सी दुआओ को क़बूल होते हुए मुशाहिदा किया और ऐसी बरकतें पाइं जो और किसी जगह हासिल नहीं हो सकतीं। चूँकि यह सिलसिला हक्का चौधवीं के बदर से मुशाबहत रखता है इस वास्ते चौदह के नंबर पर मैं इस मज़मून को ख़त्म करता हूँ।

(रोज़नामा अलफ़ज़ल कादियान दारुलअमान तिथि 10 अगस्त 1937 ई.)

★ ★ ★

ख़ुत्बात और खिताबात हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से लाभ उठाने का महत्त्व और बरकात

(श्रीमान मुनीर अहमद ख़ादिम साहिब, ऐडीशनल नाज़िर इस्लाह व इरशाद जुनूबी हिंद)

حق له ان ینعکس فیه انوار سید المرسلین صلی الله علیه وسلم یزعم العامة انه اذا نزل فی الارض کان واحداً من الأمة۔ کلا بل هو شرح الاسم الجامع المحمدی و نسخة منتسخته منه

हज़रत शाह वलीउल्लाह साहिब मुहद्दिस देहलवी बतौर भविष्यवाणी फ़रमाते हैं कि मसीह मौऊद इस बात का हक़दार है कि इस में सय्यदुल् मुरसेलीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनवार प्रतिबिंबित हों। आम लोग यह ख़्याल करते हैं कि जब मसीह मौऊद नाज़िल होगा तो केवल एक उम्मती फ़र्द होगा। ऐसा हरगिज़ नहीं बल्कि वह -ए-जामे मुहम्मदी की शरह और आपका सच्चा अक्स (True Copy) होगा।"(उद्धृत ख़ुत्बा-ए-जुमा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे फ़र्मूदा 5 अप्रैल 1985 ई.)

प्रिय श्रोताओं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इमाम अल्ज़मान के लिए जिन अंगों का वर्णन फ़रमाया है उनमें से एक बोसेत्त फ़ी अलालम भी है अर्थात अल्लाह समस्त अवतरित किए जाने वाले ख़लीफ़ा को उलूम रुहानिया और जिसमानिया में वुसअत अता फ़रमाएगा। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि :

"तीसरी क़ुव्वत बस्तत फ़ी इल्म है जो इमामत के लिए ज़रूरी और उसका ख़ास्सा लाज़िमी है। चूँकि इमामत का मफ़हूम समस्त हक़ायक़ और मआरिफ़ और लवाज़म मुहब्बत और सिदक़ और वफ़ा में आगे बढ़ने को चाहता है। उसी लिए वह अपने समस्त दूसरे क़ुवा को इसी ख़िदमत में लगा देता है और رَبِّ زِدْنِیْ عِلْمًا की दुआ में हर-दम मशग़ूल रहता है और पहले से उसके मदारिक और हवास इन उमूर के लिए जो हर काबिल होते हैं। इसी लिए ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से अल्लाह के ज्ञान में इस को बसत प्रदान की जाती है और इस के ज़माना में कोई दूसरा ऐसा नहीं होता जो क़ुरआन के मआरिफ़ के जानने और कमालात मे इफ़ाज़ा और समस्त हुज्जत में उसके बराबर हो उसकी राय दूसरों के उलूम की तसहीह करती है। और अगर दीनी हक़ायक़ के वर्णन में किसी की राय उसकी राय के मुख़ालिफ़ हो तो हक़ उसकी तरफ़ होता है क्योंकि उलूम हुक़्क़ा के जानने में नूर-ए-फ़िरासत उसकी मदद करता है। और वह नूर इन चमकती हुई शुवाओं के साथ दूसरों को नहीं दिया जाता। وَذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ । अतः जिस तरह मुर्ग़ी अंडों को अपने परों के नीचे लेकर उनको बच्चे बनाती है और फिर बच्चों को परों के नीचे रखकर अपने जोहरान के अंदर पहुंचा देती है इसी तरह यह व्यक्ति अपने उलूम रुहानिया से सोहबत याबों को इलमी रंग से रंगीन करता रहता है और यक़ीन और मार्फ़त में बढ़ाता है।

और इस बाग़ का ख़ुदा तआला की तरफ़ से बाग़बान ठहराया जाता है और इस पर फ़र्ज़ होता है कि प्रत्येक एतराज़ को दूर करे और प्रत्येक मोतरिज़ का मुँह-बंद कर दे और केवल यह नहीं बल्कि यह भी इस का फ़र्ज़ होता है कि न केवल एतराज़ात दूर करे बल्कि इस्लाम की ख़ूबी और ख़ूबसूरती भी दुनिया पर ज़ाहिर कर दे। अतः ऐसा व्यक्ति निहायत क़ाबिल ताज़ीम और किबरियत-ए-अहमर का हुक्म रखता है क्योंकि उसके वजूद से इस्लाम की ज़िंदगी ज़ाहिर होती है और वह इस्लाम का फ़ख़र और समस्त बंदों पर ख़ुदा तआला की हुज्जत होता है और किसी के लिए जायज़ नहीं होता कि इस से जुदाई इख़्तेयार करे क्योंकि वह ख़ुदा तआला के इरादा और इज़न से इस्लाम की इज़्ज़त का मुरब्बी और समस्त मुस्लमानों का हमदरद और कमालात दीनिया पर दायरा की तरह मुहीत होता है। प्रत्येक इस्लाम और कुफ़्र की क्षति गाह में वही काम आता है और उसी के अन्फ़ास तय्यबा कुफ़्र कश होते हैं। वह बतौर कल के और बाक़ी सब उसके भग होते हैं।"

(रुहानी ख़ज़ायन, भाग 13 ज़रूरतुल ईमाम, पृष्ठ 479 से 481)

इस से हम समझ सकते हैं कि इस दौर में ख़िलाफ़त अला मिनहाज-ए--नबुव्वत के माध्यम ज़ाहिर होने वाले इर्शादात-ओ-अहकामात की क्या क़दर-ओ-क़ीमत है।

इस अज़ीमुश्शान ख़िलाफ़त के विषय में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ

(अन्फ़ाल : 25)

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अल्लाह और उसके रसूले की आवाज़ पर लब्बैक कहा करो। जब वह तुम्हें बुलाए ताकि वह तुम्हें ज़िंदा करे।

لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰى ۚ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهٗ لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ ۭ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ سُوْۗءُ الْحِسَابِ ۙ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۭ وَبِئْسَ الْمِهَادُ

(अल् राअद : 19)

इन लोगों के लिए जो अपने रब की आवाज़ पर लब्बैक कहते हैं भलाई है और वे लोग जो उसे लब्बैक नहीं कहते अगर वे सब का सब उनका जो ज़मीन में है और उसके बराबर और भी हो तो वे इस को देकर ज़रूर अपनी जानें छुड़ाने की कोशिश करेंगे। यह वे लोग हैं जिन के लिए बहुत बुरा हिसाब मुक़द्दर है और उनका ठिकाना जहन्नुम है और क्या ही बुरा ठिकाना है।

काबिल-ए-एहतिराम सदर-ए-इजलास और मुअज़्ज़िज़ सामईन विनीत की तक़रीर का विषय है "ख़ुत्बात और खिताबात हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से इस्तिफ़ादा की अहमियत और बरकात" है।

प्रिय श्रोताओं हम वह ख़ुश-क़िस्मत जमाअत हैं जिन्हें अल्लाह तआला के फ़ज़्ल-ओ-करम से इस दौर में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़रमान की इताअत में इमाम महदी और मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को क़बूल करने और ख़िलाफ़त अला मिन्हाज-ए-नबुव्वत की इताअत-ओ--फ़रमांबर्दारी करके अज़ीमुश्शान जस्मानी और रुहानी बरकात के हुसूल की तौफ़ीक़ मिल रही है। इमाम महदी अलैहिस्सलाम वह अज़ीमुश्शान वजूद हैं जिनके विषय में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मसील होंगे। सूरः जुमा मेंअल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि

هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ

कि वही है जिसने अनपढ़ लोगों में उन्ही में से एक अज़ीम रसूले करीम अवतरित किय वह उन पर उसकी आयात की तिलावत करता है और उन्हें पाक करता है और उन्हें किताब की और हिक्मत की शिक्षा देता है जबकि इससे पहले वह निसन्देह खुली-खुली गुमराही में थे।

और अगली आयत में फ़रमाया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेअसत मुबारका जैसे अव्वलीन में हुई है इसी तरह आखेरीन में भी तमसीली तौर पर होगी और इस में भी आपके यही काम होंगे। फ़रमाया

وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ

और इन्ही में से दूसरों की तरफ़ भी उसे मबऊस किया है जो अभी उनसे नहीं मिले हैं वह कामिल ग़लबा वाला और साहिब-ए-हिक्मत वाला है।

गोया ईमाम महदी और मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बेअसत वास्तव में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेअसत है और इमाम महदी--ओ-मसीह मौऊद के ज़िम्मा भी वही काम बताए गए हैं जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आप की प्रथम बेअसत में थे। अर्थात तिलावत आयात-ए-रब्बानी, और तज़किया नफ़ूस, और किताब की शिक्षा और उसकी अनमोल हिक़मतों से आगाही करना। पहले बुज़ुर्गों ने भी इसकी तसरीह करते हुए लिखा है कि आने वाले महदी में सय्यदुल् मुरसेलीन सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनवार मुनअकिस होंगे। इसलिए हज़रत शाह वलीउल्लाह साहिब मुहद्दिस देहलवी अपनी किताब अलख़ैरुल कसीर में फ़रमाते हैं कि :

सल्लम ने फ़रमाया था कि यह ख़िलाफ़त मिन्हाज-ए-नबुव्वत पर होगी। इस एतबार से यह ख़िलाफ़त अपनी अज़मत और रिफ़अत में नबुव्वत की बरकात को समेटे हुए है।

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस ख़िलाफ़त को अल्लाह तआला की क़ुदरत सानिया क़रार देते हुए जमात को यह ख़ुशख़बरी अता फ़रमाई है कि अल्लाह तआला उसके माध्यम जमात को अज़ीम बरकात अता फ़रमागा। विशव्यापी विजय इस्लाम का ज़हूर उस ख़िलाफ़त के माध्यम से होगा। आप ने फ़रमाया।

"तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत का भी देखना ज़रूरी है और उसका आना तुम्हारे लिए बेहतर है। क्योंकि वह दायमी है जिसका सिलसिला क़ियामत तक समाप्त नहीं होगा और वह दूसरी क़ुदरत नहीं आ सकती जब तक मैं न जाऊं। लेकिन मैं जब जाऊंगा तो फिर ख़ुदा उस दूसरी क़ुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो हमेशा तुम्हारे साथ रहेगी। जैसा कि ख़ुदा का बराहीन-ए--अहमदिया में वादा है और वह वादा मेरी ज़ात से संबंधित नहीं है बल्कि तुम्हारी निसबत वादा है जैसा कि ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं उस जमाअत को जो तेरे अनुयायी हैं क़ियामत तक दूसरों पर ग़लबा दूँगा।" (रिसाला अल्--वसीयत)

अतः ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया वह क़ुदरत-ए-सानिया है जिसके अंतर्गत अल्लाह तआला ने ख़िलाफ़त के जांनिसारों के लिए क़ियामत तक दाइमी ग़लबा का वादा फ़रमाया है। और इस ग़लबा के हुसूल के लिए हमारे लिए यह बात शर्त क़रार दी है कि हम ख़लीफ़-ए-वक़्त के इरशादात को इताअत के कानों से सुनें और दिल-ओ-जान से उन पर अमल करें। क्योंकि यही वह दूध है जो आसमान से उतरा है और जिसके विषय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इल्हाम हुआ है कि इस को दिल-ओ-दिमाग़ में महफ़ूत किया जाए।

प्रिय श्रोताओं हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने इल्हामन फ़रमाया : "आसमान से बहुत दूध उतरा है सुरक्षित रखो।" (तज़्करः, पृष्ठ 558)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उसकी तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि अर्थात मआरिफ़-ओ-हक़ायक़ का दूध .. फिर फ़रमाया या يا احمد فاضت الرحمة على شفتيك كلام أفصحت من لدن ربّ كريم अर्थात हे अहमद तेरे लबों पर रहमत जारी है तेरा कलाम-ए-ख़ुदा की तरफ़ से फ़सीह किया गया है।

यही वह दूध और रहमत है जो आज क़ुदरत-ए-सानिया के मुज़ाहेरीन के माध्यम हम तक पहुंच रहा है।

(तज़्करः, 558)

और यह आसमानी दूध सवा सौ साल से लगातार अपनों और बेगानों पर बरसता चला आ रहा है। जमात अहमदिया में क़ायम होने वाली ख़िलाफ़त से लेकर ख़िलाफ़त ख़ामसा तक की तारीख़ का अगर हम मुताला करें तो हमें साफ़ मालूम होता है कि न केवल हर दौर-ए-ख़िलाफ़त में यह बारिश बरसी है बल्कि इस आसमानी बारिश ने समस्त दुनिया को वक़्त के हालात के अनुसार फ़ैज़याब किया है।

यह बारिश आलमी तौर पर भी बरसी है और उसने दुनिया के बादशाहों की भी राहनुमाई की है और उनको बादशाहत के उस्लूब सिखाय हैं। इस्लामी शिक्षा की रोशनी में उन्हें उनके फ़रायज़ से आगाह किया है तो दूसरी तरफ़ दुनिया के हर उलूम के माहेरीन ने ख़ाह वह आर्थिक उलूम के माहिर हों या समाजी उलूम के माहिर हों या फिर साईंसी उलूम के माहिर हो या तिब्बी उलूम के माहिर हों या तबक़ातुल अरज़ के उलूम के माहिर हों या तारीख़ पर गहरी नज़र रखने वाले हों या मज़हबी उलूम के माहिर हों उन सबकी बेहतरीन रंग में मार्गदर्शन किया है।

प्रत्येक की कमियोंऔर ग़लतियों की निशानदेही फ़रमाई है। इसलिए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम की तसदीक़ बराहीन-ए-अहमदिया आपका दरसुल क़ुरआन, तिब्ब से विषय में आपकी कुतुब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु के सयासी हुक्मरानों को मश्वरे, इक़्तेसादियात के लैक्चर, साईंसी उलूम में गहिरी दस्तरस आपके दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, तफ़सीर-ए-कबीर और इस्लाम का इक़्तेसादी निज़ाम, अहमदियत अर्थात हक़ीक़ी इस्लाम, दावतुल अमीर जैसे लैक्चरज़ और मारतुल आरा कुतुब से है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह की तामीर बैतुल्लाह के मक़ासिद पर दुनिया वालों की राहनुमाई और इक़्तेसादी मसायल के हल पर ख़ुत्बात और पाकिस्तानी हुकमरानों के जमाअत अहमदिया के ख़िलाफ़ ग़ैर इस्लामी फ़ैसलों पर उनकी राहनुमाई और मुस्तक़बिल में ज़ाहिर होने वाली उनकी ज़बूँ हाली का नक़्शा जिसके मोअतरिफ़ आज वहां के दानिश्वर भी हैं ओर दीनी उलूम पर मुश्तमिल तब्लीग़ी-ओ-तर्बीयती ख़ुतबात-ओ-ख़ताबात और हर अमर की बारीकबीनी से तफ़सीलात का इज़्हार और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह के जदीद साईंसी उलूम के अनुसार क़ुरआन-ए-करीम की तफ़सीर और इस हवाला से अहल-ए-दुनिया के सामने मजालिस इर्फ़ान के माध्यम हर विषय पर मज़ामीन पर सैर हासिल बेहस और होम्योपैथी तर्ज़-ए-ईलाज पर गहरी तहक़ीक़ और इस के माध्यम दुनिया को लाभ पहुंचाना और हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की इस्लामी तारीख़ पर गहरी नज़र और अपने ईमान अफ़रोज़ ख़ुतबात में उनका वर्णन, दुनिया के हुकमरानों को अपने ख़ुतूत और लैक्चरज़ के माध्यम से विश्व शांति की इस्लामी शिक्षा से आगाह करना और ईमान अफ़रोज़ शिक्षी-ओ-तर्बीयती--ओ-तब्लीग़ी-ओ-इंतेज़ामी ख़ुतबात के माध्यम जमाअत के लोगों की तर्बीयत और उन्हें मक़सद बैअत से आगाह करना यही वह दुध है जिसके विषय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इल्हाम हुआ था कि आसमान से बहुत दूध उतरा है सुरक्षित रखो। और यही वह रहमत है जो पहले क़ुदरत औला के मज़हर के होंटों पर नाज़िल हुई और फिर लगातार क़ुदरत सानिया के मुज़ाहेरीन पर नाज़िल होती चली जा रही हैं।

प्रिय श्रोताओं अल्लाह तआला ने इन अनफ़ास़-ए-क़ुदसिया को जो क़ुदरत-ए-उलिया और फिर क़ुदरत सानिया के मुज़ाहेरीन पर दिन रात नाज़िल हो रहे हैं हमारी जस्मानी और रुहानी ज़िंदगी के लिए ज़रूरी क़रार दिया है और मोमिनों को नसीहत फ़रमाई है कि जब अल्लाह तआला और उसका रसूले करीम ज़िंदा करने के लिए तुमको रुहानी ज़िंदगी बख़शने के लिए बुलाऐं तो उनकी बातों को ग़ौर से सुना करो और उनकी बातों का जवाब दिया करो उनकी बातों को अपने दिल-ओ-दिमाग़ में उतारा करो। फ़रमाया

जो लोग रब्बानी बातों पर लब्बैक कहते हैं उन के लिए भलाई ही भलाई है और वे लोग जो उनकी बातों पर लब्बैक नहीं कहते तो बे-शक इस दुनिया के ख़ज़ानों को भी ख़र्च करें बद अंजामी से बच नहीं सकते और बद अंजामी न केवल उनका पीछा करती है बल्कि उनकी नसलों का भी पीछा करेगी।

(अल् राद : 19)

अतः भाई ख़लीफ़-ए-वक़्त के इर्शादात को सुनना न केवल सुनना बल्कि सुनने के लिए बेचैन होना हर मोमिन की वह सुन्नत है जो अंततः उस को दाइमी ख़ुशहाली और नजात और अबदी पुरसुकून ज़िंदगी का वारिस बनाती है बल्कि उसकी नसल दर नसल इस चश्म-ए-शीरीं से फ़ैज़याब होती चली जाती है। ख़लीफ़-ए-वक़्त के इर्शादात की अहमियत के हवाला से हमको हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का यह इरशाद हमेशा मद्द-ए-नज़र रखना चाहिए कि :

"ख़ुदा तआला जिस व्यक्ति को ख़िलाफ़त पर खड़ा करता है वह इस को ज़माना के अनुसार उलूम भी अता करता है उसे अपनी सिफ़ात बख़्शाता है।" (अल् फुरकान मई जून 1967 ई. पृष्ठ 37 उद्धृत ख़ुत्बात-ए-मसरूर भाग प्रथम)

फिर फ़रमाते हैं कि "ख़िलाफ़त के तो अर्थात ही ये हैं कि जिस वक़्त ख़लीफ़ा के मुँह से कोई लफ़्ज़ निकले उस वक़्त सब स्कीमों, सब तजवीज़ों- और सब तदबीरों को फेंक कर रख दिया जाए और समझ लिया जाए कि अब वही स्कीम या वही तजवीज़ और वही तदबीर मुफ़ीद है जिसका ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की तरफ़ से हुक्म मिला है और जब तक यह रूह जमाअत में पैदा न हो उस वक़्त तक सब ख़ुतबात रायगां समस्त स्कीमें बातिल और

समस्त तदबीरें नाकाम हैं।"

(ख़ुत्बा जुमा 24 जनवरी 1936 ई. मुंदरजा अल् फ़ज़ल 31 जनवरी 1936)

अतः ख़लीफ़-ए-वक़्त के इरशाद अत मोमिन की जान होते हैं और उनको सुनना और उन पर अमल करना उसकी ज़िंदगी होती है और इसी से इस को हयात जावेदानी नसीब होती है। इसी लिए हुज़ूर अनवर अय्यदहु-ल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हम अहल हिन्द को जो चार नुकाती प्रोग्राम अता फ़रमाया है इस में एक नुक्ता यह है कि हम हुज़ूर अनवर का लाईव ख़ुतबा जुमा ख़ुद भी सुनें और अपने बच्चों को भी इस के सुनने की आदत डालें। हुज़ूर अनवर के ख़ुतबात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इल्हाम के अनुसार वह दूध हैं जो अल्लाह तआला ने आसमान से नाज़िल फ़रमाया है। अल् हमदो लिल्लाह कि यह दूध हर जुमा मोमिनीन के घरों तक पहुंचता है। इस के विषय में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने एक अवसर पर फ़रमाया।

"यह अल्लाह तआला का एहसान है कि उसने ज़माने में फ़ासलों की दूरी के बावजूद एम. टी.ए. के माध्यम जमाअत और ख़िलाफ़त के ताल्लुक़ को जोड़ दिया है। इस लिए मेरे ख़ुतबात और मुख़्तलिफ़ प्रोग्रामों को ज़रूर सुना करें। मैंने जायज़ा लिया है कि कुछ ओहदेदारान भी ख़ुत्बात को बाक़ायदगी से नहीं सुनते हैं यह ख़ुत्बात वक़्त की ज़रूरत के अनुसार देने की कोशिश करता हूँ इसलिए अपने आपको उनसे ज़रूर जोड़ें ताकि दुनिया में हर जगह अहमदियत की शिक्षा की जो इकाई है इस का दुनिया को पता लग सके।"

(ख़ुत्बा जुमा 27 सितंबर 2013 ई. उद्धृत अल् फ़ज़ल इंटरनैशनल 18 अक्तूबर 2013)

यह ख़ुत्बात जो मुख़्तलिफ़ मज़ामीन पर मुश्तमिल होते हैं कभी उन में तर्बीयती-और-अख़लाक़ी पहलू होते हैं जिनमें इबादात के तरीक़े सिखाए जाते हैं। इबादात पर दवाम पैदा करने की नसीहत की जाती है। मसाजिद की अहमियत, मुख़्तलिफ़ किस्म के अख़लाक़ जैसे तकब्बुर से बचना, हलीमी, और नरमी पैदा करना, मेहमान-नवाज़ी के आदाब, सब्र के फ़वायद, तवक्कुल का मफ़हूम, अमन और रवादारी और भाई चारे की इस्लामी शिक्षा, ख़िलाफ़त के आदाब-ओ-बरकात, बैअत के उद्देश्य, इताअत की बरकात, माली क़ुर्बानी की अहमियत और इस के फ़वायद, मुहब्बत प्यार और यक-जहती से ज़िंदगी गुज़ारने की शिक्षा, सिफ़ात इलाही के मआरिफ़ से परिपूर्ण आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहि-स्सलाम की सीरत के हसीन पहलू, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत पर किए जाने वाले एतराज़ात के जवाबात और जमात अहमदिया का मत, इबतेलाओं में जमाअत अहमदिया के अमली नमूने, दावत इलालाह के गुण, जमात अहमदिया आलमगीर की जानी-ओ-माली क़ुर्बानियों के ईमान अफ़रोज़ तज़किरे, दुनिया-भर में होने वाले जलसा हाय सालाना के ईमान अफ़रोज़ तज़किरे, जमाअती इंतेज़ामी उमूर पर ख़ुतबात और खिताबात, ओहदेदारान-ए-जमाअत को ईमान अफ़रोज़ नसाएह, दुआ की अहमियत और लाभ

ख़ुत्बात के इलावा ये रुहानी दूध आपके खिताबात की शक्ल में भी उतरता है। जिस में आप अपनों और ग़ैरों सबको यकसाँ इस्लाम और अहमदियत के फ़ैज़ से हैं।

ऐसे ख़तबात में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के वे ख़ताबात भी हैं जो आपने मुख़्तलिफ़ देशों के दा-निशवरों और सरबराहों को मद्द-ए-नज़र रख कर दिए हैं और जिस में आप उन्हें दुनिया में अमन-ओ-सलामती क़ायम करने, यकजहती पैदा करने के इस्लामी आदाब और अदल-ओ-इन्साफ़ के क़ियाम की अज़ीमुश्शान हसीन इस्लामी शिक्षा वर्णन फ़रमाते हैं। ये खिताबात जहां ग़ैरों के लिए मुफ़ीद हैं वहीं हम अहमदियों के लिए भी उतने ही ज़रूरी हैं कि हम उनको पढ़ कर और उनका गहराई से मुताला करके दूसरों तक उन्हें पहुंचाने की कोशिश करें।

हज़रत अक़्दस ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

"ख़ुदा तआला का ख़िलाफ़त से एक ताल्लुक़ है और उलूम की रूह से अल्लाह तआला खलिफ़ा को आगाह करता है और जमाअत की ज़माना के लिहाज़ से ज़रूरियात से खलिफ़ा को मुतनब्बा करता है। खलिफ़ा की नज़र सारी आलमी ज़रूरियात पर होती है। और जिन उलूम की तफ़सीर की ज़रूरत पड़े अल्लाह तआला खलिफ़ा को अता फ़रमाता है और जैसी रोशनी ख़ुदा तआला ख़ुद अपने खलिफ़ा को अता फ़रमाता है वैसी इस इलम में ख़ाह किसी मुक़ाम का रखने वाला उस को किसी तौर पर नसीब नहीं हो सकती। यह मोहब्बत है अल्लाह तआला की अता है। अल्लाह को अपने दीन की ज़रूरतों का बेहतरीन इलम है और जिनके सपुर्द वह काम करता है उन पर वह ज़रूरतें रोशन फ़रमाता है।"

(ख़ुत्बा जुमा फ़र्मूदा 26 फ़रवरी 1988 ई., ख़ुत्बात-ए-ताहिर, भाग 7 पृष्ठ 109-110)

इसी तरह आप ने फ़रमाया "ख़लीफ़ा वक़्त को जो बातें ख़ुदा तआला दीनी कामों से विषय में समझाता है उनको कहने के अंदाज़ भी अता करता है और उन बातों में जैसी गहरी सच्चाई होती है वैसी दूसरे की बातों में वैसी सच्चाई नहीं आ सकती और ऐसा असर नहीं पैदा हो सकता।

अतः हर ख़लीफ़-ए-वक़्त में जो इस ज़माने के हालात हैं उनके विषय में जो ख़लीफ़-ए-वक़्त की नसीहत है वह लाज़िमन दूसरी नसीहतों से ज़्यादा प्रभावी होगी। इस ताल्लुक़ की बिना पर भी और इस वजह से भी कि ख़ुदा तआला ने जो ज़िम्मेदारियाँ उसके सपुर्द की हुई हैं ख़ुद उसके नतीजा में इस को रोशनी अता करता है।"

(ख़ुत्बा जुमा फ़र्मूदा 5 नवंबर 1991 ई., ख़ुत्बात-ए-ताहिर, भाग 10)

इस अवसर पर ख़ाकसार यह भी अर्ज़ करना चाहता है कि हज़रत अमीरुल मौमेनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के खिताबात और ख़ुतबात हम अहमदियों के लिए ही अहमियत के काबिल नहीं हैं बल्कि आपकी मजालिस इर्फ़ान में की गई गुफ़्तगु और आपकी तरफ़ से दिए गए प्रश्नों के उत्तर भी इसी क़दर अहमियत के हामिल हैं कि उनसे न केवल हम अपनी इन्फ़िरादी और जमाती तर्बीयती ज़िम्मेदारियों में मदद ले सकते हैं बल्कि दावत इलाल्लाह के हवाला से भी इन मजालिस इर्फ़ान को ग़ौर से सुनना उनके नुकात को नोट करना उन पर अमल करना और फिर दुनिया को उनसे आगाह करना हम अहमदियों के लिए बहुत ज़रूरी है

इन मजालिस-ए-इर्फ़ान में जहां हमको नमाज़ रोज़ा की अहमियत, इताअत इमाम की अहमियत, माली क़ुर्बानियों की बरकात, और दीगर जमाती मसायल पर सैर हासिल मालूमात मिलती हैं। वहीं ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के ज़रिया बंदों का हक के आलमगीर नज़्ज़ारे भी नज़र आते हैं। पिछड़ी हुई और संसारिक एतबार से गिरी हुई क़ौमों की दिलदारी और अदल-ओ--इन्साफ़ के तक़ाज़ोंको मलहूज़ रखते हुए उनके हुक़ूक़ की बजा आवरी की मआरिफ़ से परिपूर्ण नसीहतें दुनिया के कानों को खटखटाती हुई नज़र हैं।

हज़रत अमीरुल मौमेनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने ख़ुत्बा जुमा 6 जून 2014 ई. में फ़रमाया

"ख़िलाफ़त का उद्देश्य बंदों का हक की अदायगी की तरफ़ भी तवज्जा दिलाना है। इन हुक़ूक़ को मनवाना और क़ायम करना और मुशतर्का कोशिश से उनकी अदायगी की कोशिश करना है।"

इसलिए इन तहरीकात के नतीजा में दुनिया में ज़ाहिर होने वाले ईमान अफ़रोज़ नज़्ज़ारे हर वर्ष असीमित देखते चले जा रहे हैं। इस मुख़्तसर तक़रीर में इन सब का वर्णन संभव नहीं।

प्रिय श्रोताओं ख़ाकसार अब आपके सामने यह ईमान अफ़रोज़ हक़ीक़त रखता है कि ख़लीफ़-ए-वक़्त के ख़ुतबात-ओ-इर्शादात न केवल यह कि समस्त दुनिया में यकसाँ अपना फ़ैज़ बरसा रहे हैं बल्कि उस वक़्त केवल और केवल हज़रत-ए-अक़्दस ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ही हैं जिनके इनफ़ाख़ क़ुदसिया जो समस्त

दुनिया को इत्तेफ़ाक़ और इत्तिहाद की लड़ी में पिरो रहे हैं।

ज़रा ग़ौर कीजिए हर जुमा के दिन समस्त दुनिया के समस्त बर्र-ए--आज़म समस्त देशों और उनमें बसने वाले काले, गोरे, अमीर , ग़रीब, मु-ख़्तलिफ़ ज़बानें जानने वाले मुख़्तलिफ़ तहज़ीब-ओ-तमद्दुन और कल्चर से ताल्लुक़ रखने वाले आलम और दानिश्वर कम पढ़े लिखे और उन-पढ़ भी हमा-तन गोश हो कर ख़ुदा के ख़लीफ़ा की आवाज़ सुनने के लिए बैठ जाते हैं। और इस तरह आलमी इत्तिफ़ाक़-ओ-इत्तिहाद और यकजहती का अजीब नज़ारा दुनिया के सामने होता है। कि सूरज के मशरिक़ी उफ़ुक़ से तलूअ होने से लेकर मग़रिबी उफ़ुक़ में ग़ुरूब हो जाने तक और रात के छा जाने तक समस्त दुनिया में यह ख़ुत्बात सुने जा रहे होते हैं। ज़रा ग़ौर कीजिए और सोचिए कि जमात अहमदिया के ख़लीफ़ा के इलावा और कौन सा वजूद है जिसकी आवाज़ इस तरह समस्त दुनिया में इताअत की ग़रज़ से सुनी जाती है। यह जमात अहमदिया के ही ख़लीफ़ा हैं जो जुमा के मुबारक दिन को एक आलमगीर रुहानी इजतेमा में तबदील करते हैं। निसन्देह यह सय्यदना हज़रत-ए-अक़दस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्स-लाम और ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया की सदाक़त की एक अज़ीमुश्शान दलील है। दुनिया में अगर कहीं और यह मिसाल किसी को मिलती है तो हमारा चैलेंज है कि वह इस को पेश करे। लेकिन हमारा चैलेंज है कि कोई भी इस की मिसाल पेश नहीं सकता।

इसके इलावा आलमी यकजहती की एक और ईमान अफ़रोज़ सदाक़त जो तारीख़-ए-आलम ने आज से क़बल नहीं देखी है यह है कि हुज़ूर अनवर के हर ख़ुत्बा-ए-जुमा से अगले ख़ुतबा में समस्त दुनिया में जमाअत अहम-दिया की मसाजिद में पिछले ख़ुत्बा जुमा का ख़ुलासा भी सुनाया जाता है और समस्त दुनिया की अहमदिया मसाजिद में क्या मशरिक़ी क्या मग़रिबी और क्या काले और क्या गोरे और समस्त देशों और समस्त देशों और टापुओं में बसने वाले अहमदी अपनी अपनी मसाजिद और मिशनों में हुज़ूर अनवर का पिछले जुमे इरशाद फ़र्मूदा ख़ुत्बा जुमा हमा-तन गोश हो कर सुनते हैं। और उन इर्शादात को जब दुनिया-भर के अहमदी सुनकर उन पर अमल करने के लिए उठते हैं तो इस आलमगीर ताक़त में ख़लीफ़-ए-वक़्त की दुआएं और इलाही क़ुव्वत उनकी मुमिद-ओ-मुआविन हो जाती है और बावजूद कमज़ोर होने के हर मैदान में दुनिया बरकात-ओ-फ़ुतूहात के नज़्ज़ारे देखती है। क्या दुनिया ने आज से पहले कभी आलमी यकजहती का ऐसा नज़ारा देखा है। क्या आलम-ए-इस्लाम और ग़ैर आलम-ए-इस्लाम को यह आलमी ख़ूबसूरती यह आलमी यकजहती हासिल है। अगर नहीं हासिल है तो हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आफ़ियत के इस हिसार की तरफ़ चले आओ फ़रमाते हैं कि :

"सिदक़ से मेरी तरफ़ आओ इसी में ख़ैर हैं
हैंदरिंदे हर तरफ़ में आफ़ियत का हूँ हिसार"

यही वह ख़ुत्बात-ओ-इर्शादात हैं जिनके माध्यम दुनिया-भर में लाखों लोग इस्लाम की पुर अम्न शिक्षा को क़बूल कर चुके हैं। जिनके हुज़ूर अनवर के ख़ुतबात में भी और जमाती अख़बारात-ओ-रसायल में भी ईमान अफ़रोज़ तज़किरे मौजूद हैं।

अतः हम अहमदी निहायत ख़ुश-क़िस्मत हैं कि सदाक़त की इस रुहानी आवाज़ को क़बूल करने की हमको तौफ़ीक़ मिली है। ख़ुदा ने हमको ख़लीफ़-ए-वक़्त के माध्यम एक आलमगीर क़ौम बनाया है। ख़ुदा ने हमको ख़लीफ़-ए वक्त के माध्यम दीनी और संसारिक उलूम से माला-माल कर दिया है। ख़ुदा ने हमको ख़लीफ़-ए-वक़्त के तुफ़ैल दुनिया को इस्लाम की अमन बख़श शिक्षा सिखाई है और फिर औरों को इस की तरफ़ लाने की तौफ़ीक़ बख़शी है। अतः इस नेअमत की क़दर करना इन अहकाम को बग़ौर सुनना और उन पर अमल करना और अपनी अगली नसल को इस पर अमल करने के लिए तैयार करना हम सब के लिए निहायत ज़रूरी है। हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं कि :

"ख़िलाफ़त के साथ ताल्लुक़ में आजकल अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से अल्लाह तआला ने हमें एम.टी. ए. का भी एक माध्यम दिया हुआ है, इसी तरह Alislam वैब साईट है। अतः उनसे भी जोड़ने की कोशिश करने की ज़रूरत है। हर अहमदी को नौजवान को मर्द हो या औरत जोड़ने की कोशिश करें और निज़ाम जमाअत को भी और ज़ेली तन्ज़ीमों को भी यह कोशिश करनी चाहिए।"

(अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 30 अगस्त 2013 ई.)

इसी तरह हुज़ूर अक़्दस फ़रमाते हैं कि :

"हम में से प्रत्येक को अपने जायज़े लेने की ज़रूरत है कि किस हद तक हम में पाक तबदीलियाँ हैं? किस हद तक हम अपने बच्चों को भी जमात से जोड़ने की कोशिश कर रहे हैं? किस हद तक हम क़ुरआन-ए-करीम की शिक्षा पर अमल कर रहे हैं? ऐसा अमल कि ग़ैर भी हमें देखकर बरमला कहिए कि यह हमसे बेहतर मुस्लमान हैं। क्या हमारे नमूने ऐसे हैं कि इस्लाम के मुख़ालिफ़ हमें देखकर इस्लाम की तरफ़ मायल हों। अगर हम यह मेआर हासिल कर रहे हैं तो इन श अल्लाह ये बातें जहां हमें अल्लाह तआला के क़ुरब का बायस बनाएँगी वहां हमें संख्या में भी बढ़ाएगी और जमात के ख़िलाफ़ जो मुख़ालेफ़तें हैं एक दिन हवा में उड़ जाएँगी। अल्लाह तआला आप सबको और मुझे भी ईमान-ओ-ईक़ान में तरक़्क़ी दे और हर लम्हा आप सबको अपनी हिफ़ाज़त में रखे और दुश्मन के हर मंसूबे को ख़ाक में मिला दे।" (ख़ुत्बा जुमा 24 सितंबर 2013 ई., उद्धृत अल्फ़ज़ल इंटरनैश-नल 8 अक्तूबर 2013 ई.)

आठ आख़िर में दुआ है कि अल्लाह तआला हम सबको हज़रत अमीरु-लल-मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिन-स्रिहिल अज़ीज़ के जुमला इर्शादात को बग़ौर सुनने और उन पर अमल करने और फिर अपनी औलाद दर औलाद को भी उन पर अमल पैरा होने की तलक़ीन करते चले जाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

وَآخِرُ دَعْوَانَا أَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

★ ★ ★

नज़ारत नश्र-व-इशाअत की ओर से प्रकाशित होने वाली पुस्तक का परिचय

ख़िलाफ़त का महत्त्व तथा इसके लाभ

यह पुस्तक 2008 ई. में ख़िलाफ़त के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर लिखी गई थी, इस पुस्तक की यह विशेषता है कि लेखक ने इस में ख़िलाफ़त से जुड़े हर पहलू को बहुत अच्छी तरह से वर्णन किया है। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद जो ख़िलाफ़त चली (अर्थात ख़िलाफ़त ए राशिदा) के दौर का भी संक्षेप में वर्णन किया है फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप के बाद जो ख़िलाफ़त ए अहमदिया का निज़ाम जारी हुआ उसका बहुत विस्तार से और सुंदर शैली में वर्णन किया है। सभी ख़लीफाओं की जीवनी और उनके दौर में होने वाली जमात की उन्नति का वर्णन किया गया है। हर ख़लीफा के दौर में जो जमाती उन्नति हुई, घटनाएं घटीं, मस्जिदें बनीं, जो स्कीम लागू हुईं, कबूलियत ए दुआ के लिए वृतांत इत्यादि का उल्लेख किया गया है। खिलाफत के बारे में इतने विस्तार से लिखी यह पहली पुस्तक है जो पाठकों को बहुत ला-भदायक सिद्ध हो सकती है।

★ ★ ★

विशव्यापी विनाश के विषय में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की चेतावनी, दर्द से परिपूर्ण निवेदन और जमाअत अहमदिया की ज़िम्मेदारियाँ

(श्रीमान के. तारिक़ अहमद साहिब, ऐडीशनल नाज़िर इस्लाह व इरशाद नूरुल-इस्लाम कादियान)

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا جَآءَنَا مِنْۢ بَشِيْرٍ وَّلَا نَذِيْرٍ ۫ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّنَذِيْرٌ ۬ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

(अल् मायदः : 20)

हे अहल-ए-किताब रसूलों के एक लंबे इन्क़िता के बाद तुम्हारे पास निसन्देह हमारा वह रसूले आ चुका है जो तुम्हारे सामने (अहम उमूर) खोल कर वर्णन कर रहा है इसके अतिरितिक्त तुम यह कहो कि हमारे पास न कोई बशीर आया और न कोई नज़ीर। अतः निसन्देह तुम्हारे पास बशीर और नज़ीर आ चुका है। और अल्लाह हर चीज़ पर जिसे वह् चाहे दाइमी क़ुदरत रखता है।

सय्यदना हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "देखो आज मैंने बतला दिया। ज़मीन भी सुनती है और आसमान भी कि प्रत्येक जो रास्ती को छोड़कर शरारतों पर आमादा होगा और प्रत्येक जो ज़मीन को अपनी बदियों से नापाक करे गा वह पकड़ा जाएगा। ख़ुदा फ़रमाता है कि क़रीब है जो मेरा क़हर ज़मीन पर उतरे क्योंकि ज़मीन पाप और गुनाह से भर गई है।

अतः उठो और होशयार हो जाओ कि वह आख़िरी वक़्त क़रीब है जिसकी पहले नबियों ने भी ख़बर दी थी। मुझे उस ज़ात की क़सम जिसने मुझे भेजा कि ये सब बातें उस की तरफ़ से हैं, मेरी तरफ़ से नहीं। काश ये बातें नेक ज़न्नी से देखी जाएं। काश मैं उनकी नज़र में काज़िब न ठहरताता दुनिया हलाकत से बच जाती। यह मेरी तहरीर मामूली तहरीर नहीं। दिल से हमदर्दी से भरे हुए नारे हैं। अगर अपने अंदर तबदीली करोगे और प्रत्येक बदी से अपने तईं बचा लोगे तो बच जाओगे। क्योंकि ख़ुदा हलीम है जैसा कि वह कहार भी है। और तुमसे अगर एक हिस्सा भी इस्लाह पज़ीर होगा तब भी रहम किया जाएगा। अन्यथा वह दिन आता है कि इन्सानों को दीवाना कर देगा।

नादान बदक़िस्मत कहेगा कि ये बातें झूठ हैं। हाय वह क्यों इस क़दर सोता है। आफ़ताब तो निकलने को है। इन्सान का क्या हर्ज है कि अगर वह फ़िस्क़-ओ--फ़ुजूर को छोड़ दे। कौन सा उसका इस में नुक़्सान है अगर वह मख़लूक़ परस्ती नहीं करे। आग लग चुकी है उठो और इस आग को अपने आँसूओं से बुझाओ। इस क़दर तौबा अस्तग़फ़ार करो कि गोया मर ही जाओ। ता वह हलीम ख़ुदा तुम पर रहम करे आमीन।"

(इश्तेहार अल् निज़ार, प्रकाशन कादियान)(मजमूआ इश्तिहारात, भाग 3, प्रकाशित लंदन, पृष्ठ 522-524)

करो तौबा कि ता हो जाए रहमत
दिखाओ जलद तर सिदक ओ अनातिब
खड़ी है सिर पर ऐसी एक साअत
कि याद आ जाएगी जिससे
मुझे यह बात मौला ने बता दी
فَسُبْحَانَ الَّذِیْ اَخْزَی الْاَعَادِیْ

अस्र-ए-हाज़िर के बशीर-ओ-नज़ीर मसीह-ओ-महदी दौरां के इस रौंगटे खड़े कर देने वाली चेतावनी आपने सुन ली है। आज दुनिया में एक बे-यक़ीनी और ख़ौफ़ की फ़िज़ा है और जंग के बादल मंडला रहे हैं। आलम-ए-इंसानियत को इस वक़्त दीगर दुनियावी ज़रूरियात के साथ-साथ अमन-ओ-शांति और सुकून की जिस क़दर ज़रूरत है वह शायद इस से क़बल कभी नहीं रही। दो आलमी जंगें और करोड़ों लोगों का ख़ून भी आलमी ताक़तों को अमन की अह--मियत बावर नहीं करा सका और तीसरी आलमी जंग के ख़तरात पैदा हो चुके हैं। इस सूरत-ए-हाल में अमन आम्मा की कोशिशों के बजाए, दुनिया में इसलाह--ओ-जंग की तरवीज पर काम हो रहा है। केवल पिछली दहाई के आदाद-ओ--शुमार का जायज़ा लिया जाए तो हज़ारों लाखों बेगुनाह, बेक़सूर तलवार के नीचे आए, असंख्य ज़ख़मी हो कर हमेशा के लिए विकलांग हो गए। लाखों बे-घर हुए जिनके दुखों का निवारण आज तक नहीं हो सका। दुख यह है कि दुनिया की बड़ी ताक़तों में इसका कोई एहसास नहीं। इस तनाज़ुर में दुनिया में इन्सानियत का हमदरद और उसकी बेलौस ख़िदमत और दुआएं करने वाला एक मुक़द्दस वजूद ख़लीफ़ा वक़्त का वजूद है।

उठो के साअत आई और वक़्त जा रहा है
पिसर-ए-मसीह देखो कब से जगा रहा है

उपस्थितगणों विशव्यापी मंदी की इन कष्टदायक समय में अल्लाह तआला की दया हम पर ख़िलाफ़त-ए-हक़्क़ा इस्लामिया अहमदिया के रूप में छाई हुई है और अल्लाह तआला का वादा अपनी पूरी शान के साथ पूरा होता हुआ हम अहमदी हर समय हर क्षण देख रहे हैं कि

وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا उनके लिए उनके दीन को, जो इस ने उनके लिए पसंद किया, ज़रूर मज़बूती अता करेगा और उनकी ख़ौफ़ की हालत के बाद ज़रूर उन्हें अमन की हालत में बदल देगा।

इसी से हर मुश्किल आसान है
गुरेज़ां है जो इस से वे नादान है

हज़रात! आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि मोमिन की फ़िरासत से डरो, क्यों कि वह अल्लाह के नूर से देखता है। अगर एक आम मोमिन की यह कैफ़ीयत है तो हज़रत अमीरूल मोमेनीन की क्या शान होगी। आज से 15 साल क़बल जब दुनिया ख़ाब-ए-ग़फ़लत में सोई हुई थी उस वक़्त से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दुनिया को इन ख़तरात से मुतनब्बा फ़र्मा रहे हैं وَ كُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ तुम आग के गढ़े के किनारे पर खड़े हो और निहायत दर्दमंदाना दिल के साथ इस कोशिश में हैं कि فَاَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا कि तुम्हें इस आग में गिरने से बचा ले।

आज संसार मे शांति की जिस क़दर कोशिशें ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया ने की हैं इसकी कोई नज़ीर मौजूद नहीं है। हमारे प्यारे इमाम हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का वजूद ही है जो न केवल दुनिया को तीसरी आलमी जंग से मुद्दत से नियमित ख़बरदार कर रहा है और सचेत कर रहा है बल्कि दुनिया को इस होलनाक तबाही से बचाने के लिए दर मंदाना नसाएह भी कर रहा है। अमन, सुलह जोई और आश्ती की कोशिशें करने वाला एक ही आलमी रहनुमा है और हमारी ख़ुशक़िसमती कि हम उसके मानने वाले हैं। परंतु वह जो उसे नहीं मानते, वह उन के लिए भी ऐसे ही दर्द रखता और दुआएं है।

अब कुछ जगह तजज़िया निगार यह भी कह रहे हैं कि जंगों की सूरत में जो तबाही होनी है वह ऐसी ख़ौफ़नाक होगी कि एक अंदाज़े के अनुसार दौरान-ए--जंग और इसके बाद के दो सालों में ऐटमी हथियारों के प्रयोग की वजह से दुनिया की छयासठ फ़ीसद आबादी संसार से मिट जाएगी। ऐसी तबाही-ओ--बर्बादी होगी जिसका तसव्वुर भी कोई नहीं कर सकता। एक आम इन्सान तो उसका सोच भी नहीं सकता। अतः बहुत ख़ौफ़नाक हालात हैं।

आज जब दुनिया अमन को तरस रही और तीसरी आलमी जंग के बादल फ़िज़ाओं में मंडला रहे हैं, अमन का यह शहज़ादा दुनिया को बार-बार अमन की तरफ़ बुला रहा है और बज़बान हाल यह कह है कि :

सिदक़ से मेरी तरफ़ आओ इसी ख़ैर है
हैं दरिंदे हर तरफ़ मैं आफ़ियत का हूँ हिसार

हुज़ूर अनवर ने मस्नद ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन होने के साथ ही मुख़्तलिफ़ मवाक़े पर अपने ख़ुत्बात के माध्यम दुनिया को दरपेश मसायल की निशानदेही करते हुए अफ़राद -ए-जमाअत को बिलख़सूस और समस्त संसार को साधारण--तः संबोधित करते हुए समस्त संसार मे शांति क़ायम करने के लिए कोशिशों की तलक़ीन फ़रमाई और जमाअत के लोगों को इस्लाम की अमन-ओ-शांति की जो

हुसीन और ख़ूबसूरत शिक्षा है वह दुनिया के सामने रखने की तलक़ीन फ़रमाई और मसायल के हल के लिए असंख्य बार दुआओं की तहरीक फ़रमाई। तथा मुस्लिम उम्मा और बड़ी ताक़तों को इंतेबाह फ़रमाया और उन मुआमलात में रहनुमाई फ़रमाई। इन में हुज़ूर अनवर ने किसी एक ख़ित्ता को ही मुख़ातिब नहीं किया, बल्कि एशियाई देशों के मसायल हों, या यूरोप के देशों के ख़तरात, अफ़्रीक़ी देशों में पाई जाने वाली बेचैनी हो या अरब दुनिया में फैली हुकमरान वर्ग से नाराज़गी। हुज़ूर अनवर ने हर जगह के मसायल का समय समय पर वर्णन कर के उन की बार-बार रहनुमाई फ़रमाई।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं "जंग के हालात जिस तेज़ी से शिद्दत इख़्तेयार कर रहे हैं और इसराईली हुकूमत और बड़ी ताक़तें जिस पालिसी पर अमल पैरा हैं इस से आलमी जंग अब सामने नज़र आ रही है। कुछ इस्लामी देशों के सरबराहान, रूस, चीन और कुछ मग़रिबी तजज़िया निगारों ने भी अब तो यह खुल कर कहना और लिखना शुरू कर दिया है कि इस जंग का दायरा अब वसीअ होता नज़र आ रहा है और अगर फ़ौरी तौर पर जंग बंदी की पालिसी न अपनाई गई तो दुनिया की तबाही है। सब कुछ ख़बरों में आरहा है, आप सब के सामने सारी सूरत-ए-हाल है इसलिए अहमदियों को दुआओं पर-ज़ोर देना चाहिए। हर नमाज़ में एक सजदा या कम से कम किसी एक नमाज़ में एक सजदा तो ज़रूर उसके लिए अदा करना चाहिए, इस में दुआ करनी चाहिए।"

(ख़ुतबा जुमा 10 नवंबर 2023 ई.)

संसार मे शांति के क़ियाम के लिए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिन-स्रिहिल अज़ीज़ की की गई कोशिशों में एक बहुत बड़ा हिस्सा आपके मुख़्तलिफ़ देशों के दौरा जात हैं। इन दौरों में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रि-हिल अज़ीज़ ने देशों के लीडोरों से मुलाक़ातों, हुकूमती वोज़रा, मैंबराने पार्लीमैंट, कौंसिलरज़, मेयरज़, डाक्टरज़, प्रोफ़ैसर्ज़, वकीलों और ज़िंदगी के मुख़्तलिफ़ शोबों से ताल्लुक़ रखने वाले सम्मानित लोगों के साथ मुलाक़ातों के माध्यम इस्लामी शिक्षा के अनुसार अमन का संदेश पहुंचाया। दुनिया की मौजूदा सूरत--ए-हाल, आलमी मईशत, माहौलियाती आलूदगी, दहश्तगर्दी के निवारण और आलमी अमन के क़ियाम जैसे मौज़ू ज़ेर-ए-बहस रहे।

हज़रत अमीरुल मौमेनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इन नसीहत-आमेज़ और फ़िक्र अंगेज़ खिताबात में से वक़्त की रियाइत के अनुसार केवल दो इक़तेबासात पेश करता हूँ जिन में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दर्दमंदाना नसाएह फ़रमाए हैं।हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्ला-हु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि जब मानव प्रयास विफल हो जाते हैं तब सर्वशक्तिमान परमेश्वर मानव जाति के भाग्य को निश्चित करने के लिए अपने निर्णय को जारी करता है। इससे पूर्व कि परमेश्वर का निर्णय जारी हो और वह लोगों को उसकी ओर जाने तथा मानव जाति के अधिकारों को अदा करने पर विवश करे यह उचित होगा कि विश्व के लोग स्वयं इन महत्त्वपूर्ण मामलों की ओर ध्यान दें, क्योंकि परमेश्वर को कार्यवाही करने पर विवश किया जाता है तब उस का क्रोध वास्तव में मनुष्य को एक कठोर और भयानक ढंग से पकड़ता है।

वर्तमान संसार में परमेश्वर के निर्णय का एक भयानक प्रकटन एक अन्य विश्व-युद्ध के रूप में हो सकता है। इसमें कदापि सन्देह नहीं कि ऐसे युद्ध के प्रभाव तथा उस के द्वारा विनाश केवल उस युद्ध तक या केवल वर्तमान पीढ़ी तक सीमित नहीं होंगे अपितु उसके भयानक परिणाम कई भावी पीढ़ियों तक प्रभावी होंगे। ऐसे युद्ध के इन भयानक परिणामों में से एक यह है कि इन युद्धों का प्रभाव नवजात शिशुओं पर तथा भविष्य में जन्म लेने वाले बच्चों पर भी पड़ेगा। आधुनिक शस्त्र इतने विनाशकारी हैं कि भविष्य में जन्म लेने वाली कई पीढ़ियों पर उनके भयानक आनुवांशिक और शारीरिक प्रभाव पड़ेंगे।

अगर किसी इन्सान को गोली मारी जाए तो उस का बच जाना तो मुम्किन है लेकिन अगर ऐटमी जंग शुरू हो जाती है तो जो भी इसकी लपेट में आएँगे उनकी ऐसी क़िस्मत नहीं होगी। इसके विपरीत हम देखेंगे कि लोग अचानक मरने लगेंगे और एक जगह जम जाऐंगे। उनकी खालें पिघलने लगेंगी। पीने का पानी, खाना और सबज़ियां सब ज़हर-आलूद हो जाएँगी। वे जगहें जहां पर सीधे तौर पर जंग नहीं होगी वहां पर भी और जहां जंग के असरात कुछ कम पड़ेंगे वहां पर भी ऐटमी बीमारियों के भयानक नतायज पैदा होंगे और मुस्तक़बिल की नसलों को कई तरह के ख़तरात से गुज़रना होगा।

इसके बाजवूद आज कुछ मुफ़ाद परस्त और बेवक़ूफ़ लोग अपनी ईजादात पर बड़ा फ़ख़र महसूस कर रहे हैं और उन्होंने दुनिया की तबाह कारियों के लिए जो कुछ ईजाद किया है इस को दुनिया के लिए एक तोहफ़ा के तौर पर पेश कर रहे हैं।

एक अंदाज़ा के अनुसार दूसरी आलमी जंग में 62 मिलियन लोग मारे गए थे। बताया जाता है कि मारे गए लोगों में 40 मिलियन आम शहरी लोग थे। इस से मालूम होता है कि फ़ौज की निसबत आम आदमी ज़्यादा मारे जाते हैं। ये वह तबाहकारी है जो जापान के इलावा बाक़ी जगहों पर केवल आम हथियारों के साथ हुई थी। इस जंग में केवल भारत में 16 लाख लोग मौत का शिकार हुए थे।

अतः अगर बड़ी ताक़तें इन्साफ़ से काम नहीं लेतीं और छोटे देशों की न उम्मीदियों को ख़त्म नहीं करतीं और इस सिम्त में ठीक कार्यवाहियां नहीं करतीं तो हालात हमारे क़बज़ा से बाहर हो जाएंग और इसके बाद जो तबाही बर्बादी फैलेगी हम उस का तसव्वुर भी कर नहीं सकते।

अतः दुनिया के देशों को इन मौजूदा हालात पर बहुत फ़िक्रमंद होना चाहिए। इसी तरह कुछ मुस्लिम मुल्कों के नाइंसाफ़ बादशाह जिनका वाहिद उद्देश्य किसी भी क़ीमत पर अपने तसल्लुत को क़ायम रखना है, उन्हें भी होश में आना चाहिए, अन्यथा उनकी बद आमालियां और बे वक़ूफ़ीयाँ उनकी बद अंजामी की वजह बन जाएँगी।

हम जो जमाअत अहमदिया के मैंबर हैं दुनिया और इन्सानियत को तबाही से बचाने के लिए अपनी इंतेहाई कोशिश करते रहेंगे। यह इसलिए कि हमने मौजूद ज़माने के इमाम को माना है जिसे खुद अन्य मसीह मौऊद बना कर भेजा है और जो ख़ुदा के रसूले करीम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ग़ुलाम था जो दुनिया की भलाई के लिए आया था।" (ख़ुलासा ख़िताब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ 9 वीं सालाना अमन कान्फ्रैंस बैततुल फ़तूह मॉर्डन, 24 मार्च 2012 World Crisis and Pathway to Peace पृष्ठ 40-45)

हज़रात! जहां दुनिया की तबाही और बर्बादी के विषय में भयभीत करने वाली भविष्यवाणियाँ हैं वहां दिल को सुकून और तसल्ली देने वाली कुछ तिबशीरी भविष्यवाणियाँ भी मौजूद हैं। हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"इन निशानों के बाद दुनिया में एक तबदीली पैदा होगी और अक्सर दिल ख़ुदा की तरफ़ खींचे जाऐंगे और अक्सर सईद दिलों पर दुनिया की मुहब्बत ठंडी हो जाएगी और ग़फ़लत के पर्दे दरमयान से उठा दिए जाऐंगे। और हक़ीक़ी इस्लाम का शर्बत उन्हें पिलाया जाएगा।"

(तजल्लियात-ए- अलाहीह , पृष्ठ 6-7 प्रकशन 1906 ई., रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ 399)

हज़रात! हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से वक़्फ़ नौ क्लास यू.के 22 जनवरी 2017 ई. के अवसर पर यह प्रश्न किया गया कि हुज़ूर आपका सबसे बड़ा डर क्या है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस का जवाब इरशाद फ़रमाया कि "मेरा डर यही है कि तीसरी आलमी जंग के बाद जब लोग ख़ुदा को ढूँडेंगे, मज़हब की तरफ़ रुजू करेंगे। क्या हम अहमदियों की इतनी ट्रेनिंग हो गई है? क्या हमारा ताल्लुक़ अल्लाह से क़ायम हो गया है? क्या हम लोग नमाज़ सही वक़्त में पाँच वक़्त पढ़ रहे हैं? क्या जब लोग तीसरी आलमी जंग के बाद हमारे तरफ़ रुजू करेंगे। एक Break Through होगा तो क्या हम तैयार हैं उन्हें अल्लाह से जोड़ने के लिए? क्या हमारे अमल ऐसे हैं जो उनके लिए नमूना बन सके? क्या हमारा दीनी इलम इतना है कि हम आने वालों को दीन का सही रास्ता दिखा सकें? यह मेरा डर है।"

वर्तमान युग में दुनिया को अमन की तरफ़ बुलाने की भारी ज़िम्मेदारी

जमाअत के लोगों के कंधों पर आयद की गई है क्योंकि इस ज़माना में सिवाए अफ़राद जमात के किसी और को यह तौफ़ीक़ ही नहीं मिल रही है कि वे दुनिया की तवज्जा को एक ज़िंदा ख़ुदा की तरफ़ मबज़ूल कर सकें। इस एतबार से जमाअत के लोगों की यह बड़ी ज़िम्मेदारी है कि वे दुनिया को तवज्जा दिलाएँ कि वे अपने ख़ालिक़ हक़ीक़ी की तरफ़ रुजू करे। सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने वालों का यह एक बहुत बड़ा काम है जिन्हों ने अपने घरों और अपने माहौल में भी अमन और सलामती पैदा करनी है और दुनिया में भी अमन-ओ-सलामती पैदा करनी है और यह काम उसी वक़्त होगा जब हमारे दिल भी ख़ालिस तौहीद से परिपूर्ण होंगे और दुनिया को भी हक़ीक़ी तौहीद की तरफ़ लाने वाले होंगे। यह बात यक़ीनी है कि तौहीद कामिल के क़ियाम के बग़ैर अमन क़ायम हो ही नहीं सकता। पहले भी वर्णन हो गया कि बाला हस्ती को बहरहाल तस्लीम करना होगा और वह बाला हस्ती अल्लाह तआला की ज़ात है और इस का ख़्याल तौहीद को दिल में क़ायम किए बग़ैर नहीं आसकता और तौहीद क़ायम नहीं होगी तो लड़ाईयां भी जारी रहेंगी। लड़ाईयां तो तभी बंद हो सकती हैं जब हक़ीक़ी मुवाख़ात पैदा हो, आपस में मुहब्बत और प्यार पैदा हो, भाई चारे की सूरत-ए-हाल पैदा हो।"

(ख़िताब फ़र्मूदा 21 अगस्त 2022 अवसर जलसा सालाना जर्मनी)

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं "इस ज़माने के अल्लाह तआला के फ़िरिस्तादे ने बड़े ज़ोर से सचेत किया हुआ है कि "हे यूरोप तू भी अमन में नहीं और हे एशिया तू भी सुरक्षित नहीं और हे जज़ायर के रहने वालो कोई मस्नूई ख़ुदा तुम्हारी मदद नहीं करेगा। मैं शहरों को गिरते देखता हूँ और आबादियों को वीरान पाता हूँ।"

(हकीकतुल वह्यी, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 22 पृष्ठ 269)

यही वह इरशाद है और तंबीया है और warning है जिसकी वजह से ख़ुलफ़ाए अहमदियत वक़्तन फ़वक़्तन तवज्जा दिलाते रहे। मैं भी एक अरसा से इस तरफ़ तवज्जा दिला रहा हूँ, यह बता रहा हूँ कि अपने पैदा करने वाले वाहिद-ओ-यगाना ख़ुदा की तरफ़ रुजू नहीं करोगे तो तबाही यक़ीनी है।"

(ख़िताब फ़र्मूदा 21 अगस्त 2022 ई. जलसा सालाना जर्मनी)

यह आग है, पर आग से वे सब बचाएं जाएंगे
जो कि रखते हैं ख़ुदाए ज़ुल अजायब से प्यार

हज़रात! एक ऐसे वक़्त में जब कि दुनिया आग के किनारे पर खड़ी है हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ हमें तब्लीग़-ए--इस्लाम की तरफ़ तवज्जा दिला रहा है और बड़ी हिक्मत से हुज़ूर हमें मौजूद ज़माना में तब्लीग़ की अहमियत की तरफ़ तवज्जा दिला रहे हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से रिव्यू आफ़ रिलीजेनज़ के ऐडीटर साहिब ने प्रश्न किया कि हुज़ूर हमने कोविड के ज़रीये मुशाहिदा किया कि कुछ लोगों ने या तो ख़ुदा के क़रीब होने के लिए अपनी ज़िंदगियों में तबदीली पैदा की। तो क्या आलमी जंग भी इस लिहाज़ से एक अहम संग-ए-मील या इंतेबाह का माध्यम बन सकती है।

इसके जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इरशाद फ़रमाया है कि "जब ऐसी सूरत-ए-हाल पैदा हो जाए और लोग पूछने लगें कि'अब हम क्या करें? तो हम उनकी ख़ुदा तआला की तरफ़ राहनुमाई करने के लिए मौजूद हों और यह केवल इस सूरत में मुम्किन है जब हम लोगों के साथ पहले से राबिता में हों। अगर हम वक़्त आने से पहले मुनासिब तौर पर उनसे राबिता उस्तिवार नहीं करेंगे तो मुआमला उनके लिए मज़ीद मुश्किल हो जाएगा क्योंकि उन्हें हमारा इलम ही नहीं होगा। इसलिए हमें इस्लाम अहमदियत के संदेश को दूर और नज़दीक हर तरफ़ फैलाना चाहिए। हमें लोगों को इस बात से आगाह करने की ज़रूरत है कि हमारा उद्देश्य इन्सानियत को अपने ख़ालिक़, अपने ख़ुदा की तरफ़ लाना है। हमें उन्हें समझाना होगा कि दुनिया को तबाही से बचाने के लिए इन्सानियत की बुनियादी इक़दार की पासदारी की ज़रूरत है।"

हाज़िरीन-ए-जलसा! संसार मे शांति के क़ियाम के लिए हमारी यह भी ज़िम्मेदारी है हम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शिक्षा पर ख़ुद भी अमल करें और दूसरों को भी इन अमन बख़श शिक्षा को अपनाने की तलक़ीन करें।

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं "अतः आज आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम सादिक़ के मानने वालों का यह काम है कि इस शिक्षा को अपनी ज़िंदगियों का हिस्सा बनाएँ। क़ुरआन-ए-करीम के अहकामात पर अमल करें तो तभी अपने माहौल में सलामती पैदा कर सकते हैं और दुनिया को भी सलामती का संदेश पहुंचा सकते हैं अन्यथा दुनिया कहेगी कि अपने क़ौल-ओ-फ़ेअल एक करो फिर हमें नसीहत करना।

(ख़िताब फ़र्मूदा 21-अगस्त 2022 ई. बर्मो का जलसा सालाना जर्मनी)

तथा हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं "ऐसे में अगर कोई उम्मीद की किरण है, अमन की ज़मानत है तो एक ही वजूद है जिसको अल्लाह तआला ने अमन-ओ-सलामती की शिक्षा के साथ दुनिया में भेजा था, जो शहनशाह-ए-अमन है, जो अल्लाह तआला को सब इन्सानों से ज़्यादा प्यारा है, जिस पर अल्लाह तआला की आख़िरी कामिल और मुकम्मल शरियत उत्तरी, जिसकी शिक्षा प्यार मुहब्बत की शिक्षा है, जिसने अपने ख़ुदा तआला के ताल्लुक़ की वजह से और अपने ऊपर उत्तरी हुई शिक्षा को दुनिया में फैलाने और दुनिया को तबाही से बचाने की फ़िक्र और इसके लिए शदीद दर्द महसूस करने की वजह से अपनी ज़िंदगी हलकान कर ली थी। इस हद तक अपनी हालत कर ली थी और करब से तड़प कर और रो-रो कर अल्लाह तआला से दुआएं कीं कि अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को फ़रमाया कि

لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ

क्या तू अपनी जान को इसलिए हलाक कर देगा कि वे मोमिन नहीं होते।

अतः यह है वह ज़ात जो दिल में इन्सानियत के लिए दर्द रखती थी कि लोग अपने पैदा करने वाले की तरफ़ रुजू करें और तबाही से बच जाएं। अपनी दुनिया भी बचा लें और अपनी आख़िरत भी बचा लें। ऐसी संक्षिप्त शिक्षा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अता फ़रमाई कि कोई और शिक्षा उसका मुक़ाबला नहीं कर सकती। ऐसी अमन की ज़मानत दी जो दरअसल अल्लाह तआला की दी हुई ज़मानत है लेकिन अफ़सोस कि मुस्ल-मान भी इस शिक्षा को भूल गए और ईमान के केवल ज़बानी नारे लगा कर एक दूसरे के ख़ून के प्यासे हुए हुए हैं और इसके लिए ग़ैरों से मदद के तालिब होते हैं।"

(ख़िताब-ए-फ़र्मूदा 21 अगस्त 2022 ई. बर्मो का जलसा सालाना जर्मनी)

हुज़ूर मज़ीद फ़रमाते हैं : "हमेशा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बताए हुए इस सुनहरी उसूल को सामने रखना होगा कि दूसरे के लिए भी वही पसंद करो जो अपने लिए पसंद करते हो।

अतः इस उसूल को सामने रखते हुए हमेशा यह सोच रखनी होगी कि अगर में केवल अपने लिए या अपनी क़ौम के लिए या केवल अपने मलिक के लिए अमन का मुतमन्नी हूँ तो इस सूरत में मुझे अल्लाह तआला की मदद, उसकी नुसरत और उसकी ख़ुशनुदी कभी हासिल नहीं हो सकती। जब इस अक़ीदे पर इन्सान क़ायम हो जाए कि अल्लाह तआला की ख़ातिर सब कुछ करना है तभी हक़ीक़ी अमन क़ायम हो सकता है अन्यथा नहीं।"

भेज दुरूद उस मोहसिन पर तो दिन में सौ-सौ बार
पाक मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नबियों का सरदार

सम्मानित हाज़ेरीन! क़ुरआन-ए-मजीद अल्लाह तआला की किताब और इसकी हसीन शिक्षा पर अमल करना और करवाना और इस किताब--ए-मतीन की तब्लीग़ को दुनिया में फैलाना भी क़ियाम अमन के लिए हमारी तरजीही ज़िम्मेदारी होनी चाहिए। इस ज़िमन में सय्यदना हुज़ूर

अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं कि :

"अतः अगर अपनी दुनिया-ओ-आक़िबत संवारनी है, अमन-ओ-सलामती से रहना है तो हमें अल्लाह तआला के इस कलाम को जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर उतरा हमेशा अपने सामने रखना चाहिए कि यह يَهْدِيْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ रोशन किताब की हिदायत को हमेशा अपने सामने रखें। इस रोशन किताब की हिदायत को पढ़ना और सामने रखना चाहिए तभी सबलुल इस्लाम पर चलने वाले होंगे। सलामती के रास्ते पर चलने वाले होंगे। इस किताब का कोई हुक्म भी ऐसा नहीं जो इन्सानी अमन बर्बाद करने वाला है। अतः यह संदेश है जो अपनों और ग़ैरों को देना हमारा काम है आज और यही दुनिया के अमन की ज़मानत है।"

(ख़िताब फ़र्मूदा 21 अगस्त 2022 ई. बर्मो का जलसा सालाना जर्मनी)

हाज़िरीन-ए-जलसा! चाहे अमन का ज़माना हो या ख़तरात का ज़माना एक दूसरे से हमदर्दी करना अफ़राद जमाअत का हमेशा शेवा रहा है और मुसीबत और तकलीफ़ के अवसर पर एक दूसरे की मदद करना बहुत ज़रूरी है। विशेषता जब इन्सान ख़ुद तकलीफ़ में मुबतला हो उस वक़्त दूसरे से हमदर्दी करना एक बहुत बड़ा चैलेंज है। अगर हमारे पास खाने की एक ही रोटी हो तो इस से भी किसी भूख को हिस्सा देना यह हक़ीक़ी हमदर्दी है जिसकी तवक़्क़ो हज़रत-ए--अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हम से रखते हैं जब आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया "मैं बनीनौ इन्सान से ऐसी हमदर्दी करता हूँ जैसे दयालु माँ अपने बच्चों से करती है।" ऐसी ग़ैर मशरूत हमदर्दी की ख़ूबी हमारे अंदर होनी चाहिए। सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ इस ज़िमन में हमें नसीहत फ़रमाते हैं कि :

"अमन उस वक़्त तक क़ायम हो ही नहीं सकता जब तक लोगों के अंदर हक़ीक़ी मुवाख़ात पैदा न हो और हक़ीक़ी मुवाख़ात एक ख़ुदा को माने बग़ैर पैदा नहीं हो सकती, वाहिद-ओ-यगाना ख़ुदा से ताल्लुक़ के बग़ैर पैदा ही नहीं हो सकती। केवल मानना ही नहीं बल्कि एक ताल्लुक़ भी क़ायम करना होगा और उसकी शिक्षा भी हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के द्वारा ही मिली है।"

(ख़िताब फ़र्मूदा 21 अगस्त 2022 बर्मो का जलसा सालाना जर्मनी)

हज़रात! दुनिया के मौजूदा हालात में हुज़ूर पुर नूर अय्यदहुल्लाहु तआला बि-नस्रिहिल अज़ीज़ हमेशा हमें दुआओं की तहरीक फ़रमाते हैं और खारब हालात में हमारे हौसला बढ़ाते हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"एक अहमदी को यह दुआ करनी चाहिए कि दुनिया उस आफ़त के आने से पहले ही इस से बच जाए और बिल्फ़र्ज़ अगर यह आफ़त आती है तो उसके बद असरात से सुरक्षित रहने के लिए भी दुआ करनी चाहिए। हम और क्या कर सकते हैं? जब हम अपने सामने अंधेरा देखते हैं तो दूसरों को भी इस के बद असरात के बारे में मुतनब्बा कर सकते हैं। अब केवल अल्लाह तआला की ज़ात ही दुनिया को बचा सकती है और उन लोगों में कुछ एहसास पैदा कर सकती है या हमारी उन्हें समझाने की कोशिशों को बारावर कर सकती है। यही वजह है कि मैंने तक़रीबन एक या दो साल पहले आलमी राहनुमाओं को ख़ुतूत लिख कर उनसे कहा था कि दुनिया को तबाही से बचाने के लिए फ़आल होना औरअपने ख़ालिक़ को नजरअंदाज़ न करें लेकिन न तो वे इस तरफ़ तवज्जा देते हैं और न ही समझते हैं। वह माद्दियत में डूबे हुए हैं, केवल अल्लाह की रहमत ही उन्हें बचा सकती है लेकिन यह बात ज़हन में रखनी चाहिए कि कोई भी सौ फ़ीसद यक़ीन के साथ यह दावा नहीं कर सकता कि आइन्दा क्या होगा। हम केवल यही दुआ कर सकते हैं कि अगर अल्लाह की रज़ा हो तो वह हमें तबाही से बचा ले और अगर अल्लाह की मंशा कुछ और है तो अल्लाह करे कि ऐसी वसीअ तबाही से बचा जा सके जिसके नतीजे में दुनिया में इन्सानों की अधिकता के हलाक हो जाने की संभावना हो।"

(इंटरव्यू बराए रिव्यू आफ़ रिलीजनज़)

हज़रात! संसार मे शांति आम्मा के क़ियाम के लिए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ जिस तरह न केवल दर्दमंदाना नसीहत फ़रमाते हैं बल्कि मख़्लूक़-ए-ख़ुदा से हक़ीक़ी हमदर्दी का इज़हार करते हुए उसके लिए जिस हद तक मुम्किन है कोशिशें भी फ़रमाते हैं जिसे देखकर हर ख़ास-ओ-आम गवाही दे सकता है।

मयगल गार्सिया (Miguel Garcia) साहिब जो पेद्रो आबाद, स्पेन के साबिक़ा मेयर रहे। उन्होंने इस कान्फ्रेंस के विषय में कहा "मेरी ख़ाहिश है कि यह जमात अपने मक़ासिद को हासिल करने में कामयाब हो जाएगी मैं हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब के अल्फ़ाज़ से बहुत आनंदित हुआ हूँ। उन्होंने जंग-ओ-जदल से आज़ाद एक पुरअमन मुआशरे के क़ियाम के हवाला से बात की है और उन हुकूमतों की निंदा की है जो दिफ़ा के नाम पर असलाह को इन्सानियत पर तर्जीह देती हैं। मुझे ख़ुशी है कि मिर्ज़ा मसरूर अहमद ने एक ऐसे मुआशरा के क़ियाम के लिए जिसकी बुनियाद इन्साफ़ और बाहमी इज़्ज़त-ओ-एहतेराम पर हो, मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब के लोगों को एक जगह इकट्ठा करने की दावत दी है। हम एक ऐसी दुनिया में रह रहे हैं जो तज़ादात से भरी पड़ी है। कुछ देशों तरक़्क़ी की इंतेहा को छू गए हैं जबकि लोगों की एक बहुत बड़ी संख्या भूख और अफ़्लास की वजह से मर रही है। एक तरफ़ हम लाखों टन ख़ुराक समुंद्र में फेंक देते हैं और दूसरी तरफ़ करोड़ों लोग ऐसे हैं जिनको खाने के लिए इंतेहाई मुश्किल के साथ कुछ मिलता है। एक तरफ़ करोड़पती अफ़राद की संख्या में इज़ाफ़ा हुआ है तो दूसरी तरफ़ मुआशरे के कुछ तबक़े इंतेहाई ग़रीब हो गए हैं। एक ऐसी दुनिया के क़ियाम की ज़रूरत होगी जो जंग को तर्क कर दे और अमन की ख़ाहां हो, जो सबको साथ लेकर मुशतर्का तौर पर तरक़्क़ी करे, जो नाइंसाफ़ी के ख़िलाफ़ खड़ी हो जाएगी और मुआशरती इन्साफ़ को फ़रोग़ दे।"

(ख़ुतबा जुमा वर्णन फ़र्मूदा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह तिथि 7 मार्च 2014 ई.)

आख़िर पर मैं अपनी यह मारूज़ात हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्य-दहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के एक रूह-परवर इरशाद से ख़त्म करना चाहूँगा। हुज़ूर फ़रमाते हैं :

"अतः बहुत सोचने का मुक़ाम है, बहुत ग़ौर की ज़रूरत है, बहुत फ़िक्र का मुक़ाम है। आज हर अहमदी का काम है कि हक़ीक़ी अमन और सलामती दुनिया में पैदा करने के लिए ख़ुदाए वाहिद पर अपने ईमान को पुख़्ता करे। ख़ुदा तआला की मुहब्बत को अपने दिलों में रासिख़ करे कि कोई और मुहब्बत उसकी जगह न ले सके। इसके हुक्मों पर अमल करने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उतरी हुई शिक्षा अर्थात क़ुरआन-ए-करीम को अपनी ज़िंदगियों का हिस्सा बनाए। जब हमारे मयार इस हद तक जाऐंगे कि क़ुरआन-ए-क़रीम का हर हुक्म और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हर इरशाद हमारे क़ौल-ओ-फ़ेअल का हिस्सा बन जाएगा तब ही हम दुनिया को इस्लाम का हक़ीक़ी संदेश पहुंचा सकेंगे। उन्हें हक़ीक़ी अमन के गुरु की न केवल शिक्षा पेश करके बताएँगे बल्कि अपने अमल से भी सिखाएँगे और यही दुनिया में हक़ीक़ी अमन क़ायम करने का माध्यम है और यही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम को अमन-ए-आलम का अज़ीम वजूद साबित करने का माध्यम है। यही इस्लाम पर एतराज़ करने वालों के मुँह-बंद करने का माध्यम है। बहरहाल आज यह काम मसीह मौऊद की जमात के सपुर्द किया गया है। अगर हमने भी घरेलू सतह से लेकर बैनुल अक़वामी सतह तक उसके अनुसार अपना किरदार अदा नहीं किया तो हमारे अमन-ओ-सलामती में रहने की कोई ज़मानत नहीं है,न ही हमारी नसलों की अमन-ओ-सलामती में रहने की कोई ज़मानत है और न ही दुनिया के अमन-ओ-सलामती की कोई ज़मानत है। अल्लाह तआला हमें दुनिया को अंधेरों से रोशनी की तरफ़ ले जाने का माध्यम बनाए। अल्लाह तआला अहसन रंग में हमें फ़र्ज़ अदा करने की तौफ़ीक़ फ़रमाए।"

अल्लाह करे कि दुनिया ख़ुदा के भेजे हुए फ़िरिस्ता दे को पहचानने में अब मज़ीद देरी न करे ताकि आफ़ियत का यह हिसार उनको हर ओर से ढाँप ले और उनकी दाइमी नजात का माध्यम हो सके, आमीन।

وَآخِرُ دَعْوَانَا أَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

★ ★ ★

पृष्ठ 2 का शेष

कबूलियत को भी बढ़ा देता है क्योंकि वह अपने इंतेख़ाब की लाज रखता है और उसकी मक़बूलियत को कबूलियत-ए-दुआ के तुफ़ैल बढ़ाता है। अतः इन्फ़िरादी तौर पर भी और इजतेमाई तौर पर भी जमाअत ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की दुआओं से बहुत फ़ायदा उठाती है। जमात अपनी हर मुश्किल को ख़लीफ़ा के सामने रखती है और संतुष्ट हो जाती है कि अल्लाह तआला हुज़ूर की दुआओं के अधीन फ़ज़ल फ़रमाएगा। अतः ख़िलाफ़त से वाबस्तगी के असंख्य लाभ हैं देनी भी और दुनियावी भी। ख़िलाफ़त की जो नेअमत हमें मिली है हमें इस की क़दर करनी चाहिए और ख़लीफ़ा वक़्त की बातों को ग़ौर से सुनना चाहिए और इस पर अमल करना चाहिए। ख़िलाफ़त से वाबस्तगी का एक माध्यम ये हैं कि ख़लीफ़ा वक़्त के साथ पत्रों के माध्यम संपर्क रखा जाए। एक और माध्यम यह है कि ख़लीफ़ा वक़्त के लिए दुआएं करते रहना चाहिए इस से भी ख़िलाफ़त से वाबस्तगी और मुहब्बत पैदा होती है। ख़लीफ़ा वक़्त की बातों को ग़ौर से सुनना और इस पर अमल करना इस से भी ख़िलाफ़त से वाबस्तगी पैदा होती है, इसके लिए अल्लाह तआला ने हमें M.T.A की नेअमत अता की है। M.T.A पर ख़लीफ़ा वक़्त के ख़ुत्बात-ओ-खिताबात को सुनना हमारे लिए बहुत ज़रूरी है। जब तक हम हुज़ूर की बातों को मुहब्बत से नहीं सुनेंगे हमें ख़िलाफ़त से वाबस्तगी पैदा नहीं होगी।

निम्न में हम हुज़ूर पुर नूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल के कुछ इर्शादात पेश करते हैं जिन से ख़िलाफ़त से वाबस्तगी के महत्व पर रोशनी पड़ती है। एथनज़, यूनान के चौथे जलसा सालाना आयोजित 30 अप्रैल 2023 ई. के अवसर पर सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने अपने बसीरत अफ़रोज़ संदेश में फ़रमाया :

मैं आपको यह भी नसीहत करता हूँ ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के साथ हमेशा वफ़ादार रहें। एम.टी. ए. देखें और बाक़ायदगी से मेरे ख़ुत्बात सुनें। उनको समझने की कोशिश करें और जिन बातों की तरफ़ मैं राहनुमाई करता हूँ उनकी पैरवी करें। आज इस्लाम की इशाअत और दुनिया में अमन केवल ख़िलाफ़त के निज़ाम पर अमल पैरा हो कर ही हासिल किया जा सकता है। मैं आपको नसीहत करता हूँ कि निज़ाम-ए- ख़िलाफ़त को सबसे ज़्यादा एहमियत दें और इस बात को यक़ीनी बनाएँ कि आपकी आने वाली नसलें ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया की मुबारक पनाह, राहनुमाई और हिफ़ाज़त के अंदर रहें।

(बदर 8 फ़रवरी 2024 पृष्ठ 14)

जलसा सालाना स्पेन 2023 ई. के अवसर पर सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने बसीरत अफ़रोज़ संदेश में फ़रमाया :

अल्लाह तआला का आप पर बड़ा फ़ज़ल और एहसान है कि आप को ख़िलाफ़त की नेअमत से नवाज़ा है और इस के माध्यम से एक लड़ी में पिरोए गए हैं। इस नेअमत की क़दर करें और उसकी इताअत के उच्च उदाहरण पेश करने की कोशिश करें। इस क़ुदरत के साथ कामिल इख़लास-ओ-मुहब्बत और वफ़ा और अक़ीदत का ताल्लुक़ रखें और ख़िलाफ़त की इताअत की भावना को दायमी बनाएँ और इसके साथ मुहब्बत के जज़बा को इस क़दर बढ़ाएं कि इस मुहब्बत के समक्ष दूसरे समस्त रिश्ते कमतर नज़र आएं ईमाम से वाबस्तगी में ही सब बरकतें हैं और वही आप के लिए हर किस्म के फ़ित्नों और इबतेलाओं के मुक़ाबला के लिए एक ढाल है। अतः अगर आपने तरक़्क़ी करनी है और दुनिया पर ग़ालिब आना है तो मेरी आपको यही नसीहत है और मेरा यही संदेश है कि आप ख़िलाफ़त से जुड़ जाएं। इस अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थामे रखें। हमारी सारी प्रगति का दार-ओ-मदार ख़िलाफ़त से वाबस्तगी में ही गुप्त है।

(बदर 29 फ़रवरी 2024 पृष्ठ 16)

जमात अहमदिया तनज़ानिया के 52वें जलसा सालाना के अवसर पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने बसीरत अफ़रोज़ संदेश में फ़रमाया :

मैं आपको नसीहत करता हूँ कि आप ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के साथ मज़बूत संबंध रखें। और ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के माध्यम से हासिल होने वाले इनामात के शुक्राने के तौर पर इस का मुस्तक़िल शुक्र अदा करते रहें। हमें केवल ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के माध्यम से हासिल होने वाले असीमित इनामात के शुक्राने के तौर पर ही इस का शुक्र अदा नहीं करना चाहिए बल्कि हमें इस बात का भी पुख़्ता अह्द करना चाहिए कि हम अच्छे और नेक काम करेंगे और मिसाली अहमदी बनने की कोशिश करेंगे। याद रखें कि हमारी कामयाबी का दार-ओ-मदार ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया से जुड़े रहने पर है जो आज हक़ीक़ी तौर पर मुस्लमानों की ख़िलाफ़त की नुमाइंदगी कर रही है। केवल ख़लीफ़तुल मसीह की राहनुमाई पर दियानतदारी के साथ अमल पैरा हो कर ही आप दुनिया को इस्लाम की ख़ालिस और हक़ीक़ी तालीमात से अवगत करवा सकेंगे। यह भी इंतेहाई अहम और ज़रूरी है कि आप मुकम्मल तौर पर निज़ाम-ए-जमाअत के साथ भरपूर सहयोग करें क्योंकि हम तभी आगे बढ़ सकते और तरक़्क़ी कर सकते हैं जब हम मुत्तहिद हूँ और जमाअत के आलीशान उद्देश्य को हासिल करने के लिए मिलकर काम करें। आपको साधारणतः M.T.A देखना चाहिए और अपने परिवार वालों और विशेषता बच्चों को भी इस की तरग़ीब देनी चाहिए। आपको विशेषता मेरे ख़ुत्बात-ए-जुमा और दूसरे अवसरों और तक़रीबात पर किए गए खिताबात को सुनना चाहिए। यह आप का ख़िलाफ़त से मुस्तक़िल संपर्क जोड़े रखेगा और आपके ईमान को मज़बूत करेगा।

(बदर 4 अप्रैल 2024 पृष्ठ 13)

जमात अहमदिया स्विटज़रलैंड के 41वें जलसा सालाना के अवसर पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने बसीरत अफ़रोज़ संदेश में फ़रमाया :

मैं आपको ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के ख़ुदाई निज़ाम के महत्व की तरफ़ भी तवज्जा दिलाता हूँ, हमेशा ख़लीफ़तुल मसीह से वफ़ादार रहें और मज़बूत ताल्लुक़ बना कर रखें। अपने बच्चों को भी ख़िलाफ़त की बरकात से अवगत करवाते रहें और इस बात को यक़ीनी बनाएँ कि आपकी आइन्दा नसलें हमेशा ख़िलाफ़त की राहनुमाई में और इसके बाबरकत साया और हिफ़ाज़त में रहें। आप लोग एम.टी.ए. बाक़ायदगी से देखा करें और अपने परिवार वाले विशेषतः बच्चों को इस की तलक़ीन किया करें। मेरे ख़ुत्बात जुमा कोशिश कर के लाइव सुनें और इसी तरह मुख़्तलिफ़ तक़ारीब और प्रोग्रामों में मेरे दिए गए खिताबात और तक़ारीर ख़ुसूसीयत के साथ सुना करें। इस तरह आपका ख़िलाफ़त के साथ एक गहरा ताल्लुक़ क़ायम रहेगा, ईमान मज़बूत होगा।

(बदर 11 अप्रैल 2024 पृष्ठ 16)

अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ अता फ़रमाए कि हम ख़लीफ़ा वक़्त की बातों को ग़ौर से सुनें और उन पर अमल करें और ख़िलाफ़त से हक़ीक़ी वाबस्तगी का हक़ अदा कर सकें। आमीन।

(मंसूर अहमद मसरूर)

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान में ख़िदमत की इच्छा रखने वाले ध्यान दें

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान की वैकेंसी दर्जा दोम के लिए शर्तें

(1) अभ्यर्थी की आयु 25 वर्ष से अधिक और 18 वर्ष से कम न हो। (2) अभ्यर्थी की शिक्षा कम से कम 10+2 45% फ़ीसद नंबरात के साथ होनी चाहिए। (3)अभ्यर्थी उर्दू/अंग्रेज़ी कम्पोज़िंग जानता हो और तेज़ी 25 शब्द प्रति मिनट हो। (4) इस ऐलान के बाद 2 माह के अंदर जो निवेदन प्राप्त होंगें उन्हीं पर ग़ौर होगा। (5) निसाब परीक्षा कमीशन बराए कारकुनान दर्जा दोम निम्नलिखित है। परीक्षा के प्रत्येक भाग में सफल होना अनिवार्य है।

प्रथम भाग

★ क़ुरआन-ए-करीम नाज़रा मुकम्मल। पहला पारः अनुवाद सहित चालीस जवाहर पारे, अरकान-ए-इस्लाम, पूर्ण नमाज़ अनुवाद सहित। (30 अंक)

द्वितीय भाग

★ कशती-ए-नूह, बरकातुद-दुआ, दीनी मालूमात जमाअत अहमदिया के अकायद के विषय में मजमून, दुर्रे समीन से नज़म (शान-ए-इस्लाम) (20 अंक)

तृतीय भाग

★ अंग्रेज़ी भाषा इंटरमीडीयेट के मयार के अनुसार (10+2) (20 अंक)

चतुर्थ भाग

★ हिसाब मैट्रिक के मयार के अनुसार (दफ़्तरी इमपरस्ट से संबधित प्रश्न) (20 अंक)

पंचम भाग

★ साधारण ज्ञान (G.K) (10 अंक)

(6) लिखित परीक्षा में सफल होने वाले अभ्यर्थीयों का ही इंटरव्यू होगा। (7) लिखित परीक्षा, कम्पयूटर टैस्ट और इंटरव्यू में सफलता की सूरत में अभ्यर्थी को नूर हस्पताल क़ादियान से चिकित्सा परीक्षण करवाना होगा और केवल वही अभ्यर्थी ख़िदमत के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल की तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार सेहत मंद और तंदरुस्त होंगे। (8) स्लैक्शन की सूरत में अभ्यर्थी को क़ादियान में अपने रहने का इंतेज़ाम स्वयं करना होगा। बाद में रहने के संबंध में किसी निवेदन पर कोई कारवाई नहीं होगी। (9) सफ़र ख़र्च क़ादियान आना जाना अभ्यर्थी के अपने ज़िम्मा होंगा।

(नोट : लिखित परीक्षा और इंटरव्यू की तिथि से अभ्यर्थी को बाद में अवगत किया जाएगा।)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान

01872-501130 दफ़्तर

09682587713,09682627592

E-mail : diwan@qadian.in

★ ★ ★

हर उस चीज़ से बचो जो धर्म में बुराई और बिद्अत पैदा करने वाली है

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमात में शामिल होने के लिए हर उस चीज़ से बचना होगा जो दीन में बुराई और बिद्अत पैदा करने वाली है .. बहुत सी बुराईयाँ हैं जो शादी ब्याह के अवसर पर की जाती हैं और जिनकी देखा देखी दूसरे लोग भी करते हैं। इस तरह समाज में ये बुराईयां जो हैं अपनी जड़ें गहरी करती चली जाती हैं और इस तरह दीन में और निज़ाम में एक बिगाड़ पैदा हो रहा होता है।"

(उद्धृत मशअले राह, भाग 5 हिस्सा 3 पृष्ठ 153)

★ ★ ★

اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING
OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553

Weekly **BADAR** *Qadian*

Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA

POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 09-16 May 2024 Issue No. 19-20

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

दारुस्सनाअत कादियान
(Ahmadiyya Vocational Training Centre)
में वर्ष 2024-2025 के प्रवेश लिए दाख़िला शुरू है

दारुस्सनाअत कादियान का आरंभ हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की मंज़ूरी और विशेष राहनुमाई से 2010 ई. में हुआ। विभाग का विशेष उद्देश्य अहमदी विद्यार्थियों को हुनर-मंद बनाना और टेकनीकल कोर्स विशेषता रोज़गार के अवसर पैदा करना है। दारुस्सनाअत कादियान सरकारी विभाग NSIC दिल्ली और ISO रजिस्टर्ड है। जिसमें एक वर्ष के निम्न-लिखित कोर्स करवाए जाते हैं।

Plumbing
Electrician
Welding
Motor Vehicle
AC & Refrigerator
Diesel Mechanic
Computer Applications

कादियान के बाहर से आने वाले अहमदी विद्यार्थियों के लिए hostel और mess का इंतेज़ाम उपलब्ध है । रहने और food की कोई फ़ीस नहीं है। केवल कोर्स की बोर्ड फ़ीस आसान किस्तों में ली जाती है। ऐसे अहमदी नौजवान जो अपने स्कूल की शिक्षा पूर्ण नहीं कर सके या 8th और 10th के बाद टेक्नीकल कोर्स करने के ख़ाहिशमंद हों प्रवेश के लिए जल्द संपर्क करें। अहमदी बच्चों की दीनी शिक्षा का भी इंतेज़ाम मौजूद है। इसके अतिरिक्त रोज़ाना English Speaking और Personality Developmentकी क्लास भी ली जाती है। नए सैशन 2024-2025 के लिए दाख़िला शुरू हो गया है। जिसकी क्लासिज़ 16 जुलाई से शुरू होंगी।
अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित नम्बरज़ Email Id पर संपर्क कर सकते हैं।

darulsanaat.qadian@gmail.com
9872725895, 8077546198
(प्रिंसिपल दारुस्सनाअत कादियान)

★ ★ ★

दहेज का प्रदर्शन एक ग़लत रस्म है

हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"शादी ब्याह के अवसर पर कुछ फ़ुज़ूल किस्म की रस्में हैं, जैसे बरी को दिखाना या वह सामान जो दूलहा वाले दूल्हन के लिए भेजते हैं इस का इज़हार, फिर जहेज़ का इज़हार, बाक़ायदा नुमाइश लगाई जाती है। इस्लाम तो केवल हक़ महर के इज़हार के साथ निकाह का ऐलान करता है, बाक़ी सब फ़ुज़ूल रस्में हैं। एक तो बरी या दहेज की नुमाइश से उन लोगों का उद्देश्य जो साहब-ए-तौफ़ीक़ हैं केवल बढ़ाई का इज़हार करना होता है कि देख लिया हमारे शरीकों ने भाई बहन या बेटा बेटी को शादी पर जो कुछ दिया था हमने देखो किस तरह इस से बढ़कर दिया है। केवल मुक़ाबला और नुमाइश है .. केवल रस्मों की वजह से,अपनी नाक ऊंचा रखने की वजह से ग़रीबों को मुश्किलात में, कर्ज़ों में ना गिरफ़्तार करें और दावा यह है कि हम अहमदी हैं और बैअत की दस शरायत पर पूरी तरह अमल करेंगे .. जबकि बैअत करने के बाद तो वे यह अहद कर रहा है कि संसारिक लोभ और लालच से बाज़ आजाएगा और अल्लाह और उसके रसूले सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हुकूमत मुकम्मल तौर पर अपने ऊपर तारी कर लेगा। अल्लाह और रसूले करीम हम से क्या चाहते हैं ,यही कि रस्म और रिवाज और संसारिक लोभ और लालच छोड़कर मेरे अहकामात पर अमल करो।"

(शरायत-ए-बैअत और अहमदी की ज़िम्मेदारियाँ, पृष्ठ 101 से 103)
(विभाग रिश्ता नाता, नज़ारत इस्लाह इरशाद मर्कज़िया कादियान)

★ ★ ★

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad